कथा-समय

('समानान्तर' आ 'समाङ' कथा-संग्रहक समेकित संकलन)

रमेश

नवारम्भ
मधुबनी/पटना

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-81-943052-6-2

कथा-समय

('समानान्तर' आ 'समाङ' कथा-संग्रहक समेकित संकलन)

© माला झा

प्रथम संस्करण : 2020 ई.
मूल्य : 300 रु.

आवरण : साभार

प्रथम संस्करणक प्रकाशक
समाङ : भाखा प्रकाशन, पटना, 1991 ई.
समानान्तर : किसुन संकल्प लोक, सुपौल, 1997 ई.

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Katha-Samay
A Collection of 'Samanantar' & 'Samang'
Maithili Story collections By **Ramesh**
First Edition : 2020, Price : Rs 300/-

समीक्षा सुवर्णा, सुपुत्री के लेल...

—रमेश

समानान्तर

समानान्तर

कथा-क्रम

7 : पलास्टी के खेलौना
11 : कनखी
17 : नरमेध
26 : दिनकर बाबू कें भ्रम भेल छलनि?
37 : नागदेस मे अयनाक व्यवसाय
44 : भूआ
50 : ऑक्टोपस
54 : प्रवेश-निषेध
61 : अहाँ कें चान चाही
68 : दुधुआ
73 : ध्रुपद-धमार

पलास्टी के खेलौना

ई कथा आइ-काल्हिक कोनो एकटा शहरी दम्पत्ति आ तकर पुत्रक भ' सकैए। तेँ एकटा अन्य दम्पत्तिक ई कथा अपने पर हम घटित देखा रहल छी।

हँ, त' ओइ दम्पत्तिक अर्थात हमरा सभक ओ एकमात्र कल्पित आ वास्तविक पुत्र अर्थात पप्पू परम जिद्दी, स्वभावेँ चञ्चल, पढ़बा मे तेज आ एकटा कोनो सामान्य बच्चाक गुणावगुण सँ युक्त, अपन पाँचम वसन्त भोगि चुकल अछि आ कमलाक पाँक परहक लहलहाइत खेसारी जकाँ लहलहा रहल अछि। पानि स' कन-कन करैत।

मुदा पप्पूक माय ओकरा पीठ पर हरदम तैयारे रहैत छथिन। एकदम स' आँखिमुन्ना समर्थक। ओ किच्छु करय, हमरा कोनो सजाय देब' नहि देती आ ओहिनाक-ओहिना बचा लेथिन।

टी.भी. प्रेमी पप्पू भीषण किरकेट-प्रेमी आ फिलिम-प्रेमी अछि। से ओकर मायो छथिन तकर तहिना प्रेमी जखन कि हमर ई स्पष्ट व्यक्तिगत धारणा अछि जे सिलेमा— टी.भी. क्रिकेट अपना देसक कतेक क्षति केलक अछि, से नहि कहि। अनेक पीढ़ी कें ई विकृत आ पथभ्रष्ट क' देलक अछि। लोक कें अहदी बना देलक अछि। लोक काज छोडि' क' टी.भी.— रेड्डी लग बैसल रहैए।

से पप्पू सिलेमा देखैत-देखैत ततेक ने ढिसुंग-ढासुंग सीखि लेलक अछि, जे किछु कहै के नहि। पप्पूक मायो कें नीक लगैत छनि जे बच्चा फड़हड़ भ' रहल अछि। ओ हमरा दिस मुक्का तानि ओकरा सिखबैत छथिन—पापाजी के ढिसुंग-ढिसुंग कर त' बेटा।

प्रत्युत्तर मे पप्पू हमरा पेट मे मुक्का सटा क' बजैए— धिसुंग-धिसुंग!! पापाजी धिसुंग!

हम सोचैत छी जे हमरा हँसबाक चाही कि तमसेबाक चाही?

तहिना किरकेट आफद क' देने अछि। दू बजे राति मे निसभेर पड़ल रही एकदिन, कि पप्पू चिचिआयल— आउत दैत! नै-नै, छक्का!

मर तोरी भाला के! ई किरकेटो अजब खेल अछि!

तहिना सिलेमोक परभाव देखू।

पप्पूक माय पुछथिन— बेटा! प्रेम चोपड़ा केना पेस्तौल मारै छै जितेन्दर के!

पप्पू अपन दहिना हाथ के पेस्तौलक आकार मे बना क' आगू बढ़बैए आ हमरा छाती मे सटा क' बजैए— थाँई!

हम हतप्रभ रहि जाइत छी।

हमरा कनियाँ सँ कह' पड़ैए— एहने संस्कार सँ क्यो बच्चा गुण्डा बनि जाइत छै। ई की सिखबै छिऐ अहाँ एकरा?

हम मजाक आ व्यंग्य सँ कहैत छियनि— नाम तँ एकर पप्पू छैके। एना सिखेबै त' कहीं पप्पू यादव जकाँ कोनो सिपाहीक मोंछ ने उखाड़ि लिअय!

एहि पर हँसि क' कनियाँ ओकरा उसकबैत छथिन— बेटा, पापाजीक मोंछ उखाड़ त'!

कि पप्पू हमरा लग आबि क' हमर मोंछ उखाड़बाक अभिनय कर' लगैए।

हमरा आब आँखि कड़ा करब आवश्यक बुझाइ-ए। हमर आँखि कड़ा कयला पर कनियाँ कठहँसी हँसि क' बजैत छथि— चलि आ पप्पू, चलि आ। छोड़ि दहुन। हिनका अपनो सन्तान सँ खेलायब-धुपायब नहि नीक लगै छनि। आ पप्पू हुनका लग चलि अबैत छनि।

ओ कहैत छथि— अच्छा ई कहू, पेस्तौल चलौनिहार खाली गुण्डे-बदमाश त' नहि होइ छै, पुलिसो त' बनै छै। आ जँ हमर बेटा एस.पी., डी.एस.पी. बनय तखन?

दुनू मे कोनो अन्तर नहि— हम बजैत छी— एकटा वर्दी पहिरि क' सरकारी आतंकवादी बनैए आ दोसर वर्दीहीन प्राइभेट आतंकवादी। जनसामान्यक लेल कोन अन्तर छै दुनू मे? लोक तँ दुनूक शिकारे बनैए— रक्षक आ भक्षक-दुनूक। तेँ हमर बेटा खाली मनुक्ख बनय, मनुक्ख, से हम चाहब।

ओ तैयो हमरा सँ असहमत होइत चुप भ' जाइत छथि आ हम अपन ध्यान टी.भी. दिस घुमबैत छी, जकर पर्दा पर एखन गोदई महराजक तबला आ पंडित रविशंकरक सितारवादनक युगलबन्दी चलि रहल अछि।

हम लीन भ' जाइत छी कार्यक्रम मे आ सोचैत छी जे कत' ई कार्यक्रम

आ कत' बम्बैया-मसल्लावला सिलेमाक ढिसुंग-ढासुंग आ छूरा-पेस्तौल?

हम लक्ष्य करैत छी जे कनियाँ उठिक' तरकारी काट' चलि जाइत छथि आ पप्पू बैसल-बैसल औंघाय लगैए। हम फेरो सोचै छी— पप्पू, जे काल्हुक भविष्य थिक— हमरो सभक आ देसोक— तकर रुझान कला-संस्कृति दिस कतेक छैक आ ढिसुंग-ढासुंग दिस कतेक?

मुदा ताहि मे पप्पूक कोन दोष?

कनियेंक दिशा-निर्देश कतेक दायित्वपूर्ण आ कल्याणकारी छनि?

हमरा सनक लोक कतेक प्रासंगिक रहि गेल-ए समाज मे? हम ईहो सोचबा लेल बाध्य छी, जे लाखो पप्पूक अपराध-वृत्ति दिसक ई रुझान, देस कें अन्ततोगत्वा कत' ल' जायत?

आ हमर आर सोचबाक क्रम तबला-सितारक युगलबन्दीक तारसप्तक मे विलीन भ' जाइ-ए।

ठीक तीन दिनक बाद। दुर्गापूजाक अष्टमीक मेला घूम' हम तीनू परानी विदा होइत छी।

पहिने लक्ष्मीसागरक दुर्गा मन्दिर जाइत छी आ भगवतीक दर्शनोपरान्त प्रसाद ल' घुमैत छी। आब विचार अछि, आगू कटहरबाड़ी आ भण्डार-चौक दिस बढ़बाक। आइ टाबर बजार दिस सजावटि देखबाक आ घूमि लेबाक विचार क' क' चचल छी।

मुदा सूर्ज लुकझुक क' रहल छथि आ राति क' मेला-ठेला मे घूमब हमरा असुरक्षाक कारणेँ पसिन्न नहि अछि।

कनियाँ पप्पूक आङुर पकड़ने चलि रहलि छथि।

ता पप्पू एकटा खेलौनावला लग जा क' ठाढ़ भ' जाइ-ए त' ओकरा संग हमहूँ सब ठाढ़ भ' जाइ छी।

हमर नजरि एकटा प्लास्टिकवला खेलौना पर पड़ैए। ठीक पण्डित रविशंकरक सितार जकाँ प्लास्टिक के सितार। एह सुन्दर जे अछि ओकर तानल-तानल तार सभ? तुन-तुन-तुनक-तुनक बजैए। वाह! अद्‌भुत खेलौना मोन मोह'वला।

हम खेलौनावला सँ ल' लैत छी आ पप्पूक हाथ मे द' क' पुछैत छिऐक— लेब' बेटा? देखहक कत्तेक सुन्दर छैक? कतेक दाम छ' एकर हौ? —हम खेलौनावला सँ पुछलिऐक।

पन्द्रह रुपैया सर! – ओ बाजल।

कनियाँ उदासीन भावें देखैत रहलीह।

ता पप्पू फटाक स' सितार हमरा हाथ मे धरा क' खेलौना सभक बीच सँ एकटा पलास्टिक के पेस्तौल उठा लैत अछि आ ओकरा कौतुकपूर्वक उनटा-पुनटा क' देख' लगै-ए। कखनो ओकर घोड़ा पर हाथ दैए आ कखनो ओकर नाल कें छुबैए। पप्पूक माय एकबेर कनेक मुस्किआइत छथि आ फेर गंभीर भ' जाइत छथि। हुनका भरिसक हमर विचार मोन पड़ि जाइत छनि।

–धुः ई की लेब'? सितार देखहक कतेक सुन्दर छै? –हम बजैत छी। मुदा पप्पू जिद्द ध' लैत अछि आ ठुनक' लगैत अछि।

कनियाँ ओकरा हाथ सँ पेस्तौल छीनि खेलौनावला कें द' दैत छथिन आ पप्पूक गट्टा पकड़ि आगू मुहें झीक' लगैत छथिन।

हमरा परिस्थितिक गंभीरताक आभास होइ-ए आ कहीं तमाशा ने बनि जाइ, से सोचि हम पलास्टिकवला सितार खेलौनावलाक हाथ मे द' दैत छिऐक आ ओकरा सँ पलास्टिकवला पेस्तौल ल' क' पप्पूक हाथ मे धरा दैत छिऐक।

पप्पू चुप भ' जाइ-ए।

हम खेलौनावला कें पाइ द' क' चलबा लेल अग्रसर होइत छी, तँ देखैत छी जे पप्पू अपना माय दिस पेस्तौल तानि क' घोड़ा दबा दैत अछि आ बजैए– माँ-माँ! प्रेम चोपला– थाईं!

ओत' ठाढ़ लोक सभ हँस' लगैए।

हमरा बुझाए-ए, जेना प्रेम चोपड़ा, सितार बजबैत पण्डित रविशंकरक गतिमान आङुर पर ठिका क' पेस्तौल दागि देने होनि। सितारक तार सभ खण्डी-खण्डी भ' क' उड़ि गेल होइक आ हुनकर आङुर सँ छर-छर सोनित बह' लागल होनि।...

•

संकल्प, सुपौल 1991 ई.

कनखी

(1991-2019 ई.)

झा बाबू केँ भरोस नहि छलनि, जे बस सँ उतरताह आ जनमारा गर्मी सँ त्राण भेटतनि।

उतरिते टीशन दिस देखलनि— घुप्प अन्हार। निराश होअ' लगलाह जे अपनो मोहल्ला मे लाइन हैत कि नहि। मोन मे ढाढस बन्हलनि, जे लाइन हेतैक ओम्हर एखन।

पाँच मिनटक बाद जखन अपना मोहल्ला ढुकलाह, त' मोन झुझुआन भ' गेलनि, कारण, लाइनक कोनो व्यवस्था नहि छल। घुप्प अन्हार मे ठाढ़ बिजलीक पोल, बिजलीक पोल खोलैत छल। सोचलनि— जरूर लोड-शेडिंग हेतै, कि फ्यूज उड़ि गेल हेतै।

फ्यूज उड़ला सँ त' राति भरिक हेतु निचेन। क्यो मिस्त्री राति क' खम्हा पर चढ़त, ई सोचबो अनुचित। ओना बिजलीक सप्लाइ देब'वला कनीय अभियन्ता एहि मोहल्लाक छथि, मुदा कोनो अन्तर नहि। लोक केँ नव कनेक्शन देबा मे ततबा ने पाइ खरड़ने छथि, जे अपन मकान मे अपन जेनरेटर लगा क' निचैन। मोहल्ला मे लाइन आयल त', नहि आयल त'— कोनो मतलब नहि।

आ मिस्त्री?

राम-राम। ओ त' बाबू-बबुआन अछि। ओ अछि, ओकर मोपेड छै, ओकर मोंछ छै। बस्स!

क्यो ओकरा, बिजली ठीक करैत भरिसक्के देखने हेतैक।

झा बाबूक डेरा मे लम्फ भुकाभुकाइत छलनि। शीशा कारी स्याह भेल छलैक।

झा बाबू तुरुच्छ मोने कनियाँ के कहलनि— हथपंखा लाउ जल्दी। देरी भेला पर थोड़ेक आर खौंझा गेलाह आ गुनझिक्कू डाइनि जकाँ भनभनाय लगलाह।

पत्नी पलंगक तर मे खसल पंखा आनि क' हौंक' लगलखिन। जेना सत्यवान

कें प्राण घूरि अयलनि। गोट-गोट क' कपड़ा खोलि जत्र-कुत्र फेकैत गेलाह। क्यो नै रहितैक त' गुमसड़ाइन महकैत अण्डरपेन्टो खोलि फेकितथि।

पत्नी आर जोर-जोर सँ पंखा झल' लगलथिन, जेना मुगल राजदरबार मे एक देबार पर मयूरपंखा हौंकनिहार अपस्याँत भ' गेल हो। आ पत्नीक अपने आङीक टुरनी धरि घाम सँ भीजल चल जाइत छलनि। हुनका एकटा नवकी हिरोइनिक उन्मत्त तीतल देह मोन पड़लनि। फेर झा बाबू कें कनियाँ पर दया अयलनि। 'आह-ओह' करैत आ गर्म साँस के मुँह द' क' बहार निकालैत सोचलनि— कहीं आब नारी-शोषण ने भ' जाय। तेँ झपटि क' हुनका हाथ सँ पंखा लगभग छीनिए लेलनि आ अपने हौंक' लगलाह— अपनो देह मे, हुनको देह मे। ओ मुस्किआ देलथिन, कारण— एकदिन बाजल रहथिन जे पतिक पैर जँतबेनाइ, पंखा हौंकबेनाइ आदि नारी-शोषण थिक।

कि तखने भुक द' लाइन अबैए, आ कटि जाइए।

कतेक क्षणभंगुर आशा!

झा बाबू सोचलनि—कहीं फ्यूज बनेबाक प्रयास ने त' क' रहल अछि?

आश्चर्यजनक बात!

एहना स्थिति मे प्रायः तीन बेर 'टराइ' लैत छै।

ओ दोसर टराइक प्रतीक्षा करए लगैत छथि। तुरंते दोसर टराइ होइत छै आ दुनू कोठलीक बौल बेशी भोल्टेजक कारणेँ 'फ्यूज' क' जाइ छै।

झा बाबू दुनू बेकती केँ चकबिदोर लागि गेलनि, जे ई की भ' गेल? फेर लाइन कटि जाइ छै।

ओ हिनका दिस तकैत छथिन आ ई हुनका दिस। चारि आँखिक समानान्तर टकटकी, बारह टाकाक घाटाक अबिनखेद आ बारह टाकाक आर व्यवस्थाक चिन्ता— समानान्तर-समानान्तर।

'सरधुआ सबहक सराध-बिटारि' मे पत्नीक आक्रोश व्यक्त होम' लगैत छनि। फेर तेसरो टराइ विफल भ' जाइ छै आ अन्हारक तख्ता पलट नै भ' पबैछ।

झा बाबू कने सुगबुगयलाह। जाँघ उठौलनि। फेर सुभ्यस्त भेलाह। मोन कनेक खनहन भेलनि। हुनका ऑफिस सँ आबि पैखाना जयबाक आदति छनि, मुदा तकर साधंस नै भ' पाबि रहल छनि। सुखायल घाम पुनः देह के भिजा देतनि, ताहि डर सँ।

ओ सोचैत छथि, देहाती जीवन एखनहुँ एक अर्थ मे बेशी नीक अछि, जे लोक खुशफैल स' बाध-बोन मे लोटा ल' क' जाइए, यद्यपि से स्वच्छता आन्दोलनक विरोधी बात थिक। पैखाना मे सड़बाक समस्ये नै।

एतबा सोचिते रहथि, कि लाइन आबि गेलैक। ओ बरामदा स' प्रायः दौड़िए क' घर अयलाह आ 'ह' ह' ह' करैत' ठीक-ठीक पंखाक सिकामने ठाढ़ भ' गेलाह। बुझयलनि जेना महकैत काँख सँ थोड़ेक त्राण भेटल होनि।

कि लाइन कटि गेलनि।

'च' च' 'चिकारी' मारैत पुनः हथपंखा झपटलनि आ पत्नी दिस खौंझायल नजरि फेकलनि।

पत्नी 'हे...' कहि अपना दिस ध्यान आकर्षित केलखिन आ पटापटि चारि बेर कनखी मारि देलखिन! झाजी खौंझ-मिश्रित हँसी हँसला आ समर्थन मे मूड़ी झुल'बैत बजला— हँ—हँ! सैह-सैह!

आ टहल' विदा भेलाह सड़क पर।

ओ स्थितिक अभगदशा पर सोच' लगलाह। मुदा, भाषणक मूड मे नै रहथि।

किछुए कालक बाद कनियाँ सेहो सड़क पर अयलथिन आ लग मे आबि क' बजलथिन—पानियों आन' पड़त चापाकल सँ। लाइन दुआरे पानियों नै चललैक नल मे। सभ बाल्टीन आ सुराही खालीए अछि।

झाजी कें किछु बजना नै गेलनि।

दुनू बाल्टीन उठा कल दिस विदा भ' गेलाह।

पानि अनलनि, त' डेरा मे दोसरे नाटक शुरू छलनि। गर्मी सँ उबिया क' बेटाक निन्न टूटि गेल छलनि। ओ टाहि मारि-मारि कानि रहल छल।

ओकर चिचियायब एखन ककरो अकछा सकैत छलै। कनियाँ ओकरा सम्हार' मे पछड़ि रहलि छलथिन आ नङो-चङो भेलि छलथिन।

अपने बच्चा कें ल' क' सड़क पर टहलाब' लगला आ ओकर पीठ थपथपा क' सुतयबाक उपक्रम करए लगला। ता बगलबला सिन्हाजी सेहो भेटि गेलथिन टहलिते।

टोकलथिन—की झा बाबू, बिजलीक तँ जुलुम हाल अछि। बुझाइए जेना बिहार सरकार कनखी मारैए आ बरौनी, काँटी, पतरातू, सबहक भट्ठा बैसि गेल। थरमल पावर के थरभस लागि गेल झा बाबू।

—'से की पुछै छी? वितरणो मे भी.आइ.पी. कोटा अपना सभक जान मारैए।'

—'अरे देखू ने, काल्हिए हमर बेटी जन्माष्टमीक मेला देख' गेल छलि राति मे। से दर्शने काल मे लाइन कटि गेलै आ दुनू कानक सोनाक बाली झीकि लेलकै। तखन अस्पताल जाय पड़ल, कान मे टाँका दियाब'।

—'हमर जेठका बच्चा दिल्ली विश्वविद्यालय मे पढ़ैए। ओ एक मास लेल आयल छल, से जेना एक्के सप्ताह मे उबिया गेल। बिजली मे पढ़बाक आदति छै, लालटेम मे कतौ पढ़ल होइ। काल्हि एही बिजली रानीक चलते जा रहल अछि। छोटका जे अछि, तकरा त' बुझू आइ नल पर मारिये बझि गेल छलैक। ठोपे-ठोप नल चलब शुरू भेलै, कि अपने मे मारि होबय लगलै, जे हम्मर नम्मर पहिने त' हम्मर नम्मर पहिने। बुझाइछ जेना हम सब प्रागैतिहासिक युग मे जीबि रहल होइ।

सिन्हाजीक गप्प सँ झा बाबू सहमति व्यक्त कयलनि, कारण, साँझ सँ एखन धरि करीब-करीब बारह बेर लाइन आयल छल आ गेल छल। आ से ई प्रक्रिया आइ करीब बारह दिनक पश्चात प्रारम्भ भेल छल। आइ त' दू टा बल्बो के लेने गेल छल। झा बाबूक परिवार त' एकटा नमूना मात्र थिक। एत' त' समस्त शहर एकटा सार्वकालिक खौंझ मे जीबि रहल अछि। सभतरि चापाकलक खराबी। क्यो माय-बाप नै। बिजलीक चोरा-नुक्की अर्थात किरासन तेलक महगी। तेँ भोजन बेर मे डिबिये स' काज चलतनि। ओकर राशि नाक मे जाइत रहैत छनि आ भोजन करैत रहैत छथि। कपार सँ बुन्दे-बुन्द घाम बहुत कोशिसक बावजूदो थाड़ी मे टपकैत रहैत छनि आ ओ छथि, जे खाइत रहैत छथि। की करता? तौलिया सँ पोछने घाम तमा माननि तखन ने?

तहिना बिजली बोर्डक दुर्दशा त' एकटा नमूना मात्र थिक। इमानदारीक थर्मामीटर मे सभ विभाग कें नापि क' देखू। बइमानीक पारा सोझे-सोझ एक सय न' डिग्री फारेनहाइट पर जा क' कनेक दम लेत। बिजलीयो विभाग मे गोटेक इमानदारी सँ काज केनिहार भ' सकैए। मुदा एकटा कोइली की सौसे संसार मे बसन्त आनि सकैए? किन्नहुँ नहि, किन्नहुँ नहि— सहसा झा बाबूक मुँह सँ निकलि गेलनि। ओ अपना आगू-पाछू देखलनि— क्यो सुनलक त' नहि?

फेर कुमोन सँ चलि अयलाह भोजन करए डेरा। स्नान करबाक मोन भ' रहल छलनि, मुदा चापाकल पर जयबाक साधंस नै।

पत्नी घाम सँ तर-ब-तर भेलि भाँटाक भुजिया मे छोलनी चला रहलि छलथिन।

किछुए कालक उपरान्त झा बाबू भोजन क' क' 'असंभव आराम' करए चलि गेलाह। आराम— जे एकटा व्यंग्यात्मक शब्द थिक, शहरक लेल, गर्मी मे। मात्र पसिझैत रहू आ पाथर बनल व्यवस्थाक चोट सहैत रहू। अपस्याँत भेल पंखा हौंकैत रहू आ एक हाथक दूरी दुनू बेकतीक बीच मे बनौने रहू।

अन्यथा पलंगे पर बारह बजे राति मे नोनछड़ाइन घाम सँ दुनू बेकतीक निशा-स्नान भ' जायत।

बेसी की बुझबैक?

उबिया-उबिया झाजी घर-बहार कयलनि। पत्नी कएबेर भगमान-भगवत्ती केलथिन। मुदा आदमी द्वारा सृजित अ-व्यवस्था मे देवी-देवताक कोन पैरुख?

झा बाबू समस्त परिवार पंखा कें दोहाइ देलनि। मुदा पंखा, बिना बिजलीक, कोनो मशीन जकाँ, ठाढ़ रहल आ ओ लोकनि बिना संवेदनाक लहास जकाँ पड़ल रहलथि। टेटनसक रोगी जकाँ बेबस छटपटाइत रहलथि। माय-बहिन जकाँ सूतल रहलथि आ बिचला मे सूतल बेटाक डाँड़क चानीक बिच्छाक बोर, दुनू बेकती कें डँसैत रहलनि।

बीच-बीच मे लाइन एला पर, छ' बेर उठि क' मसहरी खोललनि आ लाइन कटि गेला पर छ' बेर फेर मसहरी लगौलनि। मोन अकच्छ भेलनि त' काटल गाछ जकाँ हहा क' बिछौन पर खसलाह। देह जेना कटहरक तीतल ढेंग जकाँ घोलटि गेलनि आ एकटा अद्‌भुत बेहोशी मे दुनू बेकती हेरा गेलथि।

चारि बजे भोर मे जाक' मोसिम कनेक लरमायल। निन्न सँ बोझ बनल पिपनी, खूजल रहबा सँ साफ नासकार चलि गेलनि आ अपने-आप बन्न भ' गेलनि।

गड़ियाइत आँखिक पल आ कोठलीक पट, रौदो भेला पर बन्न छल।

क्यो कसाइ जकाँ जिंजिड़ ठकठकौलक।

पातर निन्नक लोक झा बाबू धड़फड़ा क' उठलाह। घड़ी देखलनि—न'।

बाप-रे-बाप! कखन ऑफिस जेबाक तैयारी हेतैक? बड्ड लेट भ' गेल।

कनियाँ-बच्चा, सभ पोस्टमार्टम रूम मे फेकलाहा लहास सभ जकाँ, जहतरि-बहतरि बेसुधि भेल औंघरायल छलनि।

निन्न सँ झा बाबूक आँखि गड़िया रहल छलनि, जेना मेरचाइक बुकनी

क्यो आँखि मे झोंकि देने होनि। पिपनी खुजबाक हेतु किन्नहुँ तैयारे नहि छलनि। खौंझ केबाड़ी ठकठकौनिहारक लेल, गारिक रूप मे मुँह द' क' निकलबा पर विर्त्त छलनि।

केबाड़ी खोललनि तँ ठकठकौनिहार जा चुकल छल आ बरामदा मे एकटा कागत फेकल छलनि, झा बाबूक लेल।

लीखल छलैक— मई मासक बिजली बिल— सात सय रुपैया मात्र।

•

1991 ई.

आइ 2019 ई. मे, लाइन एखनहुँ कटैत अछि। बिजली अर्थात व्यवस्था, एखनहुँ कनखी मारैत अछि, आम जनता कें। आइयो संसद मे विरोधी दलक नेता, बेरोजगारीक नाम पर, प्रधानमंत्री अर्थात् शासन-तंत्र कें मारलक अछि, कनखी! आब लोक लोटा ल' क' बाधो-वोन कोना जायत? तखन फेर 1991 ई. कें, 2019 ई. मे कोना मोन नहि पाड़ल जाय?

•

2019 ई.

नरमेध

—'की भेल?'

—'भ' गेल।'

—'केहेन छै?'

—'गोर भुभुक्का। खूब फबतै संजू मे।'

—'पढ़ल-लिखल?'

—'मासटरी-टरेनी करै छै। खपड़ा के घर। माथ पर दू बिगहा जमीन। किसुनदेवक अपने खास भागिन।'

—'परिवार केहेन छै?'

—'बाप मिडिल इसकुलक हेडमास्टर छथिन।'

—'केना टूटल?'

—'किसुनदेवक लोहा मान' पड़त। सोझे बहिनोक हाथ ध' लेलकै।'

—'कत्ते पर?'

—'पचास हजार आ हीरो-होन्डा।'

—'गै माय! कत्त' स' देबै यौ?'

—'आब जत्त' स' दिऐक। हीरो-होण्डाक कोजगरा धरिक समे अछि। जमीने बेच' पड़तै की? आर कोन उपाय छै? पी.एफ. सँ बीस हजार लोन ल' क' वर-बरियाती हेतै।'

संजूक बाबू लोटा उठा गटागटि पानि पीब' लगला आ संजूक माय हुनकर कंठक उतार-चढ़ाव दिस ताक' लगली। मैंञा गओं स' चौकी पर स' उतरए लगली।

संजू बहिन मे असगर। सबस' जेठ सन्तान। मात्र एकटा छोट भाय परमोदबाबू। मैटरिक नीक जकाँ पास क' आइ.ए. मे परेभिट स' दाखिल भेल छथि। औसत मैथिल कन्या सँ एकरत्ती बेसी बोधगरि।

मैंञा, संजू दुनू भाय-बहिन, पुश्तैनी सम्पत्ति, घर-घराड़ी, कलम-गाछी सब किछु केँ बड़ सिनेह सँ पोसने छथि। मोह-ममता उमेरक संग-संग बढ़िते गेलनि अछि। तकर कारण छै संजूक बाबू अर्थात मैंञाक बेटा बिजली-बोर्डक

बीस सालक चतुर्थ-वर्गीय नौकरी क' क' एक बीत नै अरजि सकला आ संजूक बाबा चारि बिगहा चिक्कन चास अरजि क' गेल छला। बाबाक अरजल सम्पत्ति सँ मैंञाक ममता हैब स्वाभाविके। ओ सब दिन अपन समटल बेटा केँ उलहन-उपराग देल करथिन, जे तोरा स' की कैल भेल'? क' गेलखुन बाप-पुरखा, जे धीया-पुता आम-कटहर सँ बरखपाछु करैत छ'। जमीन-जाल अन्नपूर्णा होइ छै। खेतिए पर दू कौड़ीक आमद आमद बुझाइ छै, नोकरिहारा सबके। ने त' पेटो पर आफद। तेँ कहै छिय' बाउ, अन्नपूर्णा केँ नै कहियो बेचिह'। चाहे कतबो बेलल्ला किऐक ने भ' जाह। खेत-पथार धीयापुता ले' रह' दिहक, जे बाबाक नाँ लै जेतै। आ संजूक बाबू हँसि क' कने गरदनि हिला देथिन।

यैह त' परुकें सालक गप्प छिऐ।

संजूक माय इच्छा परगट केलखिन, जे मैंञा सिमरिया जेथिन मास कर'। आ गाम घुरला पर भागवत कहौथिन। गामक बहुतो मासी सब सिमरिया जाइत छलखिन। संजूक बाबूक हाथ खाली छलनि। बोर्ड मे तीन मास स' हड़ताल छलै, से दरमहा बन्न छलनि। ओ दू कट्ठा खेत भरना रखबाक बात बजलखिन, से मैंञा अनपट उठा देलखिन जे खेत भरना राखि क' तीर्थ-बर्थ आ धर्म-कर्म करब? नहियें टा गेलखिन सिमरिया, ने भागवते कथा कहौलखिन, ने एकासिए जग केलखिन। से संजूक मैंञा, संजूक माय-बापक गप्प-सप्प सूनि क' ल'ग सहटि अयलथिन आ पिरही घीचि क' संजूक बापक सामने मे बैसि गेलखिन।

—'बच्चा, ठीक भ' गेल कथा?'

—'हँ गे माय, ठीक भ' गेलौ संजूक विवाह। अगिला बीस तारिख कें हेतौ। आइ स' ठीक पनरह टा दिन आङुर पर गनि क' रहि गेल छौ। पचपन गो बरियाती अओतौ। तों आब अपन जनउ-तनउक इन्तजाम-बात मे लागि जो।'

—'बच्चा हम सब गप्प सुनि लेलहुँ-एँ। हम ई उनटा-सुनटा रेवाज सभ नै मानब। पाइ-ताइ गन'वला बात हमरा नै सोहावित अछि। बारहनि ल' क' झटबनि हम किसुनदेवो के। हुनकर भागिन बड़ महग छनि, त' हमरो संजू सस्त नहि अछि। ओ बेचथु बेटा के, हमरा नै किनबाक अछि। लोक पहिने बेटी बेचै छल त' 'बेटीबेच्चा' कहि क' समाज गड़ियबैत रहै आ आब 'बेटाबेच्चा' सबके समाज मान-परतिष्ठा दैत छै। अयँ हौ, कत' स' किनबहक वर? तोँ खेत-पथार बेचबाक चर्चा केलह-ए? हम कुसियारक दबाइ पीबि क' जान द' देब'। ई चर्च केल' त'...

—'अयँ यै माय, जाथु, ई त' तेसरे बखेरा ठाढ़ क' देलखिन। एना नै

आब बजथुन। होब' देथुन, आब जे होइ छै से। शुभ-शुभ क' होब' देथुन। लोक की कहतनि, से नै बुझै छथिन जे बूढ़ भेने भरष्ट भ' गेलखिन संजूक मैंञा। हिनकर संजू के एहेन वर होइ छनि, ई त' दीय'मान देखाबथु।'

—'अयँ यै अहाँ बताहि भेल छी, जे बेरबादी के नोतै छी? कत'स' एते पाइ अनतै यै? अङोरा नोकरी स' होइ-ए? ओ कत' स' जेलो साइकिल देतै यै? अइ किसुनदेवा के हम नै चिन्है छिऐ? ठिकेदार ककरो भेलैए आइ धरि? ओ पाइये टा के होइ छै, मनुक्खक नहि। ओ अपना बहिनो के धनिक बनब' चाहैए आ हमरा पूत कें उजार' चाहैए गाम स'। हम ई किन्नहुँ होअ' देबै? ई बिआह छिऐ कि बेरबादी, जे ई जा क' गछि एलैए?'

—'माय तोँ एना बजबिही आ कहीं किसुनदेव सुनि लेलकौ, त' सब कयल-धयल पानि मे चल जायत आ अहू बेर कुटमैती नै हैत। संजूक उमेर भेलै आब। तोंही कह, खेत स' आब की उपजा होइ छै? कहियो रौदी, कहियो दाही। तीनफसला जमीन सब बाँझ भेल अछि। लोक नोकरी नहि करत त' जीयत? किसुनदेवो त' ठिकेदारिए स' ओहेन मकान बनेलकए आ गाम मे दिग्विजय केने अछि। हे, ओ पिनकाह छै, मुँह पर नै बजिहैं किछु।'

—'जो-जो। तोँ डेरा ओइ जनिढाहा स'। अयँ रौ, वर पढ़लो-लिखलो छै?'

—'हँ गे, मास्टरक टरेनी करै छै, घोंघररिया मे।'

—'रे दैवा! रे दैवा! अयँ रे की पढ़लकै रे? मास्टरीवला पढ़ाइ पढ़ै छै आ तखन पाइ गनौतै? अयँ रे, वरबा बिकाइ ले' तैयार छै? अपना बाप लग किछु नै बजलै वरबा?'

—'धौर जाथु, ई त' अकरहर करै छथि। कुमार वर मुँह बजतै? केहेन कलजुगाहि भ' गेलखिन ई?'

—'अयँ यै, हमहीं कलजुगाहि छी? कुमारि बेटी त' आब मुँह बजै छै आ ओ वर केहेन मौगियाह छै जे...? अकिल के पटपट छी अहाँ दुनू बेकती, जे पचास हजार आ जेलो साइकिल गछि एलिऐए जाक'। देतै कत' स' तकर कोनो दरे ने देखै छिऐ। तखन जे करबें से कर, मुदा खेत नै बेच' देबौ हम बच्चा। धीयापुताक मुँह मे जाबी लगेबही तोँ, से हम नै लगब' देबौ।'

मैंञा उठि गेलखिन। संजूक माय-बाप एक-दोसर दिस तकलनि आ दुनूक आँखि स' एकटा प्रश्नचिन्ह छिटकि गेलनि, तखन कत' स'?

तखने संजू आङन आयलि। मैंञा, बाबू आ माय तीनू ओकरा पर

अपन-अपन नजरि ठिकिया देलनि। संजू किछु कालक लेल फिरीशान भ' गेलि। गुलाबक वर स' कते की गप-सप क' क' हुलसलि आयलि छलि। एत' त' दोसरे गंगा बहैत छली। अठारह बर्खक संजूक उमेर बहुत किछु गमि लेलकै वातावरण के। ओ अपन कोठली गेलि आ आङन स' फेर बहरा गेलि।

मैंञा, बाबू आ माय तीनू एक-दोसरा दिस ताक' लगलथि।

संजूक बाबू जोर स' निसास छोड़ि उठि गेलखिन। संजूक माय रातुक तरकारी लेल टाट पर लतरल सीम तोड़' लगली।

मुदा से समाधान नहि छल।

जेना-जेना खान-पीनक दिन लगिचाय लागल, घरक वातावरण गरमाय लागल। संजूक माय मैंञा पर उग्र होब' लगलखिन आ टोल-पड़ोस मे गुलगुल-फुसफुस कर' लगलखिन, जे बुढ़िये आब टाङ अड़ौने छै। जमीन ल' ल' लोक धो-धो चटतै? नातिन अजग्गि भेल जाइ छनि? तकर सोचे नै। हिनकर इज्जति दाव पर लागल छनि, से दू कर अन्ने नै धसैत छनि आ ई छथिन जे जिदियैल छथिन। बेरे-कुबेरे लेल ने सम्पत्ति रहै छै लोक के?

माने-परधाने लगा क' बजैत पुतोहक फदकी सुनैत-सुनैत मैंञाक हाल विचित्र छलनि। एकदिन पुतोह देखलखिन-मैंञा संजू के अपना छाती मे सुटकौने हिचुकि-हिचुकि क' कनैत आ संजूक पीठ पर हाथ फेरैत बजैत छली— हम बुझितौं जे तोरा कारण हमर कुल-खानदानक खुट्टाउपार हैत, त' सोइरीए मे नोन चटा दितिऔ संजूआ।

संजू बाजल—मैंञा, आबो की भेलैए? तोहीं कहुन बाबू के, जे कॉलेज जाय-आब' देता हमरा। हम बी.ए., एम.ए. करब आ बिआह रोकबा दहिन। एकटा हमरा बिआह चलते सौंसे परिवार मेट जेतै? मैंञा, जमीन बिकेलौ, त' हमहूँ वेदी तर स' भागि जेबौ। नै चाही एहेन विआह हमरा।

संजू के सेहो कनैत देखि, संजूक माय के नहि रहल गेलनि। ओ सासु स' बजली —किए हिनकर ज्ञान-ध्यान हरित भ' गेलनि? किछु बुझै नहि छथिन? नोतल कनियाँ स' कतौ एना आ ई सब गप्प कयल जाइ?

मैंञा टुकुर-टुकुर संजू-मायक मुँह दिस तकैत रहली आ संजूक माय की-कहाँ बजैत रहली।

एक-एक दिन बीतल जाइ आ संजूक बाबू फटोफट्ट मे पड़ल जाथि। सूदि पर के देत एतेक पाइ? पचास हजार? दन्तार जकाँ मुँह बौने बुझाइन रुपैया।

जेना गीड़' लेल कोनो बतहा हाथी खेहारने अबैत होनि सपना मे आ अपने भागल जाइत होथि निच्छोह, तहिना वास्तविक जीवन मे भ' रहल छलनि। जेना-जेना पचास हजार केँ छूबाक प्रयत्न करथि, निम्न-मध्यवर्गक सुख जकाँ, पचास हजार दस लग्गा आगुए-आगू पड़ायल जाइनि।

जँ सूदि पर उठाइयो लेथि कतहु स', सोचलनि संजूक बाबू, त' फेर एतेक टाकाक सूदि कत' स' देथिन आ मूरक की जोगाड़ हेतैक?

मायक जिद्द हुनका नागफाँस मे जकड़ि देने छलनि आ ओ कछमछ-कछमछ क' रहल छलाह। एतेक गोटे बरियाती! बाप-रे-बाप! पचपन! तीन साँझक धमगिज्जर? एक साँझ माँछ, एक साँझ माँसु! रसगुल्ला-दही कचरम-कूट, कचरम-कूट? बरियाती केँ अपना ओत' अनबाक भार अर्थात बसक व्यवस्था! वरक फरमाइशक मोताबिक परिछनि स' चतुर्थी धरिक फोटोक व्यवस्था! किए? किए? एतेक सभ किछु कन्यागते किए? किऐक त' ओ कन्यागत छथि आ हुनका मूड़ी झुका क' रहबाक छनि बरागत लग। दैव-रे-दैव! कोन कुकर्म लोक करैए जे बेटी के जन्म दैए? घर मे सोनो-तोनो नै अछि, जे द' दितियनि चढ़ावक लेल आ पाइ गन' मे किछुओ ओड़ा होइतय।

सरंग-पताल देखैत-देखैत संजूक बाबूक पयर किसुनदेवक नव-निर्मित ठिकेदारी कोठा दिस दनादनि उठ' लगलनि। हुनका भेलनि जेना किसुनदेव कोनो चौपहरा खिस्साक राक्षस जकाँ मोने-मोन बड़बड़ा रहल हो —कोउ घड़ी मे तोँहू अयबेँ! हुनका देखि किसुनदेवक चेहरा पर आयल प्रसन्नताक भावक सैह अर्थ लगलनि संजूक बाबू केँ।

से आबिए गेलाह संजूक बाबू। किसुनदेव लग जा क' बैसि गेलाह बिरींच पर।

किसुनदेव सूदि पर पाइ देबा स' साफे नठि गेल। किसुनदेव बुझै छल, कुटमैतिए ठीक क' देलौं, सैह कम भेल की? आजुक परिस्थिति मे गलती नहि बुझैत छल। तेरह डिबिया तेल जरि जाइ छै लोक के ताक' मे। ओ खेतभरनो लेबा स' साफे नठि गेल आ बाजल— हम त' अहींक बाधक किछु खेत केबाला करेबाक हेतु पाइ रखने छी। ओमहर तीनफसला जमीन सब छै। बिसनू सेहो कहै छल हमरा, खेत लेब' लेल। से काकाजी, एतेक-एतेक पाइ हम, एमहर-ओमहर नै फँसायब। साल भरिक जवाहर योजनाक कमाइ थिक। बड्ड पसेना चूअल अछि।

संजूक बाबू विकल्पहीन छलाह। मान' पड़लनि। मुदा शर्त्त रखलनि जे

चतुर्थीक परात रसटरी ऑपिस चलल जाय। ई मानबा मे किसुनदेव के कोनो असौकर्य नहि छलैक। ओ सब तरहें सक्षम छल।

संजूक बाबू किसुनदेवक संग पाँच गोटे स' पुबारि गाम विदा भ' गेलाह, भविष्णु समधि केँ मुट्ठा धराब' अर्थात खान-पीन कर' सगुन उठाब' वा रुपैया गनती कर'। बिना रुपैया गनने, के खान-पीन कर' दितनि?

किसुनदेवे टाका गनलक। संजूक बाबू एतेक टाका जीवन भरि नै देखने छला। जेना-जेना नमरी फर-फर निकलल जाय आ एक-एक हजारक खल पूड़ल जाय, संजूक बाबू के बुझाइन जेना हुनकर कट्ठा-कट्ठा तीनफसला खेत अपना बाध स' किसुनदेवक बाध दिस ससरल जा रहल छनि। हुनका गोसञुनिक घर स' लछमी निकलि क' समधिक घर दिस जाइत बुझेलखिन। ध र्महि धाधर, पापहिं विरधी, ओ सोचलनि। संजूक बाबू, मोने-मोन साक्षात लछमी बूझल जाइत सतरंजीक चेन्हवला गनगुआरि साँप के परनाम केलनि जे हुनका अपना घरक चिनबार पर स' किसुनदेव आ समधिक घरक चिनबार दिस ससरैत बुझेलनि।

वर केँ गोरलगाइ पड़ल। घड़ी-औंठी-कपड़ा-लत्ता आदि-आदि चढ़ल। विदाइक धोती पहिरि-पहिरि अबैत गेलाह। प्रात भेने खर्चक हिसाब जोड़लनि त' पी.एफ. लोनवला बीस हजार मे स' छ' हजार पार छलनि। दाँते अङुरी कटलनि। सरकार आ महगी केँ गड़िऔलनि।

संजूक नामे, मासे-मासे पचास टाका दैत छलखिन बैंक मे, सेहो तोड़बा क' ल' अयलाह अठन्नी गढ़ाब'।

ओमहर संजूक भविष्णु ससुर विदा भेला बजार, अपना भविष्णु पुतोहुक लेल न' टा अशर्फी गढ़ाब'।

एमहर बिआह दिन दोसरे बात सब होअ' लागल। मैंञा के आगम भ' गेलनि, जे खेत भरना राखि क' पाइ गनलकए बच्चा। ओ विक्षिप्त जकाँ संजूक माय-बाप केँ उकट' लगलखिन—पुरखाक अरजल बोहा देलक। हुनका सगर टोल बुझाब'-सुझाब' लागल, जे भरने ने रहलैए, फेर छूटि जेतै।

संजूक स्थिति आर विकट छल। ओकरा कोनो अङुरी कटने अपने घा होइ छलै आ मैंञाक बात सब बहुत बेजायो नै लगैत छलैक। ओ अपन गुलाब स' थोड़ेक गप्प केलक आ इच्छा प्रकट कयलक जे वेदी तर मे ओ नहि बैसत आ कतौ भागि जायत। गुलाब कहलकै जे ई सब कोनो नीक बात नै छिऐ आ

ने समाधाने भेलै। कोनो स्थिति मे, ओकरा वेदी तर बैसहि पड़तै। ने त' सभके बदनामिए-बदनामी हेतै आ संजूक माय आ बाबू एहि बात के बरदाइस नै क' सकथिन। संजू कें गुलाबक ई बात सब बहुत संतोषप्रद नै लगलै।

संजू के माय-बाप आ मैंञा मे स' ककरो छोड़ल नै जाइत छलै। मुदा ओ जनै छल, मैंञा ठीक बजै छै। ओ एहि सभ बातक कारण अपना-आप कें, अपन माय-बाप पर निर्भरता कें मानैत छलि, तें आर आपसोच होइत छलैक। ओकरा मैंञाक बताहिवला बगय-बानि देखल नहि जाइत छलैक। आ मैंञा छली जे किसुनदेव के होलिऔने छलखिन, जे वैह टटीबा खेत दखल क' लेलक। ओ नवका समधि के गाड़ि स' ओगारि रहल छलखिन।

वर-बरियाती आयल। दूरा-दरबज्जा लागल। संजूक बाबू आ माय परमोदबाबू के मैंञा लग कड़े-कमान रहबाक डिपटी देलखिन।

परिछनि, मातृका पूजा, वेदी पर विवाहारंभ। संजू पहिने त' पसाहनि कराब' लेल बैसबे नै करय। तखन तथाकथिक बुझा-सुझा क' ओकरा वेदी तर बैसाओल गेल। तुरन्ते नोर स' पसाहनि धोखड़ि गेलनि संजूक।

मैंञा घरक केबाड़ी पिटैत रहथिन आ परमोदबाबू द्वारपाल जकाँ गेट पर ठाढ़ रहय। लोक के खराप लगलै, त' केबाड़ी खोलबा देलकै।

तखन मैंञा आर उछन्नर देब' लगलखिन। परमोदबाबू मदन-कम्पोटर के बजा अनलक। संजूक बाबू मदन-कम्पोटरक कान मे किछु कहलनि, त' मदन-कम्पोटर तुरंत एकटा कम्पोजक सुइया तैयार केलक।

मैंञा सुइया देखलनि त' चिकर' लगली —हमरा मारै जाइए। हौ लोक सब दौड़ै जा। हमरा जहरक सुइया भोंकत हौ। हम सुइया नै लेब। हमर पोती के बिआह छी, आ हम सुइया लेब?

मैंञा तोड़ मारि-मारि क' वेदी दिस आब' चाहलखिन।

पुरहित गोविन्द मिसर वरक कान मे कहलथिन, जे किछु मेन्ड खराप भ' गेलनि हें। आब इलाज त' बादे मे हेतनि। वर 'ओ...' कहि मूड़ि झुका लेलनि। संजूक बाबू दुनू बापूत अपने, मैंञा कें भरि पाँज क' जकड़ि लेलखिन आ मदन-कम्पोटर कम्पोजक सूइ मैंञाक बाँहि पर भोंकि देलखिन। मैंञा छिलमिला उठली। हुनकर चेहरा पर उजरी छिटकि गेलनि। पीरी त' पहिनहि छिटकल रहनि।

ओ ठामहि ओंघरा गेलीह। ठोर पटपटाइत छलनि –दैब-रे-दैब! हमरा बेटा-पुतोहु के मति दही रे दैबा। ज्ञान किए हरित भ' गेलै एकरा सबहक रे दैबा!

फेर शान्त। कि संजू सहसा उठि क' ठाढ़ भ' गेल। कि विधकरी डेन पकड़ि क' बैसा लेलकै। वरक मोन छनगलनि त' विधकरी कान मे किछु कहि देलखिन।

लोक निचैनीक साँस लेलक।

संजू घोघक तर मे कनैत रहलि। विधकरी ओकर नोर चुपचाप पोछैत रहलखिन। संजूक नोरक अर्थ ककरो नहि लगलैक। बहुत गोटे बुझबो नै केलकै। भरिसक कोनो संजूए के कहियो अर्थ लगतै।

बिआह होइत रहल। असंख्य बेर दोहरायल विध-बेवहार के एकबेर फेर दोहरायल गेल।

वर संजूक हृदय लग आङुर स' स्पर्श कयलनि। संजू के बूझल छलनि, जे बिकौआ वर हुनकर हृदय केँ स्पर्श क' कतेक स्पन्दित करतनि। हृदय छूब हुनकर अभिष्टो नहि छलनि। संजूक रोइयाँ भुलुकि गेलनि, जेना कोनो काँट एकेरत्ती गड़ि गेल होइनि।

संजू केँ न' टा अशर्फीक पैघ सन छड़ चढ़ाओल गेलनि। पहिराओल गेलनि गरदनि मे। जेना कोनो माल-जाल केँ गरदामी-नाथ स'- नियंत्रित कयल जाइत हो।

संजू के भेलनि, जेना कोनो असंख्य टाङवला गनगुआरि, जे छुबिते अशर्फी जकाँ गोलाकार भ' गेल हो, से सौंसे छाती पर बुलैत होनि आ ओकर असंख्य टाङ भूआ जकाँ गड़ैत होनि। हुनका बुझेलनि जेना कोनो भयंकर ध ामन, हुनका छाती केँ गछारने होइनि आ अपन न' टा अशर्फीयाह मुँह स' हुनकर छाती सँ चूसैत होनि। दूध नहि, खून!

हुनका बल्ल द' पसेना फेकि देलकनि। हुनका भेलनि जे अपन समस्त शक्ति लगा क' दुनू हाथे तीरि क' धामन केँ झमारि क' दूर फेकी। मुदा अइ प्रयास मे बाधक भेलखिन, पहरा पर बैसाओल चौकीदारनी अर्थात विधकरी। ओ हाथ रोकि लेलथिन संजूक।

अशर्फीक छड़ संजूक आँखि मे गड़ैत रहलनि आ छाती केँ डसैत रहलनि। ओ आँखि मूनि लेलनि।

घोघट ले' ससुर बनारसी साड़ी अनने छलथिन। घोघट देब' बेर मे किसुनदेव लगे मे ठाढ़ छलाह।

संजू घोघटक अर्थ गुनैत छलीह। एहि आवरण मे हुनका पूरा सासुरक पाप केँ झाँपि क' राख' पड़तनि। हुनका वरक जीवनक बिहाड़ि मे, जखन पचास हजारक नोट सभ उड़ियाय लगतनि, त' संजू एहि साड़ी मे सभ नोट केँ समटि सकती? अच्छा साड़ीक लम्बाई त' हीरो-होण्डा स' पैघे हेतै? झाँपन भ' जेतै भरिसक। मुदा बाबूक जमीनक रकबा सँ पैघ हेतैक ई बनारसी सिल्क?

संजू केँ भेलनि जे आब कहियो पचास हजारी सिड़कीक जनमहौस सँ ओ निकलि नहि सकती। आब कहियो अशर्फीक धामनक गछार सँ मुक्त नहि भ' सकती। ओ उकस-पाकस केलनि, कि विधकरी कनहा पकड़ि फेरो दाबि देलखिन।

ता मैंञा हड़बिरड़ो मचा देलथिन। लोक देखलक जे मैंञा लत्ते-पत्ते समधि आ किसुनदेव दिस दौड़लि जा रहल छथि। कम्पोजक सुइयाक परभाव भरिसक खतम भ' गेल रहैक। लोक हुनका पकड़' दौड़ल। किसुनदेव समधिक हाथ पकड़ि, अङनाक मुहथड़ि दिस घीच' लागल। मदन-कम्पोटर पुनः सुइया ल' क' मैंञा दिस दौड़ल। मैंञा चिचियाय लगली —गे संजू, गे उठ ने बेदी तर स'। तोरो मारि देतौ गे छौंड़िया! देखितो ने छै कसैया सबके! तोरो निशाँ मे मता क' जान मारतौ, तखन बुझिहैं बकलेलही!

लोक हँस' लागल। मैंञा फैर बेसुधि भ' गेली। संजू केँ दाबि क' दुनू दिस दू टा महिला बैसलि रहली आ विधकरी संजूक आँखिक नोर पोछैत रहलीह आ कान मे फुसफुसा क' बुझबैत-सुझबैत रहलथिन। संजूक बाबू समधिक मान-मनौअलि करए दलान दिस दौड़लाह। संजूक माय धर्मराजक आगू मे एकटंगा देने छली —हे धर्मराज, इज्जति बचाउ! हे धर्मराज, इज्जति बचाउ!

तेसरा दिन, परात भेने संजूक बाबू दलान पर रहथि। न'क अमल मे किसुनदेव आयल आ आश्चर्यपूर्वक जोर सँ बाजल —अहाँ तैयार नै भेलौं एखन धरि? रसटरी ऑपिस त' दसे बजे खूजि जाइ छै!

संजूक बाबू किसुनदेवक मुँह पर हाथ राखि देलनि। मुदा कने देरी भ' गेल रहैक।

कोनटा लग बैसल मैंञाक मुँह खुजले रहि गेलनि। आँखि पथरा गेलनि। छाती दू-दू बीत फान' लगलनि। तुरत्ते मदन-कम्पोटर केँ बजाओल गेल।

मदन-कम्पोटर बाजल— 'हाट फेल।'

संजू 'मैंञा गे मैंञा' करैत, मैंञाक देह पर तड़ाक बजरा खसली।

संजूक वर कें कोनो अर्थ नहि लागि रहल छलनि। किसुनदेव कें रसटरीक चिन्ता बढ़ि गेलैक।

दिनकर बाबू कें भ्रम भेल छलनि?

कथानायक?

श्री दिनकर झा। एकटा स्थानीय अंगीभूत महाविद्यालयक किरानी।

स्थान?

दरिभंगा सन कोनो एकटा शहर।

कथाक अवधि?

मात्र एक सप्ताह। कोनो एकटा शनि कें प्रारंभ आ कोनो एकटा शुक्र कें समाप्त।

समय?

किछु दिन पूर्वक जखन नेपाल सँ 'रामायण' आ दूरदर्शन सँ 'महाभारत' क प्रसारणक परिणामस्वरूप, देसी-विदेशी कम्पनी सबहक टी.वी.क बिक्री चरम सीमा पर छल।

की कथानायकक डेरा मे टी.वी. आबि चुकल छलनि?

हँ, वेस्टन, सादा, छोटकिनमी। कनियाँ, धीयापुता आ अपने कॉलेजक एकटा प्राध्यापक नन्दजी मिश्रक दवाब पर। ओना अपनो मोन छलनि थोड़ेक। तेँ आर्थिक घिच्चा-तिर्रीक बावजूदो डेढ़ हजार अपना दिस सँ लगा क' आ डेढ़ हजार प्रो. नन्दजी सँ पैंच ल' क' डेरा सुशोभित क' लेने रहथि। फेर आस्ते-आस्ते बैट्री-चार्जर सेहो ल' लेने रहथि।

की एहि सँ बाँचब संभव नै छल?

नै, सामाजिक परिदृश्ये किछु एहेन भ' गेल अछि, जे मायावी विज्ञापनक मायावी आकर्षणक अभिशाप सँ निम्नमध्यवर्ग नै बाँचि सकैए। तेँ दिनकर बाबूक घर मे टी.वी. आयब एकटा अस्वाभाविक सामाजिक प्रतिद्वन्द्विताक, स्वाभाविक निष्पत्ति छल।

तेँ टी.वी. आयल आ डेरा मे धमगिज्जर होम' लागल। भरिसक्के कोनो कार्यक्रम होइक जे नहि देखल जाइक। कोनो कार्यक्रम बी.ए. करैत बेटा कें प्रिय छलनि, कोनो आइ.ए.मे पढ़ैत बेटी कें आ कोनो दिनकर बाबू कें छोड़ि बाँकी सभ कें।

तखन एहेन कोन कार्यक्रम छल जाहि मे दिनकर बाबूक मोन रमैत छलनि?

समाचार। समाचार मे एकमात्र हुनके मोन रमैत छलनि। सत्य पूछी त' अविनाश कौर सरीनक कपार दिस सीटल उनटा जूड़ा मे टाँकल ललका गुलाब जखन समाचार बेर मे देखैत रहथि, त' पत्नी दिस देखि क' मुसकिया देथि। मुदा पत्नी हुनकर उमेरक दोहाइ द' क' दिनकर बाबूक सौन्दर्यबोध केँ, मुरै जकाँ टन्न सँ तोड़ि देथिन।

तेँ दिनकर बाबू एहेन लोकक अन्ततः मोन आरिज हेबाक छलनि, से जल्दीए भ' गेलनि। मोहभंग होयबा मे बेशी समय नै लगलनि, कारण ओ केम्हरो सँ डेरा आबथि, देखथि टी.वी. खूजल आ बेटा-बेटी केँ टी.वी. मे पैसल। बेटी, जकर परीक्षा अगिला मास हेतैक। बेटा, जकर परीक्षा चलि रहल छै, तकर ई हाल।

दिनकर बाबू आबथि त' आँखि कड़ा भ' जाइनि – तोरा सब केँ परीक्षाक चिन्ता नै छौ की?

बेटा-बेटी कुमोन स' टी.वी. बन्द करनि आ आस्ते-आस्ते अन्यमनस्क भावेँ रैक मे सँ किताब निकाल' लागनि। कए बेर त' ओ सब 'बाबूजी नै बूझथि', तै दुआरे आवाज बन्द क' क' देखल करनि।

क्रमशः दुनू बेकतीक नियंत्रण धीयापुता, ओकर पढ़ाइ-लिखाइ, टी.वी. पर सँ शिथिल होइत गेलनि आ ओ सभ दुनू बेकती केँ गमैत गेलनि, जाहि मे टी.वी.क पैघ भूमिका छल।

हँ त' टी.वी. किनलनि दिनकर बाबू, तकर करीब डेढ़ मासक बाद शनि दिन क' ई कथा प्रारम्भ भेल।

दिनकर बाबूक कॉलेज मे वेतन लेल हड़ताल चलैत छलनि, कारण तीन मास सँ वेतन नै भेटल छलैक ककरो। एमहर विश्वविद्यालय कहैत छलनि जे वेतन लेल पाइये नै अछि आ ओमहर भी.सी. रजिस्ट्रारक आवासक रंगाइ-ढौराइ मे, पदाधिकारी सबहक टी.ए. मे, वेतनवला पाइ खर्चल जाइत छलैक। तेँ कर्मचारी-यूनियन गरमाएल छल आ धरना-अनशन पर जेबाक सूचना विश्वविद्यालय केँ देल जा चुकल छल।

दिनकर बाबू घरक बेसाह महावीर साहुक दोकान सँ उधारी चलैत छलनि आ धयल-उसारल पाइ खतम भ' चुकल छलनि –टी.वी. मे आ एमहर आमद

बन्न भ' गेल छलनि। तेँ मोन बहुत उद्विग्न रहल करैत छलनि।

शनि दिन ओ बहुत उद्विग्न छलाह। तकर एकटा आर कारण ई छलै जे यूनियन मे दू फाँक भ' गेल छलैक –एहि सवाल पर, जे धरना विश्वविद्यालय आगू मे देल जाय कि भी.सी. क आवास पर? आ हड़ताल अनुचित दिशा मे मोड़ लेब' जा रहल छल।

दिनकर बाबू विदा भेलाह कने प्रो. नन्दजी मिश्र सँ भेंट करए हुनकर डेरा। कने विचार-विमर्श करताह विश्वविद्यालयी राजनीति पर त' मोन हलुकेतनि। फेर मोन पड़लनि –आइ त' दुपहरिए स' नेपाल सँ हिन्दी सिनेमा दैत छै। तेँ कने साँझे होम' दिऐक। फेर बैसि गेलाह अपने डेराक बरन्डा पर आ समय काट' लगलाह। बूझल छलनि जे नन्दजी सेहो टी.वी. प्रेमी बेजाय नहि छथि। सिनेमा खतम हेबा मे एक घंटाक देरी छलैक। एकबार लैत रहितथि त' एक घंटाक खाली समय मे, एखन चाटि जइतथि। मुदा पछिला मास सँ छोड़' पड़लनि। सोचलनि –वेतन फेर नियमित भेट' लागत त' शुरू क' देबैक। पत्नी सेहो बन्न कर' ले' जोर लगौलखिन। से एक घंटाक समय काटब पहाड़ भ' गेलनि।

एक घंटाक उपरान्त पहुँचलाह प्रोफेसर सैहैबक डेरा त' ओ टी.वी. मे आँखि गड़ौने छलाह।

हिनका देखिते बजलाह – आउ, आउ दिनकर बाबू। कोना रस्ता बिसरि गेलिऐ एम्हर? बैसू, बैसू, बड्ड सुन्दर फिल्म अछि अपना इण्डिया स' –चोरी-चोरी! नेपालो स' आइ तेहने छल–प्रेमगीत। बुझू त' लगातारे छै। एकर बाद साप्ताहिकी छै, तै मे काल्हुक सिनेमाक नाम कहत। कने देखिये लिय'।

दिनकर बाबूक आँखि टी.वी.क पर्दा पर स' पछड़' लागलनि। थिर होइते नै छलनि। कछमछ करए लगलाह।

प्रोफेसर सैहैब लक्ष्य केलखिन त' पुछलथिन –आर की हालचाल? सब ठीक-ठाक छै नै?

–'की ठीक रहतै? वेतनक वैह स्थिति अछि, तखन...'

–'हँ, से त ठीके। मुदा की करबै, विधाता जकर मुँह चीरैत छथिन तकर दानोक जोगार करिते छथिन। तेँ बेशी चिन्ता नै करू।'

दिनकर बाबू सोचलनि –इहो विधाता, भाग्य, ईश्वर... सैह?

सिनेमाक कास्टिंग शुरू भ' गेल छल, तेँ प्रोफेसर सैहैब गंभीर रूपें टी. वी. दिस मुखातिब भ' गेल छलाह।

दिनकर बाबू विकट स्थिति मे फँसलाह। किछु काल मौन बैसल रहलाह आ फेर उठि क' विदा होम' लगलाह।

प्रोफेसर सैहैब बजलाह —जा, नै देखब की? बैसू ने, चाह-ताह नै हेतै?

मुदा चलिए देलनि दिनकर बाबू। भेलनि जेना चन्द्रमा के ग्रहण सँ उग्रास भेटि गेल होनि।

सैह प्रोफेसर सैहैब आ हुनकर समस्त परिवार कें सेहो भेलनि। असमय आबि गेल विपत्ति सँ, सभ के त्राण भेटलैक आ सभ निचैन सँ देख' लागल।

दिनकर बाबू गुनधुन-गुनधुन कर' लगला —जे डेरा जाइ कि कत्त' जाइ? मोन पड़लनि —डेरो मे त' पिन्टू, सुनयना आ पत्नी यैह 'चोरी-चोरी' मे तल्लीन हेथिन। तैओ अपने डेराक बरन्डा पर कुर्सी घीचि क' बैसि गेलाह।

बेटी केँ चिकरना गेलनि —सुनयना!

इच्छा भेलनि-एक कप चाह पीबाक। प्रोफेसर सैहैब औपचारिकतावश चाह ले' पूछि क' चाहक भूख जगा देने छलथिन। बेटी केँ चाह बनब' कहलथिन।

बेटी केँ माय पुछलथिन —'के छथुन, बाबूजी?'

बेटी कहलथिन —हँ, हुनको चाहक समय एहने होइ छनि।

कनियाँ बहरा क' बजलथिन —घरे चलू ने। देखबो करब आ चाहो पीब। प्रोफेसर सैहैब ओइठाम गेल छलिऐ?

दिनकर बाबू किछु नै बजला।

—'किए एना चुप छिऐ? की भेल-ए?'

—'की हेतै? अहाँ सब देखू ने, हम चाह पीबै छी एत'।'

कनियाँ एकटा खौंझ लक्ष्य केलखिन आ अन्दर चलि गेलखिन।

चाह अयलनि। तिपाइ पर राखल सेरा गेलनि। जानि नै कत' हेरा गेलाह, जे मूर्त्तिवत बैसल रहि गेलाह। जेना बरन्डा पर सीर गड़ि गेल होनि।

भोरे डिस्को-गीत कान फाड़ि देलकनि, त' निन्न टुटलनि! टी.वी. पर डिस्को जाँघियावाली लड़की सब, लकवा मारल रोगी जकाँ, हाथ-पयर-डाँड़ हिला रहल छलि।

सुनयना बाजलि—गोविन्दाक डिस्को-'91' छिऐ रे पिन्टू!

पिन्टू बाजल —भक्! 'रंगोली' मे कतौ से दैक। ई कोनो फिलिमे मे गोविन्दाक डिस्को हेतै।

गोविन्दा जोर-जोर सँ विचित्र आवाज उत्पन्न क' रहल छल।

दिनकर बाबू चिकरलाह —पिन्टू, टी.वी. क आवाज कम कर त'।

पिन्टू भनभनायल —बाबूओजी के...। कोन दुनियाँक लोक छथिन... फेर निन्न नै भेलनि दिनकर बाबू केँ। उठि क' पैखाना चलि गेलाह।

फेर शुरू भेल दिनक लेल धारावाहिकक श्रृंखला —किदन-कहाँदन, ई, ओ, अर्र-दर्र... क्षेत्रीय भाषाक फिलिम, फीचर-फिलिम...अनन्त...अनन्त...पत्नी स' दू गो गप्प कर' लेल भरि दिन छटपटाइत रहलाह दिनकर बाबू आ पत्नी अनेक-अनेक ध्यान रखैत, बेटी केँ आज्ञा दैत रहलथिन —'बाबूजी केँ जलखै दहुन, बाबूजी केँ भोजन दहुन, चाह दहुन। जे नियमानुसार हेबाक चाही... दिनकर बाबू बौक छलाह। होइ छलनि —सुख-दुःख बतियाइ ककरो स'। मुदा ककरा स'?

पत्नी एकबेर पुछलथिन —की सोचै छिऐ?

—'यैह कॉलेज, इनभर्सिटी, दरमाहा...'

—'मारु मुँह जरलाहा के। भरिदिन कॉलेज, कॉलेज करैत लोक बताह भ' जायत? किछु होना, नै जाना। अहूँक माथ मे हरदम यैह सब रहैए? —कहैत पत्नी दिनकर बाबू केँ हाथ पकड़ि उठा लेलथिन आ लगभग घिसियबिते टी. वी. लग ल' क' चलि गेलथिन।'

दिनकर बाबू सकपंज भ' क' बैसि गेलाह।

हिन्दी फीचर-फिल्म कनेकाल पहिनहि शुरू भ' चुकल छलैक। किछुए कालक बाद राज बब्बर द्वारा जीनत अमानक बलात्कारक दृश्य अयलैक।

सभ गम्भीर छल। दिनकर बाबू बेटी दिस कनखिया क' तकलनि। ओ प्रेम सँ देखैत छलि। दिनकर बाबू केँ आगू नै बैसल गेलनि आ उठि गेलाह।

पत्नी पुछलथिन —जा, कत' जाइ छिऐ?

ओ संक्षिप्त बजला —'मिटिंग मे' —आ विदा भ' गेलाह —'समय-संकेत'क मिटिंग मे। अन्ततः सामाजिक व्यवस्था-परिवर्त्तनक वृहत-उद्देश्यवला संस्था छिऐ। सबहक सहभागिता हैब उचित छिऐक। आ नवीन बाबू केँ रुचि रहितो छनि —से सोचि हुनका डेरा दिस बढ़ि गेलाह

दिनकर बाबू। खाली देखि लेथिन जे गेला कि छथिए।

नवीन बाबू (कॉलेजक बड़ा बाबू) हिनका देखिते देरी बजला

—'आउ, आउ! कोमहर चललहुँ दिनकर बाबू?'

दिनकर बाबू बजला —कहलहुँ जे रवि छिऐ। कने अपने सँ भेंटो क' ली। किछु गप्प-शप्प करबाक छल। आ साँझ मे 'समय-संकेत'क मिटिंग छै आइ, सेहो कने भेल आयब।

—ओ...ऽ...ऽ...कहि नवीन बाबू चुप भ' गेलथिन।

फेर बजलखिन —आर सब ठीक छै? की सब भ' रहल छै?

—'की हेतै? यूनियन दू फाँक भैए गेल, तखन भी.सी. —रजिस्ट्रार किए सुनत? —बजला ई।'

ता नवीन बाबूक धीयापुता सब बेरा-बेरी कनखिया क' दिनकर बाबू दिस ताक' लगलथिन। ओकरा सब केँ जेना गप्प-शप्प सिनेमा मे विध्न करैत बुझाइ।

एखन इजलास मे ओकील बलात्कारक सबूत माँगि रहल छलैक। डॉ. श्रीराम लागूक डायलॉग चलैत छलैक।

नवीन बाबू 'हँ-हूँ' मे मूड़ी डोला-डोला, चुप्प श्रोता बनल छलाह।

फेर बजला —चाह चलतैक दिनकर बाबू?

दिनकर बाबू केँ भेलनि जेना —ई जाय लेल कहि रहलि छथि। 'कखन जान छूटत'वला भावें।

दिनकर बाबू पुछलथिन —अपने मिटिंग मे नै जेबै की?

—ओह! कत' जायब दिनकर बाबू बौआइ-ढहनाइ ले'? हमरा बुझा गेल? ओ नक्सल-ब्रेनवला सबहक संस्था छिऐ। अपने सब घर-परिवार आ बाल-बच्चावला लोक भेलहुँ। कने व्यवस्थित भ' क' रहहि पड़त। ओत' छौंड़ा-छेबारी सब रहैए। बैसू ने, एतेक नीक सिनेमा छै —इन्साफ का तराजू!

कने कान मे मुँह सटाक' बलजथिन —एह, आगू जे राज बब्बर द्वारा पद्मिनी कोल्हापुरीक बलात्कारक एक दृश्य अछि, से देखहि जोग अछि। राज बब्बरक बहुत प्रशंसा भेलैए बलात्कारक एहेन स्वाभाविक दृश्य देबाक लेल। 'मायापुरी' कहैए, जे देस भरि स' कए टा लड़की ई सिनेमा देखि क' राज बब्बर स' बलात्कार करेबाक इच्छा प्रकट केलक-ए। आ ताहि पर डॉ. श्रीराम लागूक ओकीली जिरह...बैसू ने...

दिनकर बाबू सन्न रहि गेलाह। हुनका नवीन बाबू सँ किन्नहुँ ई आशा नै छलनि। हुनका नवीन बाबू एखन फ्रायडक मनोविकृतिक सिद्धान्तक आ कुंठित सेक्सक ज्वलंत उदाहरण बुझेलखिन। हुनका घृणा भेलनि। ओ उठि गेलाह।

चलिए देलिऐ? —नवीन बाबू पुछलथिन त' 'हँ' कहने बिना ओ सभास्थल दिस डेग बढ़ा देलनि।

नवीन बाबूक पत्नी बजलथिन —माथा चाट'वला आदमी सभ खाली अही कॉलेज मे भरल छै।

त'। सुपर-चाट छथिन गे मम्मी —नवीन बाबूक बेटी बजलनि।

आ फेर सभ ध्यानस्थ भ' डॉ. श्रीराम लागूक तर्क सून' लागल, जे बलात्कार केँ सफलतापूर्वक पावन-प्रेम साबित क' रहल छलाह।

सोम दिन कॉलेज मे दिनकर बाबू चाहलनि जे यूनियनक महासचिव सँ किछु गप्प कयल जाय —अग्रिम संघर्षक रूपरेखाक मादे। बी.एन. झा कर्मचारी-यूनियनक महासचिवक संग-संग विश्वविद्यालयक खेल-समितिक सदस्य आ कॉलेजक प्रतिनिधि सेहो छथि।

दिनकर बाबू महासचिव केँ हुनका सीट पर ऑफिस मे तकलथि। नै भेटलथिन। पता चललनि कॉमन रूम मे छथि। ओमहरे विदा भेलाह।

ढुकला त' बी.एन. झा —की दिनकर बाबू? —कहि सम्बोधित केलखिन आ हिनका ठाढ़ देखि एकटा छात्र केँ कहलथिन —हे, हिनका बैस' दियनु।

छात्र केँ खराबो लगलै, तैयो ओ ठाढ़ भ' क' देख' लागल।

दिनकर बाबू बैसि गेलाह।

एखन स्टेफी ग्राफ आ गैब्रिएला सबातिनीक बीच मे विम्बलडन-टेनिसक महिला फाइनल मैचक मुख्य-अंशक प्रसारण भ' रहल छल।

एकटा बी.एन. झा, गोर दसेक विद्यार्थी।

के खेलक आनन्द लैत छल आ के खेलाड़ीक देहयष्टिक, से कहब कठिन। मुदा सब 'खेल' मे मातल छल। स्वाभाविक छलैक, जे दिनकर बाबू केँ, कहुना सभ बर्दाश्त केलकनि।

—'कोनो खास बात की?' —बी.एन. झा पुछलथिन।

—'हँ, यैह कने यूनियनक मादे किछु गप्प करबाक छल।'

—'अच्छा, अच्छा...'

ता स्टेफी ग्राफक सीना पर गेन्द लागि गेलै। तकरा टी.वी. पर पुनः-पुनः तीन बेर देखाओल गेलैक आ पिचकलहा भाग केँ उभारि-उभारि क' देखाओल गेलैक।

दिनकर बाबूक नजरि झुकि गेलनि। छात्र लोकनि एक-दोसर केँ चुट्टी काट' लगलाह।

आब दिनकर बाबू केँ उक्खी-बिक्खी लाग' लगलनि।

ओ बजला —'तालाबन्दीक जे निर्णय भेल रहै...'

बी.एन. झा हिनका रोकि क' चुप क' देलखिन कारण स्टेफी ग्राफक एकटा कसगर गेन्द केँ, सबातिनी नै उठा सकल रहैक आ सब जोर, स' —'आह! क' उठल रहैक।'

फेर बी.एन. झा टी.वी. मे आँखि गड़ा देलनि।

दिनकर बाबू पाँच मिनटक प्रतीक्षाक उपरान्त बजला —'वेतन ले' अग्रिम की कोना?

अबै छी स्टाफे रूम त' गप्प करब —बाजि बी.एन. झा चेहरा सक्कत क' लेलनि।'

दिनकर बाबू केँ अपगराइन, तामस आ आश्चर्य भेलनि, जे बी.एन. झा ऑफिसक काज छोड़ि टी.वी. देखि सकैत छथि। मुदा दिनकर बाबू स्टाफ-रूमक बदला, कॉमन-रूम मे ई गप्प नै क' सकै छथि!

ओ उठला, तँ हुनका दिस एक बेर सभ विशेष नजरिएँ तकलकनि। एकटा बॉसनुमा विद्यार्थी बी.एन. झा केँ कहलकनि —सर! ...आ आङुरक इशारा सँ माथक 'एस-क्रू' ढील हेबाक बात कहि हँस लागल।

बी.एन. झा मुस्कुरा क' बजला —हँ, थोड़ेक...।

—नै सर, पूरा-पूरी...। आ एकटा ठहक्का बजरि गेल।

मंगल दिन महावीर-जयन्तीक छुट्टी छलैक, कॉलेज बन्द रहैक।

तें दिनकर बाबू भरि दिन डेरा मे रहबा लेल अभिशप्त छलाह। बैसल-बैसल बोर भ' गेलाह आ जानि-बूझि क' कत्तहु नै गेला। गुमसुम-गुमसुम। हँ-हूँ, हँ-हूँ, मात्र।

सभ डेरहि मे छल। क्यो डेरा मे नहि छल। सभ टी.वी. क संग देस-विदेश मे छल। मात्र दिनकर बाबू डेरा मे छलाह। आ सेहो बरन्डे पर छलाह।

पछिला तीन दिनुक घटना सब बेरा-बेरी स्मृति-पटल पर अबैत रहलनि

आ मथनी सँ दिमाग केँ मथैत रहलनि। मोन हौंड़ैत रहलनि।

बैटरी मे पानि पड़ैत रहल, चार्ज होइत रहल, टी.वी. चलैत रहल।

यूजीसीक शैक्षणिक प्रसारण आ सभ तरहक समाचार छोड़ि, बाँकी सभ किछु देखल जाइत रहल।

दिनकर बाबू एमहर सँ ओमहर बरंडे पर कुर्सी-घीचि क' बैस-उठ करैत रहलाह। टहलैत रहलाह ओतनी दूर मे।

पत्नी घर समहार' मे, भानस-भात मे आ फेर धीयापुताक संग देब' मे, व्यस्त छलीह टी.वी. लग।

फेर जड़ भ' गेल शहरी जीवनक स्पन्दनहीनता, सभ सम्बन्धक यांत्रिकता आ शिथिलता पर ध्यान गेलनि। ध्यान कतबो अन्त' बहटारथि, टी.वी. दिस लइए जानि। जखन राति मे दस बजे टी.वी. बन्द केलकनि पिन्टू, तखन जान-मे-जान अयलनि। बाँकी सभ औपचारिक आ यांत्रिक क्रियाकलापक सम्पादन क' सूति रहलाह। अत्यन्त थाकल-थाकल जकाँ।

बुध दिन दिनकर बाबू केँ बुझलो नहि छलनि आ बेटा भाड़ा पर भी. सी.पी. आ तीन टा फार्मूलावला फिलिम आनि क' तैयार। मायक धयल-उसारल पचहत्तरि रुपैया मे। जे माय एकबार बन्द करा देने छलथिन, वेतन नै भेटलाक कारणे, सैह माय बेटा-बेटीक जिद्दक आगू, दू बेर 'मम्मी-मम्मी' पिलीज!' कहला पर निकालि क' द' देलथिन पचहत्तरि रुपैया! शहरी मैथिलानी केँ मायक बदला 'मम्मी' कहि, कोनो बहसल बच्चा कथुक लेल मना सकैए।

दिनकर बाबू प्रश्नात्मक नजरि सँ पत्नी दिस देखलनि, त' बजलथिन—दुनू तेहेन ने जिद्द क' देलक जे...

—'अहाँ सब हमरा घर मे नै रह' देब की? फेर भरि दिन ई ऊल-जलूल ढिसुंग-ढासुंग माथा खराप करत। ई सब बहुत परिकि गेलए सिनेमा पर। ई टी. वी. आब हम... —'दिनकर बाबू तमसेलाह।'

दुनू भाय-बहिन माय दिस टकटक ताक' लागल। 'मम्मी' वला नजरिएँ।

—'आब धीयेपुते त' छिऐ। कते बजैत छिऐ? चुप ने भ' जइयौ!'

दिनकर बाबू केँ टकटकी लागि गेलनि।

पत्नी सुराही सँ एक गिलास पानि आनि क' देलथिन आ कहलथिन—

—'पी लिय', दिमाग ठंढा भ' जायत।'

आन बखत रहितैक, त' ई चौल नीक लगितनि। एखन बेटा-बेटीक

समक्षक ई चौल हुनका अपमानक तीर जकाँ गड़ि गेलनि। मुदा...ओ चुप्पे रहलाह।

भरि दिन तीन टा मसल्लावला सिनेमा भेल। साँझ मे चित्रहारक पश्चात् हिनका प्रति, सम्पूर्ण परिवार केँ दयाभावक संचार भेलैक। तें समाचारक बेर मे, टी.वी. बन्द क' देल गेल आ क्यो पढ़' बैसि गेल, क्यो भानस कर'।

मुदा प्राते भेने फेर सबहक दयाक भण्डार खाली भ' गेलैक आ भरि दिन एक-दिवसीय क्रिकेट-मैच चलैत रहल। दिनकर बाबू कॉलेज गेलाह त' पाँच बजे डेरा घुरबाक बजाय, ओहिना सड़क पर एमहर-ओमहर करए लगला। निरुद्देश्य।

मोन पड़लनि —'एखन विश्व-कप फाइनल मैचक अन्तिम ओभर चलैत हेतैक। उन्माद चरम-सीमा पर हेतैक। तें सड़क एकदम सँ सुनसान छल आ पूरा शहर मे शमशानी चुप्पी व्याप्त छल, जेना नादिर शाहक भय सँ लोक अपना-अपना घर मे बन्द हो।'

सोचलनि दिनकर बाबू —'एखन जँ ककरो सड़क पर दुर्घटना भ' जाइ —'मानि लिय' हमरे भ' जाय, त' क्यो अस्पतालो पहुँचौनिहार नै। ठामहि पर जै सियाराम... ता सड़कक कातक घर सभ सँ कसगर हल्ला भेल —भरिसक विजयक खुशी मे आ दिनकर बाबूक आगू मे सड़क पर एकटा कसगर बम-फटक्का फूटल।'

दिनकर बाबू दू धाप पाछू हँटलाह, तें बाँचि गेलाह। अन्यथा...

हुनकर मोन धुआँ मे औनाय लगलनि।

न' बजे राति मे डेरा घूमि अयबाक अलावा, आर कोनो विकल्प नै छलनि।

शुक्रो दिन ठीक तहिना बितलनि। सड़कक निरीक्षणे करब निरापद बुझेलनि —'दस बजे राति धरि। डेरा घूरि भोजन क' ओछाइन पकड़' गेलाह त' पत्नी पुछलथिन —'एकटा बात पुछू?'

ई गरदनि हिलौलनि, त' ओ पुछलथिन —'अहाँ एना अशान्त, गुमसुम सन किए रहै छी हरदम?'

दिनकर बाबूक मोन कहलकनि —'अहाँ केँ कारण सुनि नीक नै लागत।'

पत्नी गुम देखि, फेर खोरचाल नै केलखिन।

दू मिनटक बाद पत्नी उछलि क' हिनका लटपटा गेलथिन आ बजलखिन—'यौ एखन एकटा रातिवला अंग्रेजी फिलिम देखब, दुइये बेकती?

दिनकर बाबूक देह टी.वी.क आदंक सँ सर्द भ' गेलनि।

जा ओ किछु उपयुक्त जवाब सोचथि, पत्नी टी.वी. खोलि देलथिन। दिनकर बाबू करोट फेरि ओमहर मुँह घुमा क' सूति रहलाह। पत्नी कतेक अंग्रेजी बुझैत हेथिन, से ओ बुझैत रहथि। मुदा फोटो देखबाक बलवती इच्छा केँ रोकब दिनकर बाबूक पत्नी लेल असंभव छल।

ओ दिनकर बाबू केँ दू-चारि बेर गुदगुदी लगौलनि। टी.वी. दिस घुमेबाक प्रयास केलनि। मुदा हिनका आँखि मुनने आ कोनो प्रभाव नै पड़ैत देखि, फेर छोड़ि देलथिन, जे दिन भरिक थाकल छथिन। आ अपने देख' लगली असगरे।

किछु कालक बाद एकटा बेड-रूमक दृश्य मे, हिरो-हिरोइनिक एक-एक क' कपड़ा खोल' लागल।

पत्नी झिकझोरि क' दिनकर बाबू केँ उठौलथिन —'यौ-यौ, देखिऔ ने कनिये। देखिऔ ने केना-केना करै छै?'

दिनकर बाबू उनटि क' देखलनि —'सुनयना आ पिन्टू नङटे एक दोसर सँ गुत्थम-गुत्था भेल छल, गुदगुदी लगा रहल छल, खिलखिला रहल छल।'

दिनकर बाबूक आँखि मे खून उतरि अयलनि।

ओ जोर सँ चिचिएलाह —सुनयना!

•

1992 ई.

नागदेस मे अयनाक व्यवसाय

बबेक अमल सँ एत' साँपक बास होअ' लागल छल।

बाबालोकनि उजरा नाग सभ केँ भगौने छलाह देस सँ। तैओ फेर देसी नाग सबहक शिकार होअय' लागल।

बाबा सुपारीक कतरन चिबबैत बजैत छलाह —'ई नागडीह थिक। ई गामे नागग्राम थिक।'

पाछू काका आ बाबू सेहो बाजथि —'ई नागडीह छी। अइ घराड़ी पर खाली साँपे-साँप। चतुर्माष्या मे के कहय, सालो भरि नाग देवता सँ साक्षात् होइत रहत।'

हमरा ओहिना मोन अछि।

ताहि जबाना मे, हम बड्ड बच्चा रही। मुदा बच्चा रही बीसमे शताब्दीक, तेँ ततबा होसगर रही। साँपक अर्थ हम नीक जकाँ जनिते रही, से दाबी हम नहि करब। मुदा एतबा जरूर कहब जे, साँप के हमर चेतना कोनो नीक जीव कहियो नहि मानलक। ओकरा प्रति भय, आदंक आ दुश्मनीक भाव स्वाभाविक रूपेँ आदमीक मोन मे आदिम युग सँ रहैत अयलैक अछि। से भावना पोसब आवश्यक छैक —'से हम नान्हिए टा सँ बुझैत रही। हमरा विषहीनो साँपक प्रति दयाभावक संचार कहियो नहि भेलए। छोट रही, तँ बाबा हमरा साँप-समाजक प्रति सहज आ अभ्यस्त बनेबाक प्रयासक क्रममे ओकर अस्तित्वक औचित्य-स्थापन हेतु रंग-बिरंगक तर्क वा कुतर्कक जाल बुनबाक प्रयास केने रहथि, मुदा हम बेर-बेर हुनकर सायास बूनल भ्रमजाल केँ 'अहाँ हमरा ठकै छी बाबा' —'कहि-कहि ध्वंस क' देल करी। हमरा ई जाल फाड़बा मे, बाबाक जाल बुनबा सँ बेसी आनन्द आबय। बाबा हमर प्रहार के कहियो नहि रोकि सकलाह।'

साँपक सन्दर्भ मे बाबा द्वारा देल गेल अनेक तरहक तर्क हमरा मानस-पटल पर कोनो क्षीणो टा छाप नहि छोड़ि सकल। आ बाबा दूध मे पानि मिला क' हलुआइक हाथे बेचैत-बेचैत एहि दुनियाँ सँ पहाप्रयाण क' गेलाह —'जहिया नारक टाल सँ एक पाँज नार घिचैत काल एकटा गहुमनक पोआ छू देलकनि। कत्ता बेर चाटी चलल, जोड़ीक-जोड़ी विषहाराक मंत्र पढ़ल गेल। मोती बजाओल गेल। मुदा साँप नारक टाल सँ निकलि बाबाक हाथ मे हबक्का मारि, पुनः खून सँ जहर नहि चुसलक। आ बाबाक

महाप्रयाण भइये टा गेल।'

बाबाक माँछ-मासुक पराते एकटा आर साँप-घटना भेल। बाबाक जिविते मे काका एकदिन फरीकेक खरहोड़ि सँ दू सोरेह खढ़ राता-राती काटि लेने रहथिन। फरीक कलकत्ता कमाइत छलाह, तेँ काका केँ सुतरि आ पचि गेलनि। काका चारू अलंग घर छाड़ि लेलनि। आङन चकमका गेलैक आ बाबाक मुस्की मे सौन्दर्य-बोध, कोजगरा रातिक पचीसीक कौड़ी जकाँ छिड़िया गेल रहनि।

मुदा एक्के भदबारिक बाद खढ़ पुरना गेलैक। आ काका केँ तहिया बुझेलनि जे ओ अनका खरहोड़ि सँ खढ़ नहि, साँपे-साँप आनि क' घर छाड़ि लेलनि अछि—'जहिया ओ एकटा कदीमा तोड़' चार पर चढ़लाह त' तीन टा साँखरक पोआ आ अंडा गुज-गुज करैत बुझेलनि।' काका चिचिया क' —'भैया हौ भैया, साँप' बजलाह आ सीढ़ी सँ धडफड़ा क' उतरलाह।'

रच्छ रहलनि, जे साँखरक बुढ़बा-बुढ़िया सब सँ भेंट नहि भेलनि। अन्यथा...

लोक कहलकनि —'नै मारहक। ई नागडीह थिकै। साँप मे लक्ष्मीक बास होइ छै।'

काका कने डेरा गेलाह। पोआ गुज सँ उठल छलनि, गुदगुदी लागल छलनि। गुदगुदीक आदंक सँ डेरा गेल छलाह।

मुदा काका डेरेलाह नहि, वस्तुतः।

ओ अनकर मसुरी-खेसारी केँ घास बूझि, माल-जाल लेल कटैत रहलाह आ आड़ि काटि-काटि क' खेतक सिमान बढ़बैत रहलाह। हम कने-कने सज्ञान भेल जाइत रही, तेँ आश्चर्य लागल करय, जे एतेकरास घटना भेलाक बादो हिनका डर किएक नहि भ' रहल छनि, साँप-जाति सँ? हमरा पूरा गाम मे असंख्य बाबा डोलक दूध मे कल, डबरा आ इनारक साँप छोड़ैत बुझाथि। असंख्य काका साँप सँ खेलौड़ करैत बुझाथि। हमरा हुनकालोकनिक ई बात— 'जे ई नागडीह थिक' -अपूर्ण बुझाय। वस्तुतः हमरा विचारे अपन सम्पूर्ण गामे नागग्राम थिक। पूरा गामक अधिकांश लोक तरह-तरहक साँपक गछाड़ मे पड़ल अछि। अन्ततः साँप एकटा घृणित अ-जाति थिक, से लोक पता नहि, अनुभव करए सँ, किऐक हिचकिचाइत अछि?'

आब देखिऔ ने घटनाक्रम किछु एना मोड़ लेलकैक, जे काका हमरा सभ सँ भिन्न भ' गेलथिन। माय-काकी दुनू दियादनी मे बहुत झगड़ा भेल रहैक। मानसिक स्तर पर दुनू-दुनू पर लागल रहलीह आ रहलाह। एक दियादनी

अपन बेटी केँ सिखा क' पठाबथि –'जो काकीक बाड़ी सँ भट्टा, खीरा, मेरचाइ तोड़ि ला। ओ भाँटा भुजिया जखन थाड़ी मे परसल जाय, त' हमरा बुझाय, जेना लोक अगबे तेलिया-साँप केँ भूजि क' खा रहल अछि। हमरा जीह औकियाय लागय। मोन पचपचाय लागय। साग मे मेरचाइ नहि, तेलिए साँप बुलैत बुझाय।'

मुदा ओ सब बूझथि –'ई नागडीह थिक। तेँ एकटा विशेष स्वाद सब किछु मे बुझाइनि। ओ सँपाह स्वाद हमरा मुँह मे भरि-भरि कुर्रा पानि अनैत रहल, जेना पेट मे चाली भ' गेल हो। आ ओ सब भने-निके सँपाह-स्वाद केँ, चटकार ल' ल' खाइत रहलाह।'

एकबेर एना भेलैक जे हमर एकटा बहिन फूलचोरनी भ' गेलि। हेडमास्टर साहेब अपन दलानक आगू मे तरह-तरहक फूल लगौने छलाह। ओ फूल सब हुनकर जीवन आ मरण छलनि। बड़ खर्चा, बहुत परिश्रम केने छलाह। हरदम खुरपीए हाथें रहैत छलाह। आ से सगर टोलक धीयापुता तीन बजे भोरे मे चोरा क' तोड़ि लिअय। हमर बाबू शालिग्राम पूजैत छलाह। हमर बहिन परिकि गेल छलि। अधरतिए मे ढाठ मे लागल काँट केँ छोड़ा क' जुमि जाय, हेडमास्टर सैहैबक दलान मे आ दोहारा तीरा, कनैल, गेना, अड़हुल आदि तोड़ि गाछ केँ सुन्न क' देल करैक। फूल आ पोथीक चोरि, चोरि नहि थिक। हमरा परिवार मे से बेरमबेर चर्च भेल छल। तेँ ओकर चोरि केँ प्रशंसनीय नजरि सँ देखल जाइत छल, कारण, चोरिक उद्देश्य शालिग्राम-पूजन छल। आ बाबू खूब प्रेम सँ ओहि फूल सँ पूजा कयल करथि।

हमर मोन नहि मानय। हेडमास्टर सैहैब दुःख अवसाद आ फूल चोरिक दुश्चिन्ता मे रहैत छलाह। चोरि अन्ततः चोरिये थिक। खाहे कथुक हो। हेडमास्टर सैहैबक आत्मिक कष्ट सँ हम बेचैन रही। एहि क्रम मे हमरा बाबाक कहल बात सब मोन पड़ि जाय जे –'कनैल फूलक गाछ पर सुगबा साँप रहै छै। सुगबा साँप लोकक माथे मे काटि लैत छै। केस ठाढ़ भ' जाइ छै, ठोर स्याह भ' जाइ छै, देह ऐंठि जाइ छै, मुँह सँ गओज निकल' लगै छै। तहिना तगबा साँप लोक मे लेपटा जाइ छै। ओ तागक लच्छी जकाँ पड़ल रहैत छै। लोक जँ धोखो सँ डाँड़ मे खोंसि लेलक तँ तगबा चुट्टी जकाँ काट' लगै छै आ ओकर मीठ-मीठ जहर लोकक अधडरेर सँ उपरे सुन्न करए लगै छै। लोक गस खा क' खसि पड़ै छै।'

हम ई सब बात सँ बहिन केँ डरेबाक प्रयास केलिऐक, जाहि सँ ओ फूलक चोरि सँ विमुख भ' जाय। मुदा बहिन एहि बात सभ केँ सुगबा आ

तगबा साँप बना क' उड़ा देलक। ओ फूलक चोरि केँ चोरि नहि मानलक, कारण बाबा वाक्यम् प्रमाणम। ओ हमरा बात पर एकदम्मे ध्यान नहि देलक।

बाबू जखन शालिग्रामक ऊपर मे ओ फूल सब चढ़ाब' लागथि, तँ तगबा साँप शालिग्राम केँ डँसि लैत छलनि। हुनकर देह मे उज्जर-उज्जर धारी बनि जाइनि, जकरा बाबू भगवतजन्य विशेषता मानथि। विशेष तरहक पाथरक शालिग्राम-जन्य योग्यता मानथि। जेना तगबा साँप शालिग्रामक देह मे लेपटा गेल होइनि। हमरा डर लागय, कहियो बाबू लहना आ सूदिभरना वला टाका बूझि, जँ तगबा साँपक लच्छी केँ डाँड़ मे खोंसि लेताह, तँ की हेतैक। हम पितृहीन भ' जायब। ओ लच्छी हुनका सूदिक टाका जकाँ कट-कट कटैत-कटैत समस्त देह केँ म्हुरा देतनि। तहिया ने कोनो ओझा-गुणी रहतै गाम मे आ ने अस्पताल मे सर्पदंशवला टीका। तखन? तखन?... आ हमर देह सिहरि जाय। रोइयाँ काँट-काँट भ' जाय। हम जोर-जोर सँ चिचियाय लागी —'बाबू यौ साँप। ओ तागक लच्छी नहि, साँप थिक। ओकरा चीन्हू बाबू। ओ कए पीढ़ीक संस्कार केँ चाटि लेत...।'

बाबू हमरा माथा हाथ देथि —'गायत्री पढ़ि-पढ़ि क'।' हुनकर माथाहाथ देब हमरा सर्प-संस्कार सँ अभिभूत क' देत—'से ओ नहि जानथि।' ओ सब सर्प-संस्कारक संवाहक बनल रहलाह। हमरा जीवन मे बेर-बेर सर्प-दृश्य अबैत रहल। नागडीहक इंची-इंची दुनियाँ भरिक साँप सँ गज-गज करैत रहल, जेना कोनो खत्ता केँ उपछि देला पर ढोंढ़-मछगिद्दी सँ गज-गज करैत हो। क्रमशः गामक सब डीह नागडीह बनैत गेल आ सर्प-संस्कार जन-जन केँ ग्रसैत गेल।

एकबेर एना भेलैक, जे हमर मैट्रिक परीक्षा शुरू भेल, तँ काका केँ बाबू केन्द्र पर पठौलथिन, जेना कोनो डाइनि भुतसप्पा केँ पठौने हो। हमरा सीट पर खिड़की सँ नमरल काकाक हाथ ओहिना नमरय जेना कोनो करेत बरेड़ी सँ नमरैत हो। हम चौंकि-चौंकि जाइ। काका चिट-पुर्जी मे करेतक केचुआ मचोड़ि-सचोड़ि क' लेपटा क' डेस्क पर फेकथि। हुनका डाँड़ पर पाछू सँ सिपाहीक पोसल लाठी ओहिना बजरनि जेना कोनो अधसरक डाँड़ पर कोनो पोसुआ मोछैल पहलमानक लाठी। काका सिपाही केँ करेतक एकटा पोआ ध ड़ा देथि। मुदा काका ठीक कोनो साँपक लुतुक जकाँ डँसनाइ नै छोड़लनि। हुनकर केचुआवला चिट केँ झमाड़ि क' हम दूर फेकी, तैओ ओ आँखि गुराड़ि-गुराड़ि बेर-बेर हमरा दिस खिड़की सँ केंचुआ फेकथि। हम अपना सँ दूर-दूर फेकी आ कएटा लड़की केंचुआ उठा-उठा अपन-अपन बेलाउज आ डाँड़

मे खोंसि लिअय। गार्ड सब अपन मुँह घुमा-घुमा मुसुकि-मुसुकि पान गलोठ' लागय। हमरा ई सोचि-सोचि क' रोमांच भ' उठय, जे कहीं केंचुआ मे साँपक बच्चे नुकायल हो, तँ ओकरा सबहक छाती मे डँसि नहि लेतैक? फेर केंचुआ तँ केंचुआ थिकैक। ओकरा केना डाँड़ आ बेलाउज मे खोंसने छै? देहो ने सिहरै छै? फेर हम अपन कॉपी मे साँपक विरुद्ध निबंध लिख' लागी।

जखन हम परीक्षा समाप्त क' गाम घुरलहुँ, काका हमरा बाबूक समक्ष बहुत गञ्जन कयलनि, कारण, हम हुनका द्वारा फेकल एकोटा केंचुआ स्वीकार नहि केने रहियनि। हमरा बड़ कोनादन लगैत रहल। हम अपना सामर्थ्य भरि प्रतिवाद करबाक चेष्टा कयलहुँ। मुदा हम नितान्त असगर रही। बाबू, माय, काका, बहिन सब मेल केने छलाह। हम ठीक सँ भोजनो नहि केलहुँ आ अपगराइन सँ उठि गेलहुँ। दलान मे सेजट कयल छल, ततहि काका संग हम सुतैत रही। ततहि जा पड़ि रहलहुँ।

राति भरि हम बिसनाइत रहलौं। साँपे-साँपक सपना-पर-सपना अबैत रहल। बीच राति मे निन्न टूटल, तँ ठेङा ल' क' लगही करए उठलहुँ। लगही करैत किछु शंका भेल। 'काका यौ साँप! काका यौ साँप!' —'चिचिएला पर काका दौड़लाह' —'कहाँ हौ? कहाँ हौ?'

हम काकाक छाह केँ तड़ातड़ि साँप बूझि लाठी सँ पीट' लगलहुँ। —'ई की करै छ'? ई की करै छ'? कहाँ छै साँप एत'?' —काका बजैत पाछू हँटैत जाथि आ हम हुनका छाह केँ पिटैत, लाठी पटकैत, आगू बढ़ल जाइ। काका डर सँ लगभग भागिये रहल छलाह आ हम खेहारिते रहलहुँ। अन्ततः बाबू सूतल सँ उठाओल गेलाह आ कए गोटे मिलि क' हमर लाठी पकड़ि नियंत्रित केलनि।'

हमरा न' बजे भोर मे निन्न टूटल तँ आश्चर्य लागल, काका केँ देखि क'। वस्तुतः रातिक साँप मे एहने चेहरा सटल छल आ देह साँपक छल। रतुका साँप मे बहिनिक चेहरा सटल छल आ देह साँपक छलैक। जेना मेला मे बाबा एकबेर देखबैत कहने रहथि —'ई नागचम्पा छिऐक।' मुँह लड़कीक आ देह साँपक। फेर परीक्षा-भवनक अनेक-अनेक लड़की, जे अपन समीज आ बेलाउज मे केंचुआ खोंसने छलि, से सब नागचम्पाक रूप मे सामने आयलि। असंख्य-असंख्य साँप आ नागचम्पाक छाया देखि, हम लाठीक संधान करए लागल रही। हमरा बीटक-बीट बाँस केँ काटि पाँजक-पाँज, बोझक-बोझ लाठी बनयबाक बेगरताक अनुभव भेल रहय।

एहि घटनाक बेसी दिन भेलो नहि रहय, कि एकदिन बाबू हमरा सरकारी नोकरी लेल अपस्याँत भ' क' दस हजार साँपक गड्डी, घूस द' एलथिन एगो बड़का हाकिम केँ। तखन हमर नागडीह साँपक महाकुंभ भ' गेल आ हाकिमवला समस्त शहर सँपा गेल। गली-कुच्ची पर्यन्त मे बाबूक गड्डी सँ निकलि-निकलि साँप बूल' लागल छल। हाकिमक अलमारी मे साँपक गड्डी बन्न नहि रहि सकल। शहर साँपमय भ' गेल आ तकर आयोजक वा संयोजक भेलाह हमर बाबू, जिनकर चालि हमरा फुटली आँखिए नहि सोहाइत छल।

एक सालक बाद आर दू टा घटना भेलैक।

पहिल घटना हमरा सँ सम्बद्ध छल आ दोसर घटना हमरा बहिनि सँ।

पहिल तँ ई छल, जे हमर घटकगण साठि हजार मे विवाह तय क' गेलाह। सगुन जहिया उठबाक छल, हमरा गोरलगाइ विधिक उपरान्त साँप सँ भरल चङेरा केँ उठयबा लेल कहल गेल। हम स्वभावतः अस्वीकार क' देल। हमरा बुझायल जेना असंख्य साँप थकियायल हो। बाबूक विचार मे ई सर्वमान्य अछि जे बामी माँछ छी तँ मोटा-मोटी साँपे, मुदा इहो सर्वज्ञात अछि जे लोक ओकरा खाइते अछि। ई सर्वमान्य सामाजिक स्वीकृति बामी केँ जाति-प्रजाति, परिवर्त्तन आ सर्प-संस्कार सँ मुक्त क' दैत अछि। मुदा ई हुनकर विचार छल। हमरा लेल तँ बामी विषधर आ अन्य विषहीन प्रजाति, सभ छी तँ साँपे। चोरा क' फूल तोड़ब होइ वा चोरि सँ परीक्षा देब, पाइ गनायब होइ वा अनकर जजात क्षति करब —'थिक तँ सर्प संस्कारगत क्रियाकलापे। कोनो साँपक मूड़ी विषदन्त आ विषकुण्ड काटि क' हटा देलाक उपरान्त, ओ बामीए माँछ भ' जाइ छै।'

तेँ हम चङेरा सँ दूर हट' लगलहुँ आ काका-बाबू हमर गट्टा पकड़ि चङेरा केँ उठेबा लेल बाध्य करए लगलाह। घटकगण अवाक् छलाह, जे ई की भ' रहल छै? जखन हमर प्राण अवग्रह मे पड़ि गेल —'हम लगे मे ओङठा क' राखल काका हाथक लाठी उठा अनधुन भाँज' लगलहुँ। हमरा होस नहि रहल जे ककरा कान फुटलै, ककरा कपार फुटलैक? छगुआ-पटुआ उठा देलिऐक। अन्ततः माय केँ आगू क' क' हमरा नियंत्रित कयल गेल आ हमरा रस्सा ल' क' हाथ-पयर बान्हि देल गेल। कन्यागत महराज हमरा मिर्गीक रोगी बूझि, साँपवला चङेरा समेटि विदा भेलाह। हमर बिआह बिआहे रहि गेल। तकरा बाद हमरा मोटा-मोटी सभ बताह बूझि, मुक्त क' देलक। लग आब' सँ लोक डेराय लागल।'

आ दोसर घटना जे कहल, से ई भेल, जे हमरे परीक्षा जकाँ हमरा

बहिनिक मैट्रिक परीक्षा छल। ओ जहिया परीक्षा मे बैस' लेल केन्द्र पर जाय लागल, तँ ओकर गुलबिया ओढ़नीक त'र मे हमरा साँपक उजरा केंचुआ भरल बुझायल। हमरा ईहो बुझायल, जेना ओकर डाँड़ मे डोराडरि आ डरकस जकाँ केंचुआ बान्हल हो।

हम ओकरा कहलिऐक —'गे बहिन! तोरा ओढ़नी त'र मे साँपक केंचुआ छौ। तोँ सबटा केंचुआ निकालि क' एतहि फेकि दही। अन्यथा ई सब तोहर जीवन केँ डँसि क' फोंक आ झाँझड़ क' देतौक। तोंहू नागचम्पा बनि जयबें।'

मुदा ओ हमर बात नहि मानलक। नहिएँ मानलक।

अन्ततः हम ओकर सभटा केंचुआ निकालि फेकि देलिऐक। ओकड़ डाँड़ सँ केंचुआ निकालबाक उपक्रम पुनः करिते रहिऐक, कि माय हमरा अङना मे राखल आमक चेरा सँ डेङब' लागलि आ मारैत-मारैत अधमीरुत क' देलक। हमर बहिन हबोढकार कान' लागलि आ बाबू अङना मे मथाहाथ ध' बैसि रहलाह।

जखन मायक हाथ पकड़ि क' सौंसे टोलक लोक, हमरा मारि-मुक्त क' देलक, हम दौड़ल घर गेलहुँ। दुनू हाथे अयना उठा क' अनलहुँ आ बहिनिक मुँहक आगू मे राखि कहलिऐक —'ई ल' ले बहिन आ परीक्षा-केन्द्र पर नेने जो। हरदम अपना हाथ मे रखिहेँ। जखन-जखन तोरा दिस केंचुआ ससर' लगौक, तोँ ओकरा दिस अयना देखा दिहैंक। साँप शीशा पर नहि चलि सकैए।'

बहिन हमरा दिस टक-टक ताक' लागलि।

तहिया सँ, हम अपना देस भरि मे, जतय लोक द्वारा साँपक नाम सुनैत देरी, आइ-काल्हि आन्हर आ सम्मोहित भ' गेल करैत अछि, घूमि-घूमि क' अयना बेचि रहल छी।

•

1992 ई.

भूआ

उमा कें बच्चे स' भूआ स' बहुत डर लगैत छलैक। ओकरा अपन भाइये कटकी पर भूआ उठा क' लग आनि क' डेरबैत छलै— 'उमा भूआ. ..ऽ...' तँ ओ कानैत, किकियाइत, बेहोश भ' जाइत छलि आ दाँती-चनरा पर्यन्त लाग' लगैत छलैक।

बढ़ैत वयसक मोताबिक ओकर बाल-भय दूर नहि भेलैक आ ओ मैट्रिक, आइ.एस.सी केलाक बावजूदो, भूआक मामिला मे ओहिनाक-ओहिना रहल। बच्चे जकाँ डेराइत। ओकर माँ-पापाजी ओकर तीव्रगति सँ बढ़ैत देह पर बेसी चिन्तित छलथिन —'परीक्षाक तैयारी पर कम।'

बाबूजी तैयारीक सभ व्यवस्था क' देलथिन। गाइड कीनि देलथिन, कोचिंग आ अन्य सभ व्यवस्था क' देलथिन। मुदा...

मुदा सौराठ सेहो जाय लगलथिन। गाम-घर सेहो दौड़' लगलथिन, जे उमा कें फुटलियो आँखिएँ सोहावित्त नै छलैक।

उमा अपन क्रोध आ विचार माँ-पापाजी पर कहियो उजागर करितो छलत' ओकर 'नेनपन' आ 'छिड़िएनाइ' मानि, हँसि क' टारि देल जाइत छलै। ओ सब जमा-पूँजीक हिसाब आ विवाह धरिक खर्च जोड़' लगैत छलथिन।

उमा खौंझा क' अपना कोठली चलि जाइत छल। आ सोच' लागय —'प्रकृति ततेक पैघ अन्याय नै केने छै नारी पर, जतेक पैघ पुरुष आ ओकर समाज!

फेर उमा असघनी पर टाङल अपन कपड़ा सभ कें निंघारि-निंघारि क' ताक' लगैत छल, जे कहीं कतौ भूआ त' ने कपड़ा मे नुका गेल अछि?

फेर आश्वस्त भ' किताबी-दुनियाँ मे तल्लीन भ' जाय।

एकदिन गाम स' ओकर नाना आ मामा एलखिन। ओ गोड़ लगलकनि, त' हँसि क' दोसरे आँखि सँ देख' लगलथिन।

उमा कें भेलैक, जेना ओ मुनिगाक गाछ हो आ नाना-मामाक आँखि स' ओलतीक पिलुआ जकाँ भूआ झड़ि-झड़ि ओकर सौंसे देह मे सोहरि गेल हो। ओ लंक ल' क' कोठली भागल आ ड्रेसिंग-टेबुलक आइना मे कोठली बन्द क' क'

अपना-आप कें देख' लागल, जे कहीं भूआ त' नै...

राति मे ओ तरह-तरह के सपना देखलक। ओ डॉक्टर बनि गेल-ए। गरदनि मे आला लटकल छै। दवाइ लीखि रहल-ए। भीड़ लागल छै रोगीक।

मुदा ई की? नाना-मामा, माँ-पापाजी —'सब हजारो-हजार भूआ चारू भाग स' ओकरा दिस फेकि रहल छथिन। भैया कटकी पर भूआ चढ़ा क' ओकरा लग आबि-आबि डेरा रहल छै।' ओ चिचिया उठल —'माँ! भूआ....ऽ...ऽ...'

माँ ओकरा देह झिकझोड़ि क' उठब' लगलै।

प्रात भेने उमा फार्म भरलक मेडिकलवला। ओकर सपना हिलोर मारैत रहलै। ओ रहि-रहि क' अपना देह स' भूआ झाड़ि उठय।

एकटा रेड-क्रॉसवला ईसा मसीहक सूली अपना गरदनि मे लटका लेने छल, जे ओकर छातीक बीचोबीच लटकल चमचम करैत छलै। माँ द्वारा गढ़ा देल गेल सोनाक चेन्ह आ लॉकेट एक दिन नै रखलक। आ स्टीलवला क्रॉस लटकेने छलि शान सँ।

माँ ओकरा देबारने रहैक। मुदा 'माँ किच्छु नै बूझै छै' —'से सोचि ओ मुसकिया क' अनठा देने रहय।'

उमाक महत्वाकांक्षा ओकरा दिन-राति अपना तैयारीक निसाँ मे मता देने रहैक। ता उमाक पितिऔत बहिनिक विवाहक खबरि अयलैक।

गाम गेल त' बुझेलैक, जेना सौंसे गाम भूए-भूआ फड़ि गेल होइ। पटुए-पटुआ। भूए-भूआ। आश्चर्य!

एकटा प्रोफेसर सैहैबक दुलारू आ बुझनुक बेटी मानलि जाइत उमा आब सभतरि एकटा दोसरे नजरि स' देखल जाइत छलि। ओकरा छगुन्ता लगैत छलैक —'समाजक आँखि अन्ततः की तकैत रहै छै, ओकरा देह मे?'

समाजक आँखि मे उमा स्नेह आ उत्साह तकैत छल। ओकरा खाली भूआ भेटैत छलै। विचित्र बात! सबके अपना रुचि आ आकांक्षा पूर्ण करबाक नैसर्गिक अधिकार छै। मात्र देहधर्म कें सन्तुष्ट करबे टा समाजक लक्ष्य नै भ' सकै छै।

उमा सोचि-सोचि क' बेहाल होइत रहल, पूरा काज भरि। ओकरा पितिऔत बहिनिक वर, जे एम.ए. मे पढ़ैत छलखिन —'सेहो उमा सँ भूएवला गप्प केलखिन। उमा कें हुनकर एम.ए. पर आश्चर्य लगलै!

आ एकाँत पाबि उमा ओइ बहिन कें पुछिए देलकै —'गे रमा, तोरा

भूआ स' डर नै लगै छौ?'

रमा हँस' लगलै –'तोरा एखन ई की फुरा गेलौ उमा? कहाँ छै एको टा भूआ? सबके सब पर, तोरा खाली भूए पर ध्यान छौ?'

उमा कहलकै –'सौंसे दुनियाँ भूए-भूआ छै, तोरा देखाइते ने छौ?' ओझाजीक कुर्त्ताक दुनू जेबी मे भूआ भरल छनि –'से नै देखलही?' पटुआक खेत, मुनिगाक गाछ, जीमरक गाछ –सबठाँ त' भूए छै। मामा-नाना-पापाजी-काकाजी-काकीमाँ –सभ त' भूए पोसने छथिन अपना मोन मे। तोरा लेल, हमरा लेल, सगर दुनियाँक लड़की लेल। तों केना ने देखै छिही? तोहर जे बरियाती आयल छलौ –से सब अपना-अपना बैग मे, सूटकेस मे भूए भरि-भरि अनने छलौ ने?

–जो, तोहर बात हम नै बूझै छिऔ। तों बताहि जकाँ किए बजै छिही? तोरो पटना-कॉलेजक छौंड़ी सबहक हावा-पानि लागल छौ। हम की जान' गेलिऐ बात? –रमा बजलै।

तै पर उमा कहलकै –गे रमा, भूआ स' डेरा। ई जीवन भरि उग्रास नै होअ' देतौ। सौंसे समाज अपना सब ले' भूए पोसने छौ। लड़ि क' मनुक्ख बन। घर मे बन्द भ' क' जीवन नै बिता।

–माय बजबैए, अबै छी –कहि अचानक रमा चलि गेलै आ उमाक बात मुँहे मे रहि गेलैक। ओकर मोन अपरतीभ सनक भ' गेलै जे रमा ठीक स' गप्पो नै सुनलक।

ओ अपना माँ लग गेल आ बाजल –माँ गे, रमा स' हम गप्प कर' गेलिऐ, से ओ ठीक स' गप्पो नै केलकै।

माँ बजलै –एखन ओकर नव विआह भेलैए। गाम-घरक कनियाँ-वर अपने बड़ बुझै-सुझै छै, तों की कहबिही ओकरा? एखन कोबर मे बैसतै, कि तोरा स' गप्प करतौ?

एकटा टोलाक भाउजि हँसि क' उमा स' चौल केलखिन –की गप्प कर' गेल छलिऐन दाइ, रमा स'?

–भूआवला बात। –रमा बाजल।

–भूआवला बात? गै माय, ई की भेलै? अकचका क' बजलथिन ओ।

उमा सोच' लागल –की हेतै नारीक जीवन हौ दैव? जकरा भूआक डर नै होइ छै, जे भूआ के नै चिन्है छै आ उनटे हमरे पर हँसै छै! बाप-रे-बाप!

उमा अपन घर जाक' केमेस्ट्रीवला' किताब देख' लागल।

प्रात भेने एकटा सामान्य आ विशेष घटना भेलैक।

उमा भिनसरुका चाह पिबैत छल। कि सीमा बहिनिक वर अचानक पाछू स' कटकी पर एकटा भूआ उठौने एलखिन आ उमाक ओढ़नी पर राखि देलखिन। उमाक आदंक उड़ि गेलैक आ तड़ाक बजरा खसल। पहिने त' लोक हँसलै। मुदा उमा कें दाँती लागल देखि, सब मुँह पर पानि छीट' दौड़लै, दाँती छोड़ाब' दौड़लै। उमाक माँ पंखा हौंक' लगली। बहिनोइक मोन दोसरे रंग भ' गेलनि। ई रंग मे भंग भ' जेतै, से आशा नै छलनि हुनका। हुनका रमा ई चौल सिखा क' पठौने रहनि —से लोक बाद मे बुझलक।

गोर रत-रत उमा। कुम्मरि-सुन्नरि। सौन्दर्यक प्रतिमान। सीकीक वान मारने खून बन्न द' आबि जायवला, श्रीखण्ड चानन सन काया। आ ताहि उमा कें ई की भ' जाइ छै? सब चिन्ता करैत छल।

राति भरि उमा बिसनाइत रहल —माँ गे माँ! रमा के भूआ लागि गेलै गे माँ! आब की हेतै गे माँ?

प्रात भेने उमाक माँ अपना दियादनी कें किछु कनफुसकी क' उमा कें ल' क' पटना विदा भ' गेली। हुनका गाम मे रहब ठीक नै बुझेलनि। ओहिना लोक गुलगुल- फुसफुस कर' लागल छल, जे फल्लां बेमारी छै, त' चिल्लां बेमारी छै। सतरहम बीत गेलै, ओकर बताड़ी सबके बच्चो भेलै। आ उमाक माँ थोपि क' रखने छथि, त' भूआ स' डर नै हेतै? आदि...आदि...

उमाक माँ कें प्रोफेसर सैहैब पर बड्ड तामस उठलनि। ओ ठीक स' ध्यान नै देलखिन, तें ई शुद्ध फोंक चलि गेल। नै त' आइ हमरो बेटी कोबर मे रहितय!

उमा भरि बस अपन कापी-किताब मे लागल रहल। जखन कखनो खिड़की स' बाहर तका जाइ त' भूआ मोन पड़ि जाइ। ओकर देह भुलुकि जाइ। रोइयाँ ठाढ़ भ' जाइ। आ ओ देह-हाथ झाड़' लागय, जे कहीं भूआ ने त' चढ़ि गेल कतौ?

ओकरा कॉलेज मोन पड़ैक। अपन सहपाठी छात्र सबहक वक्रदृष्टि सँ उड़ैत भूआ मोन पड़ैक। कएटा शिक्षक, रस्ता परहक दोकनदार, बटोही आ सभ पुरुषक वक्रदृष्टि स' उड़ैत भूआ मोन पड़ैक। ओ सोच' लागय —सौंसे दुनियाँक नारीक आँखि सँ, खाली नोरे खसै छै —मोनालिसाक चित्र जकाँ। एना किए होइ छै?

फेर ओ मोन कें बहटारलक —मेडिकल क' लेबै त' सब भूआ के जहर

द' क' मारि देबै। आब एके सप्ताह रहि गेल छै परीक्षाक। तखन त' फेर डी. डी. टी., ब्लीचिंग पाउडर...

तैयारी उमा लग आब' लागल आ परीक्षा उमा स' डेराय लागल।

एक सप्ताह बाद परीक्षा सँ निचैन भ' गेल उमा।

एकदिन उमाक माँ आ पापाजी उमा के ल' क' एकटा मनोचिकित्सक लग गेलथिन। ओ बहुत रास प्रश्न केलखिन आ परोक्ष मे उमा कें सामान्य घोषित केलथिन।

उमा कें छगुन्ता लगलै –ई सब की भ' रहल छै!

माँ-पापाजी निराश भेलथिन। हुनका सब कें आशा रहनि, जे डॉक्टर पुर्जा लिखथिन, दवाइ लिखथिन, जाहि सँ उमाक भूआ-भय मेटा जेतैक।

एकदिन उमा कें ओ सभ एकटा पीर-मजार पर ल' गेलखिन।

उमा कें फेर छगुन्ता लगलै –ई सब की भ' रहल छै?

तकर बाद उमा बी.एस.सी. मे नाम लिखा लेलक आ शहरक 'महिला मुक्ति मोर्चाक' सदस्या बनि गेलि।

प्रोफेसर सैहैब सुनलनि त' थोड़ेक आर निराश भेलाह। भेलनि –लोक गाम मे आर किदन-कहाँदन बाजत।

माँ सेहो बजलखिन –यौ, ई बिआह नै करत। तकरे बहन्ना छिऐ भूआ। माथ-पाग खसा देत ई छौंड़िया। गे उमा, गे बाबूजीक सुखायल मुँह नै देखै छहुन।

उमा खुलि क' हँस' लगलै। ओकरा माँ पर कने कम आ प्रोफेसर पापाजी पर कने बेशी दया लगलैक।

फेर पन्द्रह दिनक बाद।

उमा अखबार मे एकटा सूचना देखलक, जे काल्हि ओकर मेडिकलवला रिजल्ट निकलतैक। ओइ राति उमा बेचैन रहल। निन्दे नै भेलैक। 102 डिग्री बोखार मे भरि राति बड़बड़ाइत रहल – माँ गे माँ! सौंसे देह भूआ सोहरि गेल। भूआ झाड़ ने गे माँ!'

माँ उठि क' माथा दाब' लगलै, त' उमा पुछलकै –माँ गे, भूआ नै भागल त' की करबै हम? हम नै जीबौ गे माँ!'

उमाक माँ के नै रहल गेलनि। नोर टघरि गेलनि, जे एहेन कञ्चन-काया द' क' भगवान ई कोन बय द' देलखिन एकरा? एकरा बताड़ी के बिआह-दान,

बच्चा सब भ' गेलै, सासुर बसलै आ एकर ई दशा छै। कथा-तथा पटियो गेलै त' अइ छौंड़ीक जे गति छै, तै पर की हेतै? ई त' वरो के 'भूआ-भूआ' कहि क' बताह बना देतै?

फेर उमाक आँखि लागल देखि पड़ि रहली। माथा चलैत रहलनि —आब त' डॉक्टरो स' देखेलिऐ। झाड़ो-फूक करेलिऐ। कत्तहु किछु नै। छौंड़ी कत्तहु जाइ ले किन्नहुँ तैयार नै होइत रहै छै। आब की करिऐ, हे भगवत्ती?

उमाक माँ उमाक पापाजी कें जाक' उठा देलथिन। ओ एलखिन आ बोखार देखलथिन। फेर दुर्गा सप्तशतीक पोथी उमाक सिरमा तर मे राखि देलथिन आ बजलथिन —आँहाँ जे सन्देह करै छिऐ —से सब बात नै छै। हम बुझै छिऐ। एकर जन्म हमरा परिवार मे नै हेबाक चाहैत छलै। ने हमर सबहक समाज भेलैए एकरा लायक एखन।

फेर सूत' चलि गेलथिन।

कहुना प्रात भेल।

उमा पाँच बजे भोरे उठि क' बालकोनी मे कुर्सी लगा क' बैसि गेल। रातुक ज्वर ओकरा मोन नै छलै।

ता पेपरवला मोड़ि क' पेपर फेकलकै।

उमा क्रिकेटक बॉल जकाँ लोकि लेलक पेपर कें।

अपन रिजल्ट आ रौल नम्मर ताक' मे ओकरा देरी नै लगलै।

ओ चिचिया क' दौड़ल —माँ-माँ! —दुनियाँक सभ पुरुष के भूआ लागि गेलै।

माँ-पापाजी सकदम छलखिन।

फेर एक छन चुप भ' क' उमा बाजल —माँ, दुनियाँक सभ भूआ कें पुरुष लागि गेलै आ सबटा भूआ मरि गेलै। चारू भाग देखही ने माँ! मरल पड़ल छै सबटा भूआ। हमर मेडिकल रिजल्ट सँ मरि गेलै!

उमा थपड़ी बजा-बजा क' हँसि-हँसि क' नाच' लागल।

माँ-पापाजी के देह पकड़ि क' हँस' आ नाच' लागल—

माँ! हिप-हिप हुर्रे!

पापाजी! हिप-हिप हुर्रे!

•

1993 ई.

ऑक्टोपस

पहिने कने कथाक परिचय द' दी अपने कें, पाठक महोदय!

एहि कथाक घटना स्थल कोनो एकटा प्रान्तीय राजधानी, औद्योगिक शहर वा सौंसे दुनियाँ भ' सकैए। एहि कथाक अवधि रातुक चारू पहर थिक। चौपहरा अथवा चौबीसो घंटाक खीसा बूझल जाओ। कथा मे कोनो तेहेन विशेष कथानायक नहि। कोनो एकटा मनुक्ख वा आने जीव वा कथानायिका सुश्री नेहारानी। नेहारानी परम बुधियारि, कुम्मरि-सुन्नरि। सुशिक्षिता। गुणवती। वनस्पति-विज्ञान मे बी. एस-सी. प्रतिष्ठा। एकटा संवेदनशील शिक्षित बेरोजगार युवती, जे दिन-राति अपना दुनियाँ मे डूबैत-उतराइत हो। हिनक ओ मानस-लोक काल्पनिक आ यथार्थ दुनू अछि। परम रहस्यमय अछि। परम रहस्यमय अछि।

नेहारानीक खीसा बिछौने पर शुरू आ बिछौने पर खतम भ' जाइत छनि। छनि मुदा सार्वजनीन। अर्थात रातुक पहिल पहर मे पहिल सपनाक खीसा सँ शुरू आ चारिम पहर मे अन्तिम सपनाक खीसा सँ खीसा खतम। चारू पहरक खीसा मे एकटा राक्षस अछि।

—ठीक छै। तखन पहिल पहरक खीसाक आरम्भ हो।

खीसा एना अछि। नेहारानी सड़क पर अपन लड़िकीवला साइकिल सँ जा रहलि छथि। प्रोफेसर सैहैब सँ ट्यूशन पढ़बाक लेल। सड़कक दुनू कात मे पुटूस आ जंगली फूलक छोट-छोट झाड़ी सभ धूराक बोझ सँ झूकल अछि। पात सभ पर परत-दर-परत गर्दा जमल। नेहा सोचैत छथि, एक बर्खा होइ, पात सभ हरियर कचोर भ' जेतै। धुआ जेतै गर्दा। सौसें दुनियाँ रंग-विरंगक जंगली फूल सँ खल-खल हँस' लगितैक।

सहसा एकटा स्कूटरवला नेहाक बगल स' सटिक' सीटी बजबैत सर्र स' निकलि जाइत छनि। नेहा डगमगाइत साइकिल कें सम्हारि पबैत छथि। साइलेंसर सँ निकलल धुआँ सँ हुनकर ओढ़नी विचलित भ' जाइत छनि आ पुनः गम्भीर होइत छनि। नेहा हिन्दी मे लड़िकावला गारि 'स्साला' पढैत छथि आ बढ़' लगैत छथि

तखने एकटा ट्रक हौरन बजबैत तेजी सँ नेहा कें ओभरटेक करैत

अछि। नेहा लड़खड़ाय लगैत छथि आ सम्हरैत छथि। मुदा हवाक झटका सँ बहुतो रास धूरा आ धुआँ नाक-कान-मुँह-हाथ कें भरि दैत छनि। एक झण लेल जेना हुनका अपन अस्तित्व समाप्तप्राय बुझाइत छनि आ अपना-आप कें ओ गर्दा-लोक मे टोइया-टापर दैत, पबैत छथि। दू मिनटक अन्तरालक बाद नेहाक आगू बढ़ला पर, सड़क-मरम्मति हेतु अलकतरा बड़काओल जा रहल अछि। सड़कक दुनू कात गोड़ दसेक ड्राम मे आँच पड़ि रहल अछि। ओहुना सड़क परहक अलकतरा रौद सँ बड़कि रहल अछि। जेना नेहाक जीवन, अस्तित्व वा देह बड़कि रहल होनि।

सोचैत छथि —एँह-एँह। खाली कविते-कविता बड़कि रहल अछि। जेम्हरे देखी —कविते-कविता। अलकतराक महक हुनकर नाक कें सकपंज करए लगैत छनि। दुर्गन्ध फेफड़ा मे चकरी मारि क' बैसि गेलनि। हुनका छाती मे दाह होम' लगैत छनि। किछुए आगू बढ़ला पर बैशाखी बिरड़ो मे लेपटाइत बड्ड मोसकिल सँ बँचैत छथि नेहा आ फटाफटि पैडिल मारैत भगैत जाइत छथि। टेम्पूक एक-एक श्रृंखलाक आगू बढ़ब, नेहाक कान फाड़ने जा रहल छनि।

अन्ततः एतेक रास घटनाक बाद, नेहा एक किलोमीटर दूर प्रोफेसर सैहैबक डेरा पहुँचैत छथि।

ट्यूशन की पढ़तीह? आँखि नोराइत रहैत छनि। ओढ़नी सँ आँखि बचा क' आँखि पोछैत-पोछैत बेकल छथि। हाफी-पर-हाफी होइत छनि। छाती मे जलन होइत छनि। मुदा लाज स' बर्दाश्त करैत छथि। कहुना समय काटि विदा होइत छथि। मोन कान' लगैत छनि, मुदा चलिते जाइत छथि।

—आ दोसर पहरक सपनाक खीसा?

—विश्वास-बोर्ड पर कतेक विश्वास?

—ई की भेलैक?

—छोड़ू, तखन दोसर खीसा अनठा चलू।

—कहल आओ, कहल जाओ...

—गंगा सफाइ अभियान। प्रदूषण-नियंत्रण बोर्ड। सर्वाधिक प्रदूषण-युक्त। औद्योगिक क्रान्तिक अवैध सन्तान सभ। रक्तबीजक सन्तान। पवन-चक्की, सौर-चुल्हाक सपना।

—ई सब की-की बड़बड़ाइत छिऐ?

—अच्छा छोड़ू ई सभ।

—तखन? तखन तेसरे पहरक नेहाक सपनाक खीसा सुनाओल जाय।

—वेश। तेसर पहर मे नेहा सूतलि छलीह। थाकनि सँ निसभेर। बुझेलनि जेना कोठली मे एकटा बुढबा आबि गेल हो।

अकचकयलीह...आँहाँ के छी?

बुढ़बा हँस' लगलै। बजलै —सुन्दरलाल बहुगुणा!

—ओ...

—कहि नेहा प्रणाम केलकनि। बुढ़बा आशीर्वाद देलकनि आ बिला गेलनि।

कि तखने नेहाक मोन कछमछाय लगलनि। भेलनि जेना कोठली कार्बन-डाइक्साइडमय भ' गेल हो आ ऑक्सीजन निपत्ता भ' गेल हो।

फेर नेहाक कान मे ठक-ठक आवाज एलनि। ओ अकान' लगलीह। जेना 'ठक-ठक-ठक-ठक' लगातार कुड़हड़ि चलैत जा रहल हो। पता नहि ककरा अस्तित्व पर? दूर, बड़ी दूर —जेना गढ़वाल आ देहरादून सँ अबैत हो अवाज।

नेहा डेरा क' उठि बैसलीह आ तन्द्रा मे 'बाबा' 'बाबा' बड़बड़ाय लगलीह।

—तखन? तखन की भेलै?

—की हेतै? तन्द्रा मे त' छलीहे। किछुए कालक बाद बैसले-बैसल सुता गेलनि आ चारिम सपनाक चारिम खीसा शुरू भ' गेलनि।

—जेना? की सभ?

—जेनाकि सौंसे दुनियाँक जंगलक विनाश भ' गेलैक। फेफड़ाक अन्दर जाइवला हवा पर, फेफड़ाक बाहर आब'वला हवा हावी होब' लगलैक। चिड़ै-चुनमुन्नी सभ छड़पटाय लगलैक। पिरथीक तापमान बढ़' लगलै। पैर पाक' लगलै। पाँखि झड़क' लगलै। ओजोनमंडल टूटि-टूटि क' उका-पतंग जकाँ पिरथी पर खस' लगलैक। चारू भर फैक्ट्रीए-फैक्ट्री। नालीए-नाली। बम्मा सँ उड़ैत धुआँ आ धधरा। नदी सभ मे माँछ आ काछु मरि-मरि क' अलग' लगलैक। अन्हारे-अन्हारे। कुहेसे-कुहेस। लोक औनाय लागल। नेहा औनाय लगली। हुनका भेलनि जेना सभ जंगली हाथी, सुग्गर, बाघ हुनकर केबाड़ी तोड़ि रहल होनि।

हुनका अविचंक ल' लेलकनि। देह पसेना-पसेना भ' गेलनि।

ओ देखलनि —पनिडुब्बीक-पनिडुब्बी समुद्र मे परमाणु-कचड़ा उझला

रहल अछि। कोनो तेलक टैंकर फाटि गेलाक कारणेँ समुद्रक सतह पर तेले-तेले जमल अछि। केम्हरो आगि लागल अछि। सौंसे दुनियाँक लोक आ सभ जीव-जन्तु जेम्हरे-तेम्हरे भागि रहल अछि। अरबों उठौने अछि माल-जाल।

नेहा सोचलनि— आब की करु? आब की करु?

यूरेका! यूरेका— किऐक ने इन्सेट सेटेलाइट सँ पूछल जाय?

टी. वी. खोललनि, तँ मौसमक भयानक भविष्यवाणी भेल। नेहारानी तड़ाक द' कोठली खोलि भगली—बाप रे बाप! अम्लवर्षा! माँ गे माँ! एसीड के वर्षा! आब की करु! आब की करु!

नेहा अवचेतन मे, जोर सँ चिचियेलीह— मेधा पाटेकर, अहाँ जलसमाधि नै लिय'।

•

1994 ई.

प्रवेश-निषेध

किशोर सम्पूर्ण शरीर-विज्ञान तैयार क' लेने छल। मात्र यैह टा बाँकी छलैक। ओकरा फेर कनेक मन भेलैक, ओ चित्र सभ देखबाक। सभ एकरा खराब आ गन्दा चित्र कहैत छै, मुदा सभ कें असगर देख' मे नीक लगै छै। अर्पणा मैडम कहने रहथिन –'ये सब तुमलोगों को बाद मे पढ़ाया जाएगा। अभी अपने से, घर पर ही थोड़ा देख लेना।'

आ लड़िकीवला बिरींच अपन नजरि झुका क' आँखि-आँखि मे गप्प क' लेल रहय।

गाम पर आबि क' जखन किशोर शरीर-विज्ञान आ जीव-विज्ञान देखलक तं ओकरा परागसेचन, पुंकेसर, गर्भाशय, डिम्बाशय, भ्रूण, डिम्बग्रंथि, रतिक्रिया, साहचर्य, काम-प्रवृत्ति, यौन-भावना आ नहि जानि कोन-कोन तेसरे तरहक शब्द सभ भेटल रहैक, जकर अर्थ आ परिचय बूझब ओकरा लेल कठिन छलैक। तैयो पढ़ब आ चित्र सभ देखब, किशोर कें संवेदनात्मक रुपें नीक लागल रहैक। ओ सोच' लागल जे लड़िकी सभ कें मोंछ दाढ़ी आ पुरुष जकाँ बाँहि मे कारी-कारी रोइयाँ किए ने होइत छै? मौगीएक पेट स' किऐक बच्चाक जन्म होइ छै? पुरुख आ नारीक शरीर मे एतेक ई सभ अन्तर किऐक होइत छै?

अर्पणा मैडम किऐक ने पढ़ौलखिन ई सभ? आ कहीं परीक्षा मे पूछि देलकै तखन?

भरिसक हुनका लाज भेल हेतनि।

ओना पढ़ाई-लिखाई मे लाज की? एकदिन ओ पूछत वर्ग मे ठाढ़ भ' क'। मुदा ओ पूछत की?

शुक्रकण आ रज-वीर्य की भेलै –से पूछत।

भौजी दुनू दियादनी जे 'एम.सी.-एम.सी.' बजैत रहैत छथिन–से पूछत।

मुदा कहीं मारि लागि गेलैक तखन?

तखन शान्ति, सुधीरा आ नीलम ओकरा अपना संग इसकुल नहि ल' जेतैक। अर्पणा मैडम इसकुल सँ नाम कटबा देतै। तखन पढ़ाई बन्द। ने ओ नौमा मे फस्ट करत आ ने सुमन भैया घड़ी देथिन। मुदा जखन परीक्षा मे

प्रजनन-तंत्रक प्रश्न छुटतै, पढ़ाई नहि भेला पर, तखनो फस्ट नहिए करत आ घड़ी नहिए भेटतै?

तखन? कयल की जाय तखन?

अरे वाह! यूरेका! मलमलवाली नवकीयो भौजी त' बी.ए. पास छथिन। हिनको सँ पढ़ल जा सकैए। ने इसकुल सँ नाम कटबाक खतरा आ ने जगहँसी के।

जहिना एकदिन हिन्दी गद्य-पद्य पढ़ा देलथिन, तहिना...

साँझ मे किशोर टहल' गेल धारक कात मे, त' एकटा मोंछैल लठिधर महिसिक राशि पकड़ने 'चहैत-चहैत' चिकरैत छल। पाड़ा दूरे सँ ढेहकैत छलै। ओ सुमन भैया सँ पुछलक— 'चहैत-चहैत' की भेलै भैया यौ? —तं ओ देबारि देलखिन।

—एखन बच्चा छें। नै बुझबिही। भौतिकी, रसायन शास्त्र, गणित पढ़।

किशोर सोचलक— मर तोरी के! बुझबै किऐक नहि? एतेक भारी-भारी चक्रवृद्धि ब्याज आ संस्कृतक श्लोक बुझैत छिऐक आ ई सभ किऐक ने बुझबैक? काल्हिए भौजी सँ पुछबै आ जरुर बुझबै। मुदा जखन प्रात भेने पुछलकनि, तं ओहो हँसि देलखिन आ कहलखिन—हमर दियादनी सब किछु बुझा देत अहाँ कें। हड़बड़ाइ किए छी? एखन अहाँ बच्चा छी।

किशोर सोचलक—हिनको भैया बिगाड़ने जा रहल छथिन। पहिने प्रश्नोत्तर केहेन बनबा दैत छलथिन। आब भैयेवला भाषा बाजि क' हंटा दैत छथिन—एखन अहाँ बच्चा छी!

हुँह!

माइयो कहतै—जो खेलो ग'। संगी-साथी लग हिसाब बनो ग'। एखन बच्चा छें। एखन भौजी सूतल छौ, जो...।

वाह रे वाह! सुतनाइ त' सबहक जन्मसिद्ध अधिकार छिऐक। जेना स्वराज देशरत्न तिलक के रहनि। खाली विद्यार्थी टा के छोड़ि क'।

मुदा सुमन भैया कुमार रहथिन त' दिन क' एतेक नहि सुतैत रहथिन। आब किए खाली निन्दे होइत छनि? कहिं ममरखा नहि तं भ' गेलनि अछि? हुनका अन्ततः बुझबाक चाहियनि जे दियरो त' ओतेक सस्ता नहि होइत छै? ओहो त' मुँहदेखाइ अपन भौजी के देने रहनि?

गुनधुन करैत किशोर, नहाइ लेल बड़की पोखरि गेल, त' मोहार पर लोकक करमान लागल छल। पोखरि मे बाबू सैहैबक हाथी-हथिनी पनिखेल खेलाइत छलैक। जाठि घोर-मट्ठा भ' गेल छलैक—जेना ह्वेलक नाङरि सँ समुद्री

नाहक दशा होइत छै?

किशोर कें भेलैक—ई सब की भ' रहल छै?

ओकर मानस-लोक युद्धमय छलैक। सवाल-जवाबक मल्लयुद्ध।

ओ सोचलक—आइ बेरहट खाइकाल जरुर पुछतनि ओ भौजी सँ। मुदा ओकरा लाज भ' जेतै पुछबाकाल—से?

कहीं बूझि गेलखिन सुमन भैया, तं धुनाइ क' देथिन ओकर। आ नवकी भौजी कहीं हँसि क' कहि देलखिन— एखन अहाँ बच्चा छी—तखन?

तखन ओ भौजी सँ बज्जा-भुक्की बन्द क' लेत।

ओ आब वरदाइस नहि करत ई बात। ईहो त' एकटा शिक्षे भेलै किने? क्यो बुझबै किए नहि छै ओकरा?

बेरहट खा क' हिसाब बनब' बैसल किशोर, त' मोने नहि लगलैक ओकर।

आङन बहारैत भौजी पर ओकर नजरि चलि जाइक आ शरीर-विज्ञान मोन पड़ि जाइक। एकबेर चोरि करैत नजरि पकड़ा गेलैक, तं नवकी भौजी मुसकिया देलखिन। किशोरक छातीक धुकधुकी बढ़ि गेलैक।

भौजी जहाँ कि बहारैत-बहारैत ओकरा दिस बढ़लखिन कि किशोरक हाथ झोड़ा मे घोंसिया गेलैक आ अन्दाज सँ शरीर-विज्ञानक किताब बहार आबि गेलैक। एक्कहि बेर मे प्रजनन-तंत्रवला अध्याय उनटि गेलैक। ओ एक बेर किताब दिस देखलक आ एकबेर नवकी भौजी दिस। ओकर 'हाँ-नै' मे कनेक संघर्ष भेलैक आ ओ दनादन मलमलवाली भौजी दिस छर्रा दाग' लागल— भौजी यै, रतिक्रिया आ प्रजनन मे की अन्तर भेलै? गर्भाशय आ भ्रूण कत' रहै छै? अन्तःस्त्रावी-ग्रंथि की भेलै? रज आ वीर्य मे की अन्तर छै? ऋतुचक्र आ ऋतुस्नानक की अर्थ भेलै?

मलमलवाली कें तराटक लागि गेलनि किशोर दिस। जेना ओ ग'र सँ किशोर कें कहियो देखने नहि होथिन। हुनका अंग-अंग मे लाज भ' अयलनि— जेना निजी जीवन मे कोबरक पहिल अनुभव मे भेल रहनि। ओ एकबैग सिहरि उठलीह। जेना किशोर हुनका निर्वस्त्र देखि लेने होनि।

उघारल किताब किशोर हुनका आगू मे राखि देलकनि— पढ़ा दीय' भौजी। इसकुल मे अर्पणा मैडम कहलखिन— घर में ही पढ़ लेना।

मलमलवाली नवकी भौजी कें भेलनि, जेना चित्र सभ मे वैह होथि। फेर ओ अकचका क' बाढ़नि रखलनि आ पोथी पकड़लनि। हुनका किशोरक

सम्बन्ध मे बहुत किछु मोन पड़लनि। मुदा ओ चुनौती कें स्वीकारि क' चतुरा भारती जकाँ अनावश्यक लाजक आवरण उतारि फेकलनि आ मात देब' लगलीह बाल-शंकराचार्य कें। यौन शिक्षा प्राप्त करैत किशोर शंकर जकाँ मात खाइतो बहुत प्रसन्न छल। किशोर, कें बुझेलैक जेना अर्पणा मैडम ओकर भाउज होथिन आ नवकी भौजी अर्पणा मैडम बनि गेल होथिन। इसकुलक बदला घरे मे आबि क' डिम्बाशय, निषेचन आ प्रजनन पढ़बैत होथिन जेना!

तीन दिन धरि किशोर, शरीर-विज्ञानक सम्मोहन मे चमत्कृत रहल।

एक राति बारह बजे किशोर अपना कें टकटकीवला स्थिति मे पओलक। ओकरा भेलैक जेना कोठली मे राति खिलखिलाइत हो। ओ निन्न मे सम्मोहित व्यक्ति जकाँ, ओही झाँझनक फाट द' क' आँखि दोसर कोठली मे गड़ा देलक।

सम्पूर्ण संगमर्मरमय ताजमहल ओकरा चकचोन्ही लगबैत छलैक। शाहजहाँ सम्पूर्ण ताजमहल कें आपादमस्तक गुम्बज धरि स्पर्श मे लीन छलाह। मद्धिम इजोड़िया मे यमुनाक हिलकोर पर बनल चित्र मे लचकैत ताजमहल गुदगुदायल स्पर्श सँ ऐंचि रहल छल आ चतुर कुम्हारक उभार देल कोनो देवीक मूर्तिक उभार जकाँ उभरि रहल छल। किशोरक समक्ष शरीर-विज्ञानक दुनू प्रजननतंत्रवला अध्याय खूजल छल आ ओ जेना प्रयोगशालाक अमोनिया गैसक दक् लगला सँ बेसुधि छल।

किछुए क्षण मे सम्पूर्ण खिलखिलाइत चंन्द्रमा कें ग्रहण लागि गेलैक आ ताजमहलक संगमर्मरी चमक एक मधुर चीत्कारक उपरान्त जेना अन्हरिया मे विलीन भ' गेल। आब खाली यमुनाक कारी बिखाह पानि देखाइत छल आ सत्य सँ साक्षात्कार भेलाक बादक अवश्यंभावी तात्कालिक बेहोसीक हालत मे किशोर देखलक— जेना नवकी भौजी लेल सम्पूर्ण कोठली वस्त्र होनि आ ओ निश्चिन्त होथि दिगम्बरी जकाँ। जेना ओ साहरक झमटगर बोन होथि आ सुमन भैया अमरलत्ती।

...आ किशोरक प्रतीक्षा मे, एकटा कुमकुम बौआ खेलाय लागल।

मुदा बौआ तं पेट फाड़ि क' निकलतै, तखन किशोरक ताजमहलक की हैतैक? नै-नै, डॉक्टर अपलेशन क' क' निकालतै की? आ नवकी भौजी तं ओइ दिन पढ़ौलखिन, जे नारी प्रजनन तंत्रक माध्यम सँ बौआक जन्म होइछै! तें ताजमहल सुरक्षित रहतै।

आब किशोरक साहस दुगुन्ना बढ़ि गेल छलैक। ओ अगिला दिन सुमन भैयाक आनल एकटा अखबार देखलक। ओइ मे एकटा विख्यात

शिक्षाशास्त्रीक कथन छलनि जे— 'उच्च विद्यालय के छात्रों में यौन शिक्षा की पढ़ाई प्रारम्भ होनी चाहिए।' ओकरा सुखद आश्चर्य भेलैक, जे ओ विद्वान तं किशोरेक बात कें समर्थन केलखिन अछि। ओ सुमन भैया लग गेल आ अखबारक ओइ पाँती पर आङुर राखि क' ओइ बातक अर्थ पुछलक, तं सुमन भैया आँखि तरेड़ि क' ओकरा दिस एना तकलखिन, जेना गीड़िए जेथिन।

किशोर बिना डेरेने हँटि गेल।

अगिला दिन ओ अखबार इसकुल लेने गेल छल। ओ टिफिन मे अर्पणा मैडम कें अखबारक ओ पाँती देखौलक आ पुछलक जे— मैडम, जखन अखबारो मे निकलै छै, जे पढ़ाइ हेबाक चाही, तखन आँहाँ किलास मे किऐक ने पढ़बैत छिऐक— प्रजनन-तंत्र?

अर्पणा मैडम अपरतीभ भ' गेलीह आ टक-टक किशोर दिस ताक' लगलीह। एहि अप्रत्याशित स्थिति सँ अनायास साक्षात्कार भेला सँ, ओ अकबका गेलि छलीह। ओ किशोर कें ऊपर सँ नीचा धरि सर्वांग शरीरक अन्दाज लगौलनि आ अपन आँचर ठीक करैत, किशोर कें छिनार बुझैत देबारबाक टोन मे बजली—तुमको कहे थे ना, कि घर में ही पढ़ लेना?

—मैडम, घर पर अपने सँ पढ़ै छिऐ तं नै बुझै छिऐक किछु।

—किशोर बाजल।

—ठीक है, बड़े होगे तो जान जाओगे। अभी बच्चे हो! —आ बिना कोनो परबाहि केने आगू बढ़ि गेलीह।

किशोर फेर 'बच्चा' शब्द कें चिरैता जकाँ घोंटि सकल।

दोसर दिन किशोर हेडमास्टर सैहैब लग गेल आ बाजल—सर, शरीर-विज्ञान मे आठम-नवम अध्यायक पढ़ाइ नहि भेलैए।

—वर्ग शिक्षक कौन हैं?

—अर्पणा मैडम!

—अर्पणा मैडम बजाओल गेलीह।

अर्पणा मैडम किशोर कें देखिते भीतर तक सिहरि गेलीह आ क्रोधें थड़थड़ा गेलीह। किशोर आदेश पाबि वर्ग दिस चलल।

—किशोरक शिकायत छै, जे शरीर-विज्ञानक आठम-नवम अध्यायक पढ़ाइ नहि भ' रहल छै, तकर की कारण अर्पणाजी?

अर्पणाजी 'सर-सर' कहैत आँखि पोछ' लगली। फेर किताब बैग सँ निकालि क' उनटा क' बढ़ा देलखिन— लाजक बात छै सर! ई लड़का बदमाश

अछि। हमरा काल्हि अखबार मे देखबैत छल ई बात सभ।

फेर किशोरक बजाहटि भेल आ थापड़, मुक्का, चाट, छौंकी, चोट्टा, आबारा —सभ भेल। अर्पणाजी सँ रिपोर्ट लेल गेल आ 'चरित्रहीन' किशोर कें इसकुल सँ निकालि देल गेल।

किशोर कें भेलैक जेना पृथ्वी अपना धुरी सँ छिटकि गेल हो आ सूर्यक कारी गुफ्फा मे समा गेल होइ। फेर सूर्यक गलब आरम्भ भ' गेल हो आ किशोर बड़बड़ाय लागल हो। ऊपर सँ गाम परहक सुमन भैयाक थापड़क स्वाद एखने लाग' लगलैक, जेकि अवश्यंभावी छलैक, कारण, हेडमास्टर ओकरे गामक छलखिन।

छुट्टीक बाद किशोर असगरे गाम आयल, ओकरा जाहि प्रतिक्रियाक आशंका छलैक, से खतरा उपस्थित भैए गेल छलैक। ओकर संगी सब ओकरा देखि-देखि कनफुसकी करैत छलैक आ लड़िकी सभ नजरि फेरि क' जाइत छलैक।

गाम पर ओइ दिन किछु नहि भेल।

प्रात भेने सब किछु भेल।

ठीक तकर आठम मासक एक राति, किशोर छटपटा उठल। ओ इसकुलक ओइ दिनक घटनाक डेराओन सपना देखि रहल छल। चटिया सभ पिहकारी मारि-मारि ओकरा 'खच्चर' कहैत छलैक आ लड़िकी सबहक नजरि 'छिनार' विशेषण सँ अलंकृत क' रहल छलैक। ओकरा पीठ पर झोड़ा बैलगाड़ीक जूआ सन भारी बुझाइत छलैक। ओ घामे-पसेने नहा गेल छल।

मुदा ओ अकानलक तं ओकर छटपटी, दोसर कोठलीक छटपटी मे विलीन होब' लागल। जेना किशोर मलमलवाली नवकी भौजीक संग बलजोरी होइत देखि रहल हो। असह्य पीड़ा कें ऐंचैत। किशोर कें उजरा कुमकुम बौआक अस्तित्व पर निरंतर होइत चोट सँ खतरा आ छटपटी बुझयलैक। जेना ताजमहलक एक-एक संगमर्मरक चकला दड़कि रहल हो। ओकरा अपन इसकुल आ गाम परहक पिटाइक यंत्रणाक कल्पना स्मरण भ' अयलै, जेना कोनो राक्षस कोनो माताक अस्तित्व-मर्दन क' रहल हो आ से राक्षस ओकर सुमन भैया होथिन।

ओ उठि क' खाट पर बैसि रहल। ताजमहलक वक्षस्थल सँ कटिप्रदेश धरि, चीत्कार आ दर्द समानान्तर रेखा बना रहल छल।

कुमकुम बौआ पर दया।

दुइये मासक बात छै।

बच्चादानीक पोजीशन ठीक नहि अछि। आब नहि।

पैर पकड़ै छी! हमरे सप्पत अहाँ कें! हमरा बहुत जोर दर्द होइए! नै-नै

छोडू ने! हंटू ने!

माय गे माय! हे भगवान!

...मुदा...

किशोर केबाड़ पकड़ने पाथर भेल नहि रहि रहि सकल। ओकरा अविचंक ल' लेलकैक। ओकरा उपनयन मे एकटा बच्चा छागर कें बलि पड़ल रहैक, तकर छटपटी ओकरा मोन पड़ि गेलैक। ओ बारह बजे राति मे अन्हार आङनइ मे चकरघिन्नीवला रबाइस बनल।

दोसर दिन एक बाँस सूर्ज उठैत, ओसारा पर नूआक करपाल टंगा गेल। टोल भरिक स्त्रीगण जुटि गेलीह। डॉक्टर आ नर्स मोटर-साइकिल सँ उतरलथि। नवकी भौजीक पेटहि मे बच्चाक थैली फाटि गेल छलनि आ बच्चादानीक सभ पानि बहि गेल छलनि।

तकर बाद खून उपछाय लगलनि। ओहारक ओइ पार सँ किशोर अखियासलक, तं ताजमहल ढहैत-ढनमनाइत आ संगमर्मर पर पीरी छिटकैत बुझयलैक। उजरा कुमकुम बौआक घर क्षत-विक्षत आ बदरंग भेल छल। कुमकुम बौआक उकस-पाकस बन्न छल। नीलवर्णक शान्त, बदरंग कुमकुम बौआक अंग-प्रत्यंगक नकार-सिरखार क्षत-विक्षत छलैक।

खबरि दलान पर जा चुकल छलैक आ किशोरक मायक आँखि भीजि गेल छलैक। अचानक किशोर दलान पर निच्छोह भागल आ डॉक्टर लग बैसल हेडमास्टर सैहैब आ सुमन भैयाक सामने मे शरीर-विज्ञानक प्रजनन तंत्र उनटा क' राखि देलक आ बाजल— आँहाँ अनपढ़ छी। अहाँक एम.ए. बेकार अछि। हमर उजरा कुमकुम बौआक हतियारा छी अहाँ। अहूँ कें यौन-शिक्षा नै देलनि हेडमास्टर सैहैब। अइ अवस्था मे, बादक महीना मे रतिक्रिया सँ परहेज करबाक चाही। अहाँ यौन-शिक्षा लेने रहितहुँ तं ताजमहलक एना दुर्दशा नहि होइतय।

हेडमास्टर सैहैब किशोर दिस आ सुमन भैया शरीर-विज्ञानक प्रजनन-तंत्र दिस तकैत रहलाह। आ शरीर-विज्ञानक प्रजनन-तंत्र, हुनका दुनू गोटे दिस।

•

1994 ई.

अहाँ कें चान चाही

प्रेमकान्तजी कें अपन बाल-जीवन लौका जकाँ लौकैत छनि, जे केना ओ बाबूजी सँ कॉमिक्स किनबाक जिद्द करथि आ कतेक मोन सँ पढ़ल करथि। जेना कॉमिक्स मे हुनकर प्राण ओहिना बसैत हो, जेना सुग्गाक गरदनि मे राक्षसक प्राण! समुद्री दैत्य जोरमीड़ो आ फैंटम के कॉमिक्स। एक-सँ-एक राक्षस, एक-सँ-एक चमत्कार। जादू आ भूत-प्रेतक दुनियाँ! आह, केहेन आनन्द छलै!

तखन अयलै, किशोरावस्था मे अंग्रजी सिनेमा चोरा क' देखबाक युग। वयस्कवला सिनेमा भोरका शो मे चोरा क' देखबाक आनन्दक वर्णन नहि हो। एना हिन्दी फिलिम मे पूरा-पूरी कहाँ देखबै छै? इंगलैण्ड-अमेरिका मे बनल फिलिम मे ने कोनो पर्दा, ने कोनो लाज-धाख! आहाहा! होइनि जे देखिते रही। कहियो फस्ट किलास, तं कहियो एसपेसल सेहो।

तकर बाद जखन पोल्टेकनिक पठौलखिन बाबूजी, तं उड़ाँत सँ चड़ाँत भ' गेलाह। बिछाओन आ गेरुआ तर मे बुल्लू-पत्रिका सबहक बाढ़ि आबि गेलनि। पोथीक रैक अमेरिकाक पोर्नोग्राफिक-पत्रिका सब सँ भरए लगलनि। जाह्नवी, डेबोनायर, फैंटेसी, धारा आदि-आदि। आ नहि जानि, कोन-कोन पत्रिका सब मे, कोन-कोन अंगक फोटो निंघारल करथि।

सभ वर्ष होली-बुलेटिन कीनि क' वितरण करबाक दायित्व हिनके छलनि। ओ फोटो, ओ जोगीरा, ओ फकडा! क्या बात है, क्या बात है? कतेक की बोहौलनि आ कतेक आनन्द भोगलनि, तकर हिसाब-किताब कहियो-काल, खाली समय मे दृष्टिपटलक बही-खाता पर चलैत रहैत छनि।

अन्ततः पितानाथ-हिनकर 'लोलिता-लोलिता' सँ अकच्छ भ' क' हिनकर विवाह 'कविता' सँ करबा देलथिन आ बिजली-बोर्डक जूनियर-इंजीनियर भ' क' शान्त भ' गेलाह प्रेमकान्तजी।

मुदा...

प्रेमकान्तजीक दोसर दुनियाँ कविता सँ प्रारम्भ नहि भ' सकल। हिन्दी ऑनर्स केने, कविताक रस मे हुनका कोनो स्वादे बुझानि। अपन पुरुष-प्रधान

समाजक नैसर्गिक अधिकारक अनुकूल जे विधा चुनलनि, से छल रंगीन पत्रिका आ उपन्यासक दुनियाँ। आ हुनकर दिनचर्याक बेशी समय कविता नहि, बुल्लू-उपन्यास सब लेब' लगलनि। भिनसर, साँझ, राति-सत्यकथा, मनोहर कहानियाँ, प्रेम-अपराध विशेषांक आ सच्ची कथाएँ। इन्द्रलोक आ मायापुरी। जासूसी-कथा आ जासूसी उपन्यास। गोली, बम, पेस्तौल! हत्या, अपहरण, बलात्कार। मर्डर, छूरा, तस्करी, कैबरे-डान्स, सामूहिक बलात्कार आ तिलस्मी चमत्कार!

आह! आह! प्रेमकान्तजीक तेसर दुनियाँ-मसल्ला सँ लट्ट-पट्ट छल। सब माध्यम आ सब विधाक कान कटैत।

आइ गुलशन नन्दाक 'साँवली रात' मे सम्पूर्ण राति कटि गेलनि, तं काल्हि 'झील के उस पार' जाक' कविता कें बिसरि गेलाह। परसू प्रेम बाजपेयी सवार भ' जाथिन, तं चारिम दिन रानूक उपन्यासक पथार लागि जानि। पाँचम दिन भारत, छठम दिन मनोज आ सातम दिन ओमप्रकाश शर्माक उपन्यासक सम्मोहन। कहियो 'प्यासी नदी' तं कहियो 'कुआँरी माँ'। कहियो 'सुहागिन विधवा' त' कहियो 'सिन्दूर का मूल्य'। कहियो 'मद भरे नयना' तं कहियो 'खून का प्यासा'। कहियो प्यारेलाल आबारा, तं कहियो सुरेन्द्र मोहन पाठक! वाह! वाह!

प्रेमकान्तजीक कविता झूर-झमान आ बाबूजी कें एकमात्र बेटा सँ पोताक कोनो टा आशा नहि। बूड़य वंश कबीर कें, उपजय पूत कमाल, से मनोभाव छलनि पिताक। बेटाक विवाहक पाँच बरख पूर भ' गेलनि आ बेटा उपन्यास छोड़ि कविता-विधाक नामे नहि लैत छलथिन। ऑफिसक दराज हो वा पावर हाउसक एकान्त कोठली, किंवा कविताक शयन-कक्ष, प्रेमकान्तजी लेखे धनि सन! कोनो पॉकेट-बुक मे डूबल प्रेमकान्तजी एक दिस आ शेष सगर दुनियाँ दोसर दिस!

दरड़ने जाइत छलाह खेसारीक दालि जकाँ। सुरड़ने जाइत छलाह केराबक छिम्मड़ि जकाँ।

जेना बिगहाक-बिगहा जमीन अरजने जा रहल होथि— नोचनी-हौहटिक रोगी जकाँ!

पन्नाक-पन्ना पृष्ठ जकाँ उनटबैत आ भागल जाइत राजधानी इसप्रेस जकाँ। जेना किताबक पन्ना नहि, जीवनक पन्ना सपना मे उनटैत हो।

कि एकठाम 'मदभरे नयनावाली' नायिका, फार्मूलाक अनुकूलहि,

निर्वस्त्र भ' गेलखिन उपन्यास मे। मुदा ई कोनो तेहेन बात नहि। एना बेर-बेर होइत छलै।

कहियो वर्षा मे भिजबाकाल, कहियो स्नान-कक्षक झड़नाक नीचाँ मे आ कहियो नायकक गरम ठोरक स्पर्शोपरान्त। आ तए बेर प्रेमकान्तजीक उत्तेजना चरम शिखर पर पहुँचि, कविता-रानी सँ एक बीतक दूरी पर स्खलित भ' जाइत छलनि। आ प्रेमकान्तजीक पाइ उपर भ' जाइत छलनि। हुनकर एहि चरम आनन्दक वर्णन नहि हो। ...आ कविता कहियो बुझितो छलीह, तं अबूझ फोंफक आवरण मे, दाम्पत्य-व्यथा नुका लैत छलीह।

एहिना एकदिन एकटा उपन्यास मे भाय-बहिनिक अनेरुआ सेक्स घटित भेल, तं उपन्यासकारक समाजशास्त्रीय दूरदृष्टि आ क्रान्तिधर्मिताक प्रशंसा मे प्रेमकान्तजी राति-राति भरि आनन्द-लोक मे चुभकैत रहलाह। कहियो सोफर आ डरेभरक संग सेक्स, कहियो बच्चा-नोकरक संग पैंतालीस बर्खक मलिकाइनिक सेक्स आ कहियो कुकूर-प्रेमक चासनी मे बोरल उपकथा!

आह! प्रेमकान्तजीक आनन्द-लोक।

एक राति एक बजे मे, प्रेमकान्तजी 'सत्यकथा' मे एकटा 'सेक्स-स्कैण्डल' के रपट पढ़ैत-पढ़ैत आ औंघाइत-औंघाइत निन्न पड़ि गेलाह आ शीघ्रहि स्वप्नलोक मे बौआय लगलाह। हुनका बुझेलनि जेना ओ सेक्स स्कैण्लक सत्यकथा कोनो बुल्लू-फिलिमक रुप मे देखि रहलाह अछि।

फेर जेना कोनो जादू भेलैक आ ओ अपने बुल्लू-फिलिम करए लगलाह। ओ देखलनि जे ओ धोती-कुरता पहिरने छथि। फेर कुरता-पैजामा पहिरने छथि आ टोपी माथ पर चढ़ल छनि। हुनकर सहयोगिनी एकबेर सलबार-फराक मे, एकबेर नाइटी मे, एकबेर पेटीकोट मे, एकबेर जाँघिया आ ब्रेसियर मे, आ एकबेर निर्वस्त्र प्रकट भ' क' हुनको निर्वस्त्र क' रहल छथिन।

एकटा बुल्लू फिलिमक आ तखन फेर अनेक बुल्लू-फिलिमक आश्चर्यजनक रूप सँ हीरो बनल प्रेमकान्तजी अचानक किदन-किदन... निरघिन-निरघिन होइत गेलाह आ...

...फेर एक-सँ-एक लड़िकी सब अबैत गेलि, जकर चेहरा नहि छलैक। एक-सँ-एक प्रेमकान्तजी अबैत गेलाह। लड़िकी सब बदलैत गेल. ..आसन आ क्रिया-कलाप बदलैत गेलै। कोनो ओढ़नी मे मेडिकल कॉलेजक हास्टलक मोहर लागल छल। कोनो नाइटी पर इन्जीनियरिंग के डिग्री सटल

छल। कोनो कुरता पर केबिनेट मंत्रीक चिप्पी साटल छल, तं कोनो पैजामा पर जिला सत्ताधारी दलक अध्यक्षक बैज लागल छल। कोनो धोती पर एमेले-एमएलसी लीखल छल।

मुदा सब एक्के रंग...निरघिन-निरघिन...वीभत्स-वीभत्स...कुकूर आ घोड़ावला-गाड़ि बनि रहल छलाह।

...कि एक बेर एकटा साड़ी कनेक फिरी भ' क' प्रेमकान्तजी कें निरघिन क' देलकनि। प्रेमकान्तजी ओकरा देखलनि, तं साड़ी मे चिन्हार चेहरा सटल बुझयलनि, कि प्रेमकान्तजी कें बर्दाश्त नहि भेलनि। आ ओ अनायास कविताक नरेटी पकड़ि क' चाभ' लगलथिन।

कविता निन्न मे घिघियाय लगली।

प्रेमकान्तजीक निन्न टूटलनि, तं हुनकर हाथ कविताक गरदनि पर छल आ 'सत्यकथा' क पन्ना पंखाक हावा मे उड़िया रहल छल— महाराष्ट्र का जलगाँव सैक्स-स्कैण्डल अर्थात अपना जुआनी कें नाङट करैत सम्पूर्ण नाङट शहर आ बगुला-भगत सबहक कथा!

बिहाड़ि उठबैत पंखा मे पसेना सँ नहायल प्रेमकान्तजी अपन आ कविताक वस्त्र सुरक्षित देखि, कनेक आश्वस्त भेलाह आ कविता फेर फोंफक दुनियाँ मे चलि गेलीह।

प्रेमकान्तजीक ठोर पटपटाय लगलनि—सत्यकथा! जलगाँव!

सेक्सकथा...जलगाँव!

मनोहर कहानी...जलगाँव!

ओ सोचलनि— सत्यकथाक रपट सेहो बेजाय रसगर नहि होइत अछि। आब ओ उपन्यासक संग-संग ईहो सब पढ़ताह।

आ फेर प्रेमकान्तजी निसभेर भ' गेलाह। किच्छु नहि बुझलनि। आश्चर्य आ निन्न...कविता एना किएक केलनि?

निन्न आ आश्चर्य...कविता एना किऐक भेलीह? केना भेलीह?

...एकटा प्रश्नचिन्ह हुनका दिमाग कें सील क' देलकनि। एक राति एहिना कविता अपन कोमल प्रयास तं प्रारंभ केलनि, मुदा...प्रणय-रागक उत्कर्ष प्राप्त करबाक चेष्टा मे थाकि गेल रहथि—प्रेमकान्तजीक उपन्यासक ठंढ़ी सँ। सिङार-पेटार, मान-मनौअलि, सपना-यथार्थ!

गुदगुदी-आलिंगन, चुम्बन-नोर...आ...नहि जानि...की-की ने?

मुदा...सभ व्यर्थ!

मात्र अदहर दामवला भारत आ मनोज-पॉकेट-बुक। रानू आ गुलशन नन्दा! प्रेम-अपराध आ किशोर-कथा-विशेषांक! बलात्कारक एक-सँ-एक खोजी आ ललितगर रपट!

आ अन्ततः कविता-रानी अपन दीन-दुनियाँ कें सरापि निसभेर भ' गेल छलीह। दूटा मीठ बोल आ पाँच बुन्द सुखक तृष्णा, आँखि मे सुखा गेल छलनि।

आ एम्हर प्रेमकान्तजीक अपन गीता-रवैणक पारायण अनवरत छल। धड़ाधड़ि...धड़ाधड़ि...। बड़का ककाक टेरुआ, सुतरी आ हाथ जकाँ। ...कि एक्कहि बेर हुनकर काम-चेतना जागृत भ' गेलनि, कारण 'नंगी दुनियाँ' उपन्यासक खलनायक, एक्कहि बेर नायिका कें गछारि लेने छलैक।

प्रेमकान्तोजी निन्न-मातलि कविता पर ताही शैली मे लपकलाह। कविताक चेहरा पर उपन्यासक आखर सब चमकैत बुझयलनि प्रेमकान्तजी कें। ओ अपना कें खलनायक आ कविता कें नायिका बूझि, अपन सम्पूर्ण सामर्थ्य लगा देलनि।

...मुदा चिचियाइत कविता प्रेमकान्तजी कें झम्मारि क' दूर ठेलि देलनि आ अपन शरीर कें मुक्त क' क' वस्त्रक जोगाड़ क' लेलनि।

प्रेमकान्तजीक मोन अपरतीभ भ' गेलनि। ओ थड़थड़ाय लगलाह— सेन्ह पर पकड़ायल अदहा चोर आ अदहा डकैत जकाँ।

कविताक छाती दरकि गेलनि— फागुन मासक केराक भालरि जकाँ। सुखायल शरीरक दर्द आँखि मे आबि गेलनि आ समागम-सुखक सपना, बलात्कारक दर्द मे तहस-नहस भ' क' रहि गेल छलनि।

आ एक बजे राति मे प्रेमकान्तजी अपन सनक मुँह लटकौने ओइ उपन्यासक शेष पन्ना जेना-तेना सुरड़ि क' समाप्त करबाक औपचारिकताक निर्वाह करए लगलाह। तीन-चारि पृष्ठ पढ़ि, पोथी जोर सँ पटकलनि आ जोर-जोर सँ चिचियाय लगलाह— हमरा पर के ध्यान देलक? हमर के अछि दुनियाँ मे? हम 'सावित्री', 'गीतांजलि' आ 'कामायनी' नहि पढ़ब। अहाँ पढ़ू किद्दन-कहाँदन। हमरा 'जासूस नम्बर एक' चाही। राखू अपन 'उगनाक दयादवाद'। हमरा चान नहि चाही। अहाँक चान के मुँह टेढ़ अछि।

आ प्रेमकान्तजीक ठोर पटपटाय लगलनि— पावर-हाउस, सप्लाई-कनेक्शन,

प्यरेलाल आवारा, प्रेम वाजपेयी, तीसरा खून, ड्रेकुला, ड्रेकुला...

कविता कें टकटकी लागि गेलनि। हुनका प्रेमकान्तजीक ठोरक पटपटी सँ डर भेलनि आ हुनकर मुँह सँ निकलल साहित्यिक कृति सबहक नाम सँ आश्चर्य लगलनि।

कि तखने प्रेमकान्तजी अपन हाथ कें पेस्तौल जकाँ बना क' कविता पर तानि देलनि— हैण्ड्स अप! कर्नल बलवन्त सिंह! हैण्ड्स अप जासूस नम्बर वन!

कविता सकदम भेलि हाथ उठा देलनि।

प्रेमकान्तजी पाछू हँटैत-हँटैत, टीशन दिस विदा भ' गेलाह। दोसर कोनो उपन्यास भाड़ा पर लेबाक हेतु।

कविता कें अपन वर पर दया अयलनि। हुनका आपसोच होम' लगलनि— किऐक ओना झमारि देलखिन दुरुजरु जकाँ? बरु बर्दाश्ते क' लितथि, अपन संवेदना पर किछु कालक अत्याचार!

फेर ओ जेना किछु सोच' लगलीह।

हुनका भेलनि जे वास्तव मे एहेन साहित्यक पाठक पर समाज कहियो ध्यान कहाँ देलक अछि? एहेन पाठकक लेल साहित्यकार कलम किऐक नहि उठबैत छथि? की प्रेमकान्तजीक मनोजगत आ पाठकीयता साहित्य आ समाजशास्त्रक लेल एकदम्मे अप्रासंगिक अछि?

...से कविता अपने गुनधुन-लोक मे हेरायल छलीह आ प्रेमकान्तजीक पयर पलेटफारम कें धंगने जा रहल छल। टीशन पर एक्कहि टा बुकसेलर एहेन-एहेन पाठक कें अहर्निशि-सेवा प्रदान करैत अछि। चिरपरिचित दोकानदार प्रेमकान्तजी कें देखिते देरी, दूटा मोट-मोट उपन्यास भाड़ा पर बढ़ा देलखिन— 'मदहोश जवानी' आ 'जवानी-दीवानी'।

प्रेमकान्तजी चौंकलाह— आँहाँ आ एत्त' एखन?

—हँ हम! अहँक कविता, अहाँक चान!

देखू त' हमर मुँह टेढ़ अछि? —ओ हुनका सँ किताब छीनि लेलनि।

कविता कें दोकानदार आ प्रेमकान्तजी देख' लगलाह।

...नै अछि त' नै अछि आ अछि त' अछि। मुदा हमर किताब किऐक छिनलहुँ? —प्रेमकान्तजी बजलाह।

कविता बजलीह —अहाँ कें ई नहि चाही। रोगी नै बुझैत अछि जे ओकरा कोन दवाइ चाही। अहाँ कें चान चाही, चान। खाहे ओकर मुँह टेढ़े

किऐक नहि हो। मिठका लड्डू टेढ़ो नीक।

प्रेमकान्तजी सकदम भ' गेलाह।

कविता ओ दुनू उपन्यास स्टॉल पर पटकि, एकटा तेसर मोट सन उपन्यास उठा लेलनि आ प्रेमकान्तजीक हाथ मे ध' देलनि। आ हुनकर हाथ मे हाथ द' क' डेरा दिस विदा भ' गेलीह।

प्रेमकान्तजी ठोर पटपटा क' उपन्यासक नाम पढ़य लगलाह 'मुझे चाँद चाहिये'!

•

1996 ई.

दुधुआ

कामिनी कें पहिल बच्चा भेलनि, त' सब अल्लो-मल्लो केने छलनि। उत्साह आ हर्खक मद मे मातल नैहर, छठिहार दिन धरि डूबैत-उतराइत रहल। सोइरी-घर हरदम भरल-भरल आ कामिनी घेरायल-घेरायल।

कामिनी एना कर, कामिनी ओना कर। आडी ससार, बच्चा के दुघुआ धरा दहीन।

कामिनी अकच्छ छलीह। लाज आ संकोच स' गड़ल जाथि।

दूध उतारबाक लेल मसुरीक झोड़ आ माँड़ स' मोन अकछा गेल छलनि। बाटी देखिते आब रोइयाँ ठाढ़ भ' जाइ छलनि।

दूध स' हरदम आडी तितले रहैत छलनि।

नवजात शिशुक निर्दुष्ट मुँह देखि जे आनन्दक लहरि हिलकोर लैत छलनि, से अनेरो बहैत दुधुआ द' क' अकच्छ-भाव बनि क' बहि जाइत छलनि। कलकत्ताक जादूघरक यक्षिणीक दुधुआक आकार सन, दूध भरि क' भ' गेल छलनि— से लाजक अति स' धरती मे गड़ल जा रहल छली।

किछु दिनक बाद वर एलखिन, त'— बच्चा देखि तृप्त भ' गेलाह। मुदा दूध स' भीजल कामिनीक आडी पर नजरि गेलनि, त' चौंकि गेला।

राति मे कामिनी कें अपन अकच्छ मनोभाव, मुँह स' कहबाक जरुरति नहि छलनि।

सन्तानक दूध-मुँह निंहारबाक सुख जहिना आनन्दप्रद छल, कामिनीक दूध बहब आ बेलाउज भीजब तहिना झंझटिया। निर्णय भेल जे काल्हिए दूध सुखयबाक सुइया कामिनी ल' लेथि। आब त' युग-जवाना बदलि गेलैए आ 'एसटेन्डर-युग' मे बच्चा अमूल-फैरेक्स पर पोसल जाइए। वर नोकरिहारा छथिन्हे। तें एहि दूध बहबाक महाझंझटि स' दुनू बेकती कहुना त्राण पाबथि आ कामिनी बच्चाक दूध पीला स' शरीर कें ढिल्ल होइ स' कहुना बँचाबथि।

आ साँझक प्रातहि दुनू बेकतीक विचारें चुपचाप दूध सुखेबाक सूइ, दाम्पत्य-भोगक हित मे, कामिनी कें पड़ि गेलनि।

वर नाक घोंकचा क' चलि गेलखिन आ कनियाँ झंझट-समाप्तिक

प्रतीक्षा मे दिन गन' लगली।

दोसर सूइक उपरान्त, जल्दीए कामिनीक 'शरीर' कलकत्ता म्युजियमक यक्षिणी स' हीरोइन पर आबि गेल। किछु दिनक उपरान्त वर एलखिन, त' बहुत प्रसन्न भेलखिन। मुदा जखने आनन्द-लोक मे पुष्पक विमान पर विचरण आरम्भ केलनि, कि बच्चा 'चेहौं-चेहौं' कर' लगलै। ओकर दूधक तृष्णा बूझि कामिनी अमूल-दूधक बोतल टटोलि क' बच्चाक मुँह मे लगौलनि त' 'ओऐ-ओऐ' करैत बच्चा निपुल मुँह सँ निकालि देलक आ गीड़ल दूध बोकरि देलक। फेर कूथि-कूथि क' कान' लागल— जेना कोनो दन्तार कें देखि लेने हो।

कामिनी दूधक बोतल कें नाक लग ल' गेली, त' भभकि उठलनि। बोतल फोकराइनि महकैत छलै। हुनका बुझा गेलनि, जे छोटकी बहिन गरम पानि स' बुरुस ल' क' धोने बिना, बोतल मे दूध भरि देने छलै।

कामिनीक शरीर, आब एकटा मायक शरीर नहि रहि गेल छल। संवेदनाक धार कें सूइ स' सुखेबाक महिरम कामिनी एखन बूझि रहल छली। ने त' बच्चा चिचिआयब बन्न करैत छल आ ने वर आनन्द-लोकक त्याग हेतु तैयार छला।

कामिनी बेरा-बेरी दुनू दिस बच्चा के दूध धरौलनि। मुदा एको ठोप नहि भेटला पर, ओ एक दिस थुथना क' छोड़ि देलक आ दोसर दिस कटकटा क' दाँत बैसा देलक। कामिनी किकिया उठली।

वर कनेक खौंझेलाह।

अन्ततः आनन्दक पुष्पक-विमान अन्तरिक्ष-लोक स' धरती पर उतार' पड़लनि आ दूधक बोतल कें धोबाक आ दूध बदलबाक लेल कामिनी बाध्य भ' गेली। रच्छ रहलनि, जे भनसाघरक कुञ्जी अपने लग रहनि।

प्रात भेने बच्चाक कानब चर्चाक विषय छल।

कामिनीक दूधक सोह अनेरो सुखायब, पहिनहि चर्चा आ चिन्ताक विषय घर मे बनि चुकल छल आ माँड़-झोड़ स' वितृष्णाक कारणें, ओ माय-भाउज स' बात-कथा सुनैत आबि रहल छली।

प्रात भेने बच्चाक पेट छूटल फुचुक्का भ' गेल। पातर दस्त ततेक ने होब' लागल, जे डॉक्टर स' देखाब पड़लनि।

डॉक्टर कहलनि, जे मात्र माताक दूध बच्चा कें पियाओल जाय

कामिनी बौक भ' गेली।

डॉक्टर आन दूधक अनुमति देबा ले' एकदम्मे तैयार नहि छलाह।

अन्ततः बात खुजला पर गाइक दूध पर समझौता भेल। कामिनी दुनू बेकतीक मनोदशा देख' जोग छल। पति-पत्नीक मध्य जिम्मेदारी—निर्धारणक क्रम मे, चख-चुख आ तनाव अपन स्थान बनबैत गेल।

दू-चारि बर्खक भीतरे कामिनीक देह मे सुखौनी लागि गेलनि आ गल' लगली पैंतीस बर्षक कुमारि जकाँ। वर बहुत निराश भेलखिन जे एना किए भेल जाइ छी?

आब हिरोइनिक शरीर, दुब्बर-पातर पुरुषक शरीर बनि गेल।

बच्चाक देह के अमूलक डिब्बा चूस' लागल आ पेट छूटल अरदाराक मेघ भ' गेल। फेर बच्चा दूधकट्टू भ' गेल आ ओकर पेट ढोलकी-सन भ' गेल आ कामिनी कें दोबारा कल्याणक योग्यता भेलनि।

बच्चाक जन्मक उपरान्त कामिनि कें दोबारा सूइ पड़लनि आ कामिनीक एखन धरिक खीसा पुनः दोहराओल गेल। ओना पहिल बच्चाक दूधक चहटि कामिनी के फिरीशान करिते छल। आ आब त' दोसरो...

एहिना पन्द्रह बर्खक भोगवादक झमारल कामिनीक झाँझड़-खाँखड़ शरीर, पुरुष सन भ' गेल आ वरक नजरि के बाम-दहिन छिटकाब' लागल।

आ एक दिन वरक स्पर्श-सुख कामिनी के कष्टप्रद' भ' गेलनि आ छाती मे दर्द उठि गेलनि। पहिनहुँ पहिल बच्चा बेर मे, दू बेर थनैल भेल छलनि, मुदा एहेन जानमारुक दर्द नहि भेल छलनि।

जनमारा दर्द स' मुक्ति लेल डाक्टरनी लग गेली त' डॉक्टरनी के स्तन मे गेंठ अभरलनि आ ओ शंका व्यक्त केलनि। कामिनीक दर्दक अर्राहटि बढ़िते गेल आ गेरुआ मे छाती रगड़ि-रगड़ि ओ प्रात कर' लगली।

जाँच सबहक रिपोर्ट आयल, त' कामिनीक वर नरभसा गेला। तुरंत अपलेशन अत्यावश्यक छल। अन्यथा स्तन-कैन्सर स' जान बाँचब कठिन छल।

तें तुरंत कामिनीक अपलेशन ईथर स' मता क' भेल आ गेंठ निकालल गेल। घाव छुटलाक उपरान्त कामिनी कत्तहु स' स्त्री नहि बुझाइत छलीह। वरक नजरि ठहरैत नहि छलनि।

कामिनी वरक मनोदशा निकें-नाँ बुझै छलीह आ वर हुनकर। वरक

अतीन्द्रियता आ सौन्दर्य-बोधक आकांक्षा अतृप्त रहि गेल छलनि आ कनियाँक भोगीन्द्र-प्रिया बनबाक आकांक्षा सेरा गेल छलनि।

एक दिन वर-कनियाँ दाम्पत्य-लीन रहथि आ कामिनीक मोन मोमबत्ती जकाँ पघिलि रहल छलनि।

वर स्पंजक व्यवस्था, प्लास्टिक-सर्जरीक खर्च आ फेर अपलेशनक झंझटि स' आदंकित आ शेष जीवनक व्यर्थता स' चिन्तित-व्यथित छलाह।

संवेदना आ आनन्दक पुष्पक-विमान उड़ैत नहि, बैलगाड़ी जकाँ रसनचौकी बजबैत चलैत छल। उड़ानक स्वाभाविकता समाप्त छल।

किछु कालक बाद वर सूति चुकल छलाह आ कामिनीक मानस-पटल पर अपन सन्तानक कृशकाय स्वास्थ्य उभरि अयलनि। कि ता बच्चा उठि क' ठुनक' लागल—माँ दुधुआ, माँ दुधुआ!

बच्चा कें ठकि-फुसिया क', थपथपबैत आ सुताबैत कामिनी चिन्तनक अतल गहिराइ मे पहुँचि निन्न पड़ि गेलीह त' अमूलक डिब्बा पर बनल बच्चाक फोटो डिब्बा स' उतरलै आ कामिनिक दुधुआ मे जोर-जोर स' हुदुक्का मारि-मारि क' दूध पीब' लागल— जेना गाइक थन मे बच्छा हुदुक्का मारैत हो। कामिनी के भेलनि जेना ओ यक्षिणीक शरीर जकाँ भरल-पुरल भ' गेल छथि। हुनकर दुधुआ स' बेलाउज भीजि गेल छनि आ अमूल-बच्चा तृत्त भेल हुनकर मुखमण्डल के टकाटक निंहारि रहल छनि।

कि सामने मे वर दूध सुखेबाक सुइया लेने ठाढ़ बुझेलखिन। कामिनी बच्चा के छाती मे चिहुटि क' पकड़ने नद्दर-फद्दर भगली। ओ भागल जा रहल छथि आ वर खेहारने आबि रहल छथिन, खेहारने आबि रहल छथिन।

मुदा ई की?

हुनकर पयर लोथ किए भेल जा रहल छनि। ओ उड़' चाहैत छथि, मुदा हाथ-पयर संग नहि द' रहल छनि।

अन्ततः वर हुनका दूध सुखेबाक सुइया दुष्ट-हँसीक संग भोंक' लेल अपन हाथ उसाहैत छथिन।

कामिनी चिचिया-चिचिया क' वर कें कहैत छथिन—हमर दूध नै सुखाउ! अहाँ वासनाक पाछू किऐक बताह भेल छी? देखिऔ ई अमृत-धार. ..हे लीय'...आउ...

आ अचानक कामिनी पलथी मारि क' बैसैत बेलाउजक हुक पटापटि खोलि लेलनि। एक दिस बच्चा आ एक दिस वर कें दुधुआ धरा देलनि—जेना विषपानक उपरान्त पार्वती, शिव कें मूर्छा तोड़बाक लेल दुग्धामृतक पान करा रहल होथि।

दबाइ-भरल सिरींज वरक हाथ स' खसि पड़ल छलनि। कामिनी के अपन दुधुआ धन्य-धन्य जुड़ा रहल छलनि।

•

1997 ई.

ध्रुपद-धमार

पंडित टुनटुन मिसर मिडिल इसकुलक शिक्षक छलाह। ताइ जवानाक योग्यता छलनि। गामक कोनो बी.ए., एम.ए. युवक कें दस लाइन अङरेजी झाड़ि क' बेपानि करब, हुनकर बामा हाथक खेल छल। तहिना इसकुल मे वीर-रसक कविता पढ़ाब' ठाढ़ होथि, त' बुझाय जे आब स्वतंत्रता-संग्राम शुरु भइये टा जैत।

से पंडित टुनटुन मिसर आइ रिटायर भ' क' पेंशनभोगी भ' गेल छथि। आ जिला पेंशनधारी संघक अध्यक्ष छथि।

अध्यक्ष महोदय पिलसिम उठबै छथि आ घर मे रहि जाइ छथि। पिलसिम बजार चलि जाइत छनि। हाथ मे छुच्छ योग्यता रहि जाइ छनि। हुनका रहि-रहि क' सुमारक लहरि अबैत छनि— साबिकक भूरवला पितरिया छेदामक। चानी के रुपैया, ताम आ पित्तरिक पाइ, पचास-पचहत्तरि दरमाहा, दू रुपैये कीलो करु तेल।

मोल रहै पाइक। आह! बरखतियार कतेक होइ?

सुमिरन भेलनि— ब्रिटीश राजक पाइ। फेर सन् सैंतालिसक पाइक मोल आ तखन फेर साठि ईसवीक पाइक मोल। आ तकर बाद त' मोले अनमोल!

नमरी ल' क' बजार जाउ, दसटकही जकाँ सुटकल झोड़ा असानी स' झुलबैत घर घुरु।

एक दिन मिसराइन बजली— सुनै छीऐ! मोन होइए, भागवत कथा सुनितहुँ!

—दस हजार— पंडितजी बजला।

एकादशी-यज्ञ सेहो करितिऐ। आब सौंपब जरुरी छै, नै सकै छी।

—दस हजार! —फेर टुनटुन मिसर बजला।

—चलु ने चारु-धाम घूम'। लोक सब जाइ छै! —मिसराइनि बजली। टुनटुन बाबू हँसि क' बजला —आब धर्म-कर्म छोड़ू।

—हम एकबार पढ़ब छोड़ै छी।

—आँहाँ हवाइ-चट्टी पहिरब बन्न करु।

—फर्जी साड़ी पहिरब बन्न करु।

आब बुरही कें नहि रहल गेलनि।

बजली— तखन कहब जे भोजनो बन्न करु आ पेट मे नूड़ी ठूसि क' पड़ि रहू।

टुनटुन मिसर कने हँसि क' फेर सूत्र जोड़लनि— पंडित कारी ठाकुर कहै छला— 'मर्र, अहाँ के कोन? आब कोनो काज-करतेबता अछिए नहि। डेड़ हजार पिलसिम भेटिते अछि सरकारी उठाना। तोड़ैत रहू तिलकोर!' आ एत' ठढ़ियो-गेनहारी चारि रुपैए कीलो भ' गेल।

आब परोड़-करैलाक बदला आलूक चोखा!

आगरिम दालि-भात मे धोखा!

सुनै छी, बचियाक माय?

—ऊँह, आँहाँ जकाँ हमरा बरबरैनी नै ने धेलकए? —मिसराइनि टिपलनि।

—दू बेकती मे पिलसिम डेढ़ हजार।

पेट भरय नहि, दोहाइ झंझारपुर बजार!

—बैसल-बैसल कविकाठी करै छी। —पंडिताइनि बजली।

आ पंडित टुनटुन मिसर सुमार कें बिसरबाक लेल भाङक तुजारति मे लागि गेला।

दोसर दिन टटुआर स' सुपुत्री एलखिन, बिदागरी भ' क', त' कतेक दिन पर दही-पूड़ी चखलनि आ अतीतक दहीक-चटकार सुआद' लगला।

नाति चौल केलकनि— नाना, नाना, हम अहाँ के एक हजार रुपैया दै छी।

—धुर बैटचो, कत' स' एलौ?

—बैंक स' केलिऐ घटोला! ही-ही...देखिऔ ने!

आ एक-एक क' दस टा नमरी नाति राखि देलकनि, नानाक हाथ मे। टुनटुन बाबू उनटा-पुनटा क' देखलनि आ हँस' लगला— अयँ रौ! तोहर हम ठकदरुआ? ला त' लाठी। पकड़ टटुआरक बाभन के!

नमरी सभ पर 'चिल्ड्रेन बैंक ऑफ इण्डिया' लीखल छल आ ओकर गवर्नर के दसखत कयल छल।

नाति ठिठिया रहह छल— नाना के ठकि लेलियनि-नाना के ठकि

लेलियनि! नाना, चिन्हलिऐ नै? आँहाँ त-' कहै छलिऐ, जे पुरना लोक उड़ती चिड़ै के पाँखि चिन्है छै!

बेटीक आँखि कड़ा केला पर, नाति भागि गेलनि। मुदा नाना भाङक रिमझिमी-निसाँ मे उधिआइत गेला सुमिरन मे— अङरेजी-युग मे एना, जमाहिर युग मे ओना। एक रुपैया कीलो चाउर!

गाँधी युग मे दूध भेटल छल, नेहरु युग मे घी
इन्दिरा राज मे चाह भेटल छौ, फूकि-फूकि क' पी!
मुदा चाह मे दूध नहि ताक!
मुदा चाह मे दूध नहि ताक! सीताराम! राधेश्याम!

हे मधुसूदन! एक पैसी, दू पैसी, तीन पैसीक मोल राता-राती खतम क' देलक सरकार। साबिकक युग मे त' भूरवला पाइ कुकूरक नाङरि मे पैसा दितिऐ, त' एक गमछा मुरही मकरक मेला स' कीनि अनितय। आ आइ?

ओइ दिन एकटा बेचारा शीतला माइक फोटो फूलडाली मे ल' क' माङ'-चाङ' अयलै, त' पँचपैयाही-दसपैयाही लेब त' नहिए गछलकै, चौअन्नीयों पर भनभनाय लगलै। —आब त' चौअन्नीयों-अठन्नी के खतम कर' सरकार। एकटा चॉकलेटो नै भेटै छै। हम त' कहै छियनि शीतला माइ के, जे सब के ध ाने-जने पूरल राखथि, त' एकटकही भेटत। तखन पाभरि साग हैत! ठीके बात छै।

टुनटुन मिसर के कोनो छगुन्ता नै लगलनि।

कए दिन अहिना झंझारपुर बजार मे दोकने-दोकने फूल-अक्षत देब'वला पंडीजीक फूलडाली मे आ चेहरा पर दसपैयाहीक प्रति वितृष्णा-भाव देखै छथि।

तहिना एकबारक आर्थिक जगतक खबरि सभ पढ़ि-पढ़ि आनन्दित होइत रहै छथि। आ पेट मे मीठ-मीठ करुण दर्द, भीतरे-भीतर टीस मारैत रहै छनि, पलेती बारैत रहै छनि।

—सुनै छी, फल्लाँगाँवाली! लोकक क्रय-शक्तिक आर ह्रास भ' गेलै। आइ पाइक मोल आर घटल—बारह पाइ!

—सुनै छी, कत' गेलौं? आइ मुद्रास्फीति दशमलव न' प्रतिशत घटि गेल। काल्हि एक्केबेर दू प्रतिशत बढ़ि जैत। देखिऔ ने, परसू सात प्रतिशत पर स्थिर भ' गेल रहय। खैर, सरकार एक अंक पर बनौने अछि। तकर गुमान क' सकैए सरकार।

—देखि लेब बचियाक माय, फल्लां तारिख क' संसद मे जहाँ कि विश्वास-प्रस्ताव खसत, कि मुद्रास्फीति सर्र स' दहाइ अंक छूबि लेत। वित्त-विधेयक, विनियोग-विधेयक अइ सभ अवसर पर मुद्रास्फीति गैंरथैय्या नाच करै छै!

—मर्र! मर्र! कत' पतनुकान ल' लेलिऐ बचियाक माय?

आ टुनटुन मिसर बच्चा जकाँ हेर' लागथि बचियाक माय के। फेर मिसराइनिक अबिते देरी बरबराय लागथि—

—धुर बहिं, चाहो-ताहो दिऔ एक बेर। होउ, किछु भ' चलय।

हे दखिऔ पेपर मे— चानी सुस्त, सोना मन्द

आवक लिवाली, तेज बिकवाली

गृहस्थ-नोकरिहारा, बजारक घरवाली...

मर तोरी के, मत्तोरी के, अयँ यै, अयँ यै!

मक्का लुढ़की, गेहूँ उछली!

दाम चोक्खो, माल छिछली!

—चुपचाप कलबल बैसि नै होइए, जे अल्लर-बल्लर बड़बड़ाइ छी?

—मिसराइन के आब कान पाकि गेलनि।

—मर्र! चुप्पे त' छी! हमहूँ चुप्प छी! सगर देस चुप्प अछि। छौंकी स' देह ततारि देलक। गत्र-गत्र ससारि देलक। चुप्प त' छी! ई त' एकबारक बात सुनबैत रही!

—से त' बुझलौं। मुदा भाङ खाक' नाटक केने नहि चलत। काल्हि बचिया जेतै सासुर। से दही-पूड़ीक इन्तिजाम हेतै। आ फूलबाबू के पेन्ट-बुश्शट देल जेतै। कहैए, नानाजी के डेढ़ हजार पिलसिम भेटै छनि— से जिन्स पेन्ट लेबै।

—मिसराइन कने टाँस स' बजली।

आ पंडित टुनटुन मिसर भजन गाब' लगला—

हे गोविन्द राखू शरण, अब तो जीवन हारो!

नीड़ पिबन हेतु गयो, सिन्धु के किनारो

सिन्धु तीर बसत ग्राह, चरण धए पछाड़ो!

हे गोविन्द, हे गोपाल...

ध्यानमग्न भ'क' टुनटुन बाबू टेक बिसरि गेलाह आ भजन के चेथाड़ि-चेथाड़ि क' गाब' लगला। चास, समार, तेखार, कदबा, चौकी... हे

गोविन्द...हे गोपाल...

हे गोविन्द...हे गोपाल...

पहिने आलाप... फेर द्रुत होइत पञ्चम...तार सप्तक... ...तार सप्तक...

पंडितजी एक क्षण विलम्बित भ' क' पंडिताइनि दिस द्रुत भेलाह—

—यै! राग दरबारी बुझै छियै। राग दरबारी?

—ऊँह! मार बाढ़नि!

—आहिरेबा! सय मे नब्बे गोटे बूझै छै आ आँहाँ नै?

शिव-शिव! राम-राम!

अच्छा, कोनो बात नै! कोनो बात नै?

—राग माल-कोष जनै छी, माल-कोष? —अङुरी सँ टनटनीक इशारा करैत पंडितजी पुछलनि। —माल-कोश?

—झाँट खरड़ा! अहींक कमाइ स' जनैत हेबै—

पराती मे करुणा? ई त' सगर देस जनैए?

नै?

अन्ठा चलू, अन्ठा चलू। राग अलैया-बिलावल के नाँ सुनने हेबै? बिलैया-लड़ावल होइ छै, विधान-सभा मे आ शेयर बजार मे?

—आँहाँ ओनाठ-काल खोनाठ आ महादेवक बिआह-काल मे लगनी गाउ, भाङ पीबि क'। —पंडिताइनि के आब नै रहल गेलनि।

—ठीक छै, ठीक छै,। देसे राग गाउ त' बूझी। हमरो ससुर त' दरबारी दास सङे गबैत छलाह। साँझ पराती, भोर वसन्त! तखने बूझी गीतक अन्त। हम बनब शेयर-दलाल। जे राम! से राम! देसे राग गाउ!

ता पञ्चम-स्वर पर तार-सप्तकक प्रहार भेल, पंडिताइनि दिस सँ।

—हम दही-पूड़ी जनै छी खाली। दही-पूड़ी आ नातिक पेन्ट-शर्ट।

ई दोहा-फकड़ा बहुत भेल। राम भजन स' काज नै चलत। हम सबटा इज्जति-परतिष्ठा उठा क' पीबि नै जैब। कने विचार राखू मोन मे।

—कतौ स' जोगाड़ क' लीय' ने। अगिला मासक पेंशन स' देबै। हमरा काल्हि संघक शिष्टमण्डल ल' क' कलक्टर सैहैब ओइठाम जेबाक अछि।

—गे दाइ! हमर मोन पतियाबै-ए ई पुरुख!

—नै-नै! एक किश्त महगी-भत्ताक घोषणा केलकैऐ सरकार। हे देखिऔ,

अजुका एकबार मे। डेढ़ सय बढ़ि जैत।

—ऊँह! एखन भेटै मे तेरह डिबिया तेल जरत, चारि मास धरि। आ बनियाँ बेकाल राता-राती दाम बढ़ा देतै वस्तु-जात पर। सरकार स' आँगें-आँगें बजार चलै छै। आँहाँ एकबार ल' ल' मोने-मोन गूड़-चाउर फाँकू। -पडिताइनि झोंक मे बजली।

—नै-नै, काल्हिए डी. एम. ओइठाँ जेबै, मांग-पत्र ल' क'।

—से अपन जे करी। मुदा हम ककरो आगाँ हाथ पसार' नै जैब। अपन बेवस्था धरा क' जाउ— जज-कलस्टर लग।

आ टुनटुन बाबू फटोफट मे पड़ि गेलाह। संघक एक-एक सदस्य ध्यान मे एलनि। मुदा...। फेर अपने पंडिताइनिक भरें ओङठि क' निचैन भ' जायब बेशी सुरक्षित बुझेलनि। सभ बेर कोनो-ने-कोनो रस्ता निकालिए लैत छथिन किने।

काल्हि ओ अहलभोरे शिष्टमण्डलक सङोर मे निकलि जेताह। फेर देखल जेतै।

काल्हि ओ अहल भोरे शिष्टमण्डलक सङोर मे निकलि गेलाह। फेर देखल गेलै —जे शिष्टमण्डल डी.एम. ऑफिस लग थहाथहि जमा भ' क' मांग-पत्रक प्रारुप बनब' लागल।

—बढ़ल महगी-भत्ताक एक किश्तक मांग।

—महगी-नियंत्रण करबाक मांग।

—राशन-कार्ड, चीनी-मटिया तेलक मांग।

—कोषागार आ बैंक मे पेंशन-भुगतान मे भ्रष्टाचार समाप्त करबाक मांग।

आदि...आदि...बड़की गो मांग-पत्र ल' क' —पाँच सदस्यक शिष्टमण्डल कलक्टर सैहैब लग गेल, जत' क्षेत्रीय एम.पी., एमेले आ एकटा मंत्री सेहो बैसल छलाह।

कलक्टर सैहैबक चेम्बर मे एकटा तेसरे दुनियाँक सजावटि देखि पंडित टुनटुन मिसर भोतियाय लगलाह। मोन पड़लनि —छोटा लाट सैहैबक चैम्बर, त' आदंक ल' लेलकनि। मुदा फेर जल्दीए सुभ्यस्त भ' गेलाह।

—हँ, त' अहाँ सब अपन मांग-पत्र निकालू। —डी. एम. बजला।

मांग-पत्र बढ़बैत पंडित टुनटुन मिसर बजला—

—एक किश्त महगी-भत्ता जे बढ़लैए —से हमरो सब के...

—ओ त' राज्य सरकार स' आदेश आओत। आगू बाजू।

—बजार आ महगी-नियंत्रण...मुद्रास्फीति...

—ओ त' सगर देसक समस्या थिक। अर्थशास्त्री सभ लागल छथि।

— हमरालोकनिक पेंशन भुगतान मे बैंक आ कोषागार मे भ्रष्टाचार...

—ओ त' विश्वव्यापी समस्या थिक। संम्पूर्ण समाज सोचत। असगर वृहस्पतिओ झूठ!

—हमरा लोकनि के राशन कार्ड आ किरासन तेल...

—एह! ह' ह' कतेक सस्ता मनोवृत्ति अछि जनताक? ओ एखनो किरासनेक मादे सोचैत अछि। कहू भला...एकैसमो सदी मे...

—मंत्री जी कलक्टर सैहैब के कहलनि। फेर मंत्रीजी बजला —पंडीजी, संविधान लीय'। प्रजातंत्र लीय'। गणतंत्र लीय'।

एमेले बजला— त' पंडीजी, संसद लीय'। राष्ट्रपति-प्रणाली ल' सकै छी। विद्वान लोक छी। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका सेवा मे तत्पर अछि। की मटिया तेलक फेरी मे पड़ल छी? खाली मुद्रास्फीतिए सुझाइए? विकास नै?

एम.पी. सैहैब संसदीय शैली मे बजला— ई उदारीकरण-भूमण्डलीकरण ककरा लेल छै पंडीजी? कम्प्यूटर-युग अहाँक दरबज्जा पर ठाढ़ अछि। यावत अहाँ चाउर-दालिक रमझौआ मे फँसल रहब, पाइक भेलू घटिते रहत। जापान आ विश्व-बैंक कत्ते पूजी देलकए आ अहाँ महगीक चक्कर मे छी?

एमेले बजला-डी. एम. सैहैब! जनता के बड़ी लाइन चाही। किरासन आ गहूम चाही। ओकरा हवाइ अड्डा नहि चाही। कम्प्यूटर नै चाही। हद्द भ' गेल।

मंत्रीजी बजला— जनता त' आपसे मे बिलैया-लड़ावल खेला रहल अछि। ओ मांगबो करत त' मटिया-तेल! कतेक नीच मानसिकता थिक?

पंडित टुनटुन मिसर के भेलनि, जेना एक सालक भाङक खोराक एके दिन मे घोंटि लेने होथि।

आब हुनका निकलि जायब अत्यावश्यक बुझेलनि।

बाहर निकललाह त' ठहक्का पानक दोकन धरि खेहारलकनि। शिष्टमण्डल गुम भेल पानक दोकान पर ठाढ़ छल।

एक सदस्य गोविन्द महतो पानवला कें देबाक लेल दसटकही निकाललनि।

टुनटुन बाबू दसटकही पढ़' लगला— 'मै धारक को दस रुपये अदा करने का वचन देता हूँ।' —गवर्नर, रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया। टुनटुन बाबू महतोजी के पूछ' लगला।

—'मुदा वास्तव मे कए टाका अदा करै छी, गवर्नर सैहैब?

—बाजू कए टाका?...?... बाजू, कए टाका गवर्नर सैहैब?

महतोजी चुप रहला।

टुनटुन बाबू अपना जेबी स' एकटा एकटकही निकालि पानवला कें देखबैत बजला —यौ वित्त-सचिवजी, यौ वित्त-सचिवजी, एक टाका मे एकटा मीठा पातवला बंगाली पान देबै? मर्द छी त' एकटा मीठा पत्तावला पान खुआउ, वित्त-सचिवजी!

पानवला हँसैत बाजल— एक अठन्नी आर!

टुनटुन बाबू एकटकही देखा-देखा क' नाच' लगलाह—वाह! वित्त-सचिवजी वाह! 'मै धारक को एक रुपया अदा करने का वचन देता हूँ।' वाह, वित्त-सचिवजी वाह!...

•

1997 ई.

समाङ

समाङ

(मैथिली कथा-संग्रह)

रमेश

समाङ

कथा-क्रम

84 : एक सेर चाउर
86 : सहानुभूति
88 : अक्ष आ वृत्तचक्र
96 : टा-टा
100 : लुट्टीस केस
107 : गराड़
111 : मोजरा-कल्चर
125 : ताण्डव-नृत्य
133 : दीप
139 : थाक
147 : खण्डित आदर्शक कथा
155 : चित्रहार
161 : कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो
167 : सेकेन्ड डिवीजन
173 : जनउ

एक सेर चाउर

ओकरा चूल्हि पजारना आइ तीन साँझ भ' गेलैक। बाल-बच्चा सभ लटुआयल छलैक। एक्के सीरा सँ पटोटन देने रहैक। छोटकिनमा छौंड़ा मुखियाजी घरक एक कटोरी मँड़गिल्ला खाक' सूति रहल छलैक। सूतल छलैक ओना जेठको, चल्लौंसक एकटा बासि-तेबासि टिकड़ी खाक' मुदा तकरो एक पहर सँ बेशीए भेल होयतैक। तेँ भूखक लेल ओकरा पेटमे पलेती बारैत छलै। मायक मुँहपर ओ टकटकी लगौने छल। खने उकस-पाकस करय, कछमछ-कछमछ करय, करोट फेरय, आँखि मूनय आ खने आँखि खोलिक' लिबिर-लिबिर ताकय। यैह क्रम छलैक।

छौंड़ाक उखी-बिक्खी जखन नहि देखल गेलैक, तखन ओ विदा भेलि बड़की हवेली दिस। कुटियो-पिसिया हेतैक तँ क' देतैक आ माँगि लेतैक किच्छो। अपन मन-पेटकेँ तँ परतारियो लेत, किन्तु अबोध नेना सभकेँ कत्तेक काल बहटारतैक?

कहलकै अपन दुखड़ा बड़की कनियाँकेँ मुदा ओ नाक पर माछीयो नहि बैस' देलखिन। ठाँहि-पर-ठाँहि जवाब देलखिन— 'कहलकै जे ककरा दनिक पड़ि। लेबाक काल किदन लाल आ देबाक काल किदन लाल। ओ चोट्टहि घूरि गेलि, बड़की कनियाँक ओल सन बोल सूनिक'। छुच्छे हाथे।

अपन कोठली पैसिते देखलकै जेठकाकेँ दर्दसँ छटपटाइत। भुक्खा-दर्द। सनुक्चा खोलि क' निकाललक ओ वेश कठौतिया सनक फूलक थाड़ी। जाहि साल कमलाक आगमन भेल रहनि, ताही सालक ई थाड़ी छिऐक। नैहरमे ओकरा भेटल रहैक। थाड़ीक कान्ह पर अलताक एकटा चेन्ह लगाक' आँचरक झाँपन द' पुनः विदा भेलि ओ बड़की हबेली।

बरखाक प्रसादात भेल भरि, ठेहुनक' गोबराहा हेंक नंघैत, ओ पहुँचलि बड़की कनियाँक दुआरि पर। घुनसी एखनहुँ पड़िते छलैक।

थाड़ी पर नजरि जाइते बड़की कनियाँक मुँह पर मुस्की खेला गेलनि। हुलसि क' ल'ग आबि पश्चात्ताप करैत बजली— जरलाहा मुँहकेँ की भ' गेल छल तखन, से नहि जानि! हिनका हमरे सप्पत! दुःख नहि करिहथि ई हमरा बातक। ल' जाथु, जे लेती से। बन्हकी रखती किने? भगवान दिन घुरौथिन, बेटा कमेतनि, तँ छोड़ा लिहथि।

आ घुरती काल ओकरा खोंछि मे, सेर भरि चाउर छलैक। लबराही सेर सँ एक सेर! गसियाक' पकड़ने छलि ओ चाउरक पोटरी केँ। एक सेर चाउर। एकटा थाड़ी, एक सेर चाउर!

•

मिथिला मिहिर 9-15 दिसंबर 1979 ई.

सहानुभूति

ओकरा होइत छलैक जे आइ अनेरे ओ अइ झमेला मे फँसि गेलि। पात खरड़बाक लौलक नतीजा ओकरा अपसोचक जाल मे ओझरा देने छलैक। बेकारे आयल ओ पात खरड़बाक लेल, बुढ़ियाक कहल काटि क'। आ अयबे कयल, त' जतनी पात भेलैक, समटि-बटोरि क' टोला-पड़ोसाक जनी-जातिक संग चलि जइतय। जल्ला भरवाक लौल नहि कयने रहैत, तँ एखन एहि चमरछोंच मे कै लेल फंसितय?

से मोने-मोन सोचैत जा रहलि छलि ओ। अलबौकी जकाँ मूड़ी गोतने। आमक एगो पातकेँ पयरक औंठा सँ मीड़ैत जा रहलि छलि। कौखनक' दुनू टा पिठबा छौंड़ा दिस ताकियो लैत छलि, किन्तु किछु बजबाक साधंस नहि भ' रहल छलै। जानि नहि मोने-मोन ओ अपना देवता-पितर केँ कतेक बेर गोहरा चुकल छलि। कतेको कबुला-पाती क' चुकल छलि। आजुक एहि संकटसँ त्राण पयबाक हेतु। मुदा ओ दुनू टा छौंड़ा किन्नहुँ ओकर जल्ला-खरड़ा छोड़िते नै छलैक। ओकर अपराध एतबे छलैक जे छौंड़ा सबहक कलम मे ओ पात खरड़ि लेने छलि। गाछ मे खरड़ा लागि गेने आम नहि ने फरतैक? पात खरड़ि लेला सँ आम जे खसतै, छहोछित भ' क' फूटि जेतै किने? तेँ पात खरड़नाइ महान् अपराध छिऐक, ओ आइये बुझलक, अइ दुनू टा पिठबाक मुँहें।

—रौ बहिं अमरितबा? की बात छिऐक रौ? की भेलौ अछि?

—देखिऔ ने मुखियाजी। कलम मे पात खरड़ि लेलक हन। जाबे दू चारि गो पतखरनीक जल्ला-खरड़ा नहि छिनबैक...

—मार बहिं, बड़े कलामी भ' गेलाह-ए! पात खरड़ि लेलकनि तँ बड़ अन्याय क' देलकनि। आमक ओगरबाहि करैत छ' कि पातक? भागह कि एखने हम...। चल गे चल। ई सब नङट लोक छी। फराके रही एकरा सब स'। चल हमरा अगाड़ परहक कलम सँ जतेक मोन होउक, खरड़ि लिहेँ।

—आब नै खरड़बै ग' मालिक। बड़े देर भ' गेलै। आब घरे चल जेबै।

—चल ने, जल्ला कहाँ भरलौए एखन? आब आयल छेँ ओतेक दूर सँ, तँ बिना जल्ला भरने केना जेमें?

ओ चलल जाइए मुखियाजीक पाछाँ-पाछाँ। पुरनी पोखरिक ओइ भाग छनि मुखियाजीक कलम। पोखरी मोहार परहूक बोनाह, झोंझाह, टेढ़-टूढ़ एकपेरिया पर द' जा रहल अछि ओ। मुदा बंसबिट्टी लग पहुँचि क' मुखियाजी भरिसक ठाढ़ भ' गेलाह-ए।

आरे, ई की? मुखियाजी पाछाँ घूरि क' ओकर हाथ किए पकड़ि लेलखिन—हें? हे भगवान! एही ले चुऔने छलखिन सहानुभूतिक मधु? एँह-एँह? देखू मुखियाजीक कुकर्म! राम...राम! छीः छीः छीः!

•

मिथिला मिहिर 6.12 अप्रील, 1980 ई.

अक्ष आ वृत्तचक्र

—यै!

—उँ!

—सुनू ने!

—ऊँ ऽ.ऽ

—सुनू ने कनी!

—ऊँह! सूत' दिय' ने! किए तंग करैत छी?

—आइ नहि सूत' देब।

—किए, आइ की छिऐक?

—किछु गछू तहन कहब।

—हमरा लग की अछि जे गछब?

—बहुत किछु अछि।

—सब अहीँक थिक।

—तहन?

—गछू जे आइ भरि राति जगले रहब!

—ठीके छै। आब कहू जे आइ की छिऐक?

—से की अहाँ केँ मोन नहि अछि?

—उहुँ!

—हँ, किए मोन रहत? हाथ तँ हमहीँटा पकड़ने रही अहाँक किने? विआह तँ हमरे टा भेल रहय अहाँ सँ किने? अहाँक थोड़बे भेल रहय हमरा सँ?

—की अनट-बनट बजने चलि जाइत छी? सोझ-सोझ कहू ने!

—.....

—हे यौ!

—.....

—कहू ने यौ!

—कपार कहब! आइ न' मार्च नहि छिऐक अपजल? कहिया

विआह भेल रहय?

—ओ, हँ यौ। आब मोन पड़ल। मुदा तै स की? न' मार्च की अही बेर टा भेलैए?

—.....

—मुदा बात की छिऐक, से कहू ने?

—... ... ...

—आब बजबे ने करथिन। हिनका त'....

—की बाजू? जे तुक पर नहि से... जखन किछु कहए चाहैत छी तखन त' एतेक ने छिड़ियाय लगैत छी अहाँ जे...

—अहाँ लग नहि छिड़ियायब तँ ककरा लग छिड़ियायब?

—... ... .

—अच्छा आब नहि ओना करब। कहू, कहू ने...

—काल्हि खन सिनेमा जायब?

—कोन सिनेमा?

—अपना मैथिलीक 'ममता गाबय गीत' लागल छैक

—कत्त'...?

—'सोसाइटी' मे।

—की बात छिऐक? बड्ड ढरल छी आइ?

—कहिया नहि ढरल रहैत छी?

—तैओ...

—आइ अपना सबहक मैरेज-डे (विवाह-तिथि) थिक।

—ओ-ओ!

—हे!

—... ... ...

—एमहर देखू ने!

—... ... ...

—हूँ!

—उहुँ!

—हे-हूँ!

—बूझि लिय' आब। तैँ हमरा निन्नसँ उठौलहुँ अहाँ? हमरा

सूत' दीय'।

—... ... ...

—आइ वेतन भेटि गेल!

—अयँ सत्ते?

—सत्ते नहि तँ अहाँ केँ झूठ कहब?

—हम्मर सप्पत?

—फेर अहाँ सप्पत केँ नाँ लेलहुँ?

—अच्छा बिसरि गेल छलिऐक। सबटा भेटि गेल?

—उहुँ! दू मासक। दू मासक फेर फण्ड अओतैक, तखन भेटत। ता सबकेँ दू-दू मासक देलकै अछि।

—ह'-ह'-ह'। केहेन डिपाट अछि अहाँ केँ? एकटा नौकरियो भेटल त' तेहेन डिपाटमे जे माँछी मारैत रहू। सुपत दरमहो पर आफद!

—की करबै? तकर छै कोनो उपाय?

—... ... ...

—अच्छा छोडू ई मनहूस गप्प! कत्ते भेटल अछि?

—काटि-खोँटि क' बारह टा पात भेटल छल-ए। तीन टा त' साइन करिते देरी बड़ा बाबू ल' लेलक। भैयो गेल छलैक तीन मास। कहलिऐक... तब तक दो ले लीजिए बड़ा बाबू। एक पत्ता अगले महिने मे ले लीजिएगा...से नहि मानलक। कहलक जे...झाजी, सब घर तो एक्के लेखा है। लड़का का जनेऊ इसी महीनामे करना है। तहन तँ ओकरो देनाइ जरूरीए छलै किने?

—धौर, मार बाढ़नि ध' क'। एक त' लोककेँ पेट जपाल आ तै पर स' ई काजो-उदेम बथायले रहै छै। आइ की त' उपनैन। आइ की त' विआह। आइ की त' दुरागमन...

—श्रीवास्तवोजी केँ बहुत भ' गेल हेतैक!

—केकर? दोकनदार केँ?

—हँ!

—हँ, अढ़ाइक आसपास भैए जेतैक ओकरो।

—ओकरा तँ पूरा दैए देबैक। वैह बेचारा पार लगौलक-ए नहि त'

—हँ, कोन ठेकान छै? अगिलो माससँ जँ फेर वैह रबैया शुरू भ' जाइक?

—... ... ...

—आ घरक भाड़ा जे बाँकी छै से? आइयो मिसरजी आयल छलए। कहै छल-कत्त' नुकायल रहैत छथि झाजी? पाइ-ताइ नहि भेटलनि अछि? एह! ईहो केहेन सड़ल-सरँडी डिपाटमे फँसि गेलाह? बी. कम. क' क' त' लोक... हमरा त' भेल फाटय धरती आ...

—कए मासक हेतै?

—जनवरीएसँ बाँकी छै किने? जनवरी, फरवरी आ आब त' मार्चो

—तखन त' बहुत भ' जेतैक। बिजलीयोक बिल त' बाँकीए छै। करीब चारि सय लागि जेतैक।

—से की करबै? मानत नहि भरिसक। ओ त' मैथिले बूझि क' नहि किछु बजैए। नहि त' सामनेवला गुप्ताजीकेँ आइ बेदशा-बेदशा क' देलकै। बेचारी कोच पर बैसल हेत्ते-हेत्ते नोरे कनैत छलैए।

—के? गुप्ताजीक कनियाँ?

—हँ त'। गुप्ताजीक बेटी केवाड़ी धेने ठाढ़ छलैए आ मिसरजी बिखिन-बिखिन बात कहि क' गुप्ताजीकेँ गँजन करैत छलैए। कहैत छलै जे, रग मे दम नहीं है, तो डेरा खाली करो। हमको भाड़ेदार का कमी नही है। ओकर पाइ दैए टा देबैक। अहाँ आफिसमे रहब आ ओ एत' आबि क' हमरा। ओकरा एमहर अयबाक मौके नहि दिऔक। मैथिल छी ताहिसँ की? नीक लोक नहि अछि। मनुख जहन जानवर भ' जाइ छै, तहन अपन-आनक ख्याल रहै छै? हमरा बड़ डर होइए...।

—आ धुर बताहि। एत्ते कतौ लोक डेराय? तहन, हँ, पाइ दैए देबैक ओकरो।

—... ... ...

—अयँ यै!

—... ... ...

—आ गामो तँ पाइ पठेबाक छै। ओत्तहु तँ...। अइबेर धानो तँ नहि भेल छलैक। तीन-तीन टा पेट कोना चलैत होयतैक?

—से की करबैक? हम सब अपन देह चीरि लेब? बपांइ-बपांइ क' देह धुनैत छी दिन-राति तहन त'...। ताहूमे कहियो की त' फण्डे नै छै, कहियो की त'। आइ जँ ओ ट्यूशन नहि पकड़ने रहितहुँ, तँ बाल बच्चा

इलटि-बिलटि जइतय। अपना किसलयकेँ नाँ कटिए गेल रहैक किने इसकुलसँ? ओ तँ पैत रखलनि बेचारा चौधरीएजी, जे अगुरबारे एक मासक ट्यूशन-फीस दैत जाइत छल-ए। आ धान नहि भेलनि ताहिसँ की? गहूम-तहूत त' छले हेतनि। हमरा सबकेँ नहि लिखतीह, तेँ हम सब की नहि बुझैत छिएक? कहियो खेतक उपजा दिस हुलकियो देबए जाइत छियनि?

—... ... ...

—'भ' गेल बाजल?'

—'हमरा कोन काज अछि बजवाक? जाउने, जे फुरए, से करु ग' ने। के रोकैए? क' दियउ ग' मनिआर्डर। हमर किदन रन्नाकेँ परिबाहि नहि छनि। अपने भरिमास छिछियायल फिरैत छी किने? बड़ा बाबू, एक सय रुपैया दीजिए त' श्रीवास्तव जी कहुना अइ महीना भरि पार लगा दीय' आ तहन नहि देत त' हमरा कोचामे मुँह नुका क' हिचक' अबैत छी?'

—... ... .

—'ठीक छै। आबसँ नहि अहाँक कोँचामे मुँह नुका क' हिचक' आयब, सैह किने?'

—... ... ...

—'हुँह! अपना दर्दक उपभोक्ता आदमी अपने टा होइत अछि।'

—... ... ...

—'खौ तोरीकेँ। ककरा ले करैत छी एतेक? हमरा एकटा नीक बोलो कियो कहत, सेहो नहि? ओह! हे भगवान! आब नहि ऊघल होइए ई बोझ। आब नहि...।'

—'ई बुझितिऐक जे माय-बाप अपना माथ परसँ उतारि क' ककरो पर भार बनै लेल पटकि रहल अछि तँ सिनूरदानसँ पहिनहि माहुर खाक' पड़ि रहितहुँ। मुदा से तँ नहि बुझलिऐक। जरलाहाकेँ, सभ सख-सेहन्ता जरि-पजरि क' खाक-खाक भ' गेल। जेना मासे-मास दरमाहा उठा क' हमरे कोँचा लग कूड़ी लगा दैत छथि तहिना! भाग-भाग तँ एखन धरि एगो नीक साड़ियो नहि जनैत छियनि, ताही पर हम भार भ' गेल छियनि आ गुप्ताजी जकाँ जँ रविए-रवि सिनेमा जइतहुँ आ गज्जी-बंगलोर-सिल्क पहिरितहुँ तहन तँ की-की कहितथि, से नहि जानि! बच्चा सभ मास-मास धरि लिलोह भेल रहैए- माँछ-मासु लेँ। कहाँ होइए जे...'

—... ... ...

—'छ' माससँ त' बच्चाक देह पर वैह सूती झुलैए!'

—'आ गरेश अहाँक बच्चा नहि छी? हमरा तँ बेटा आ छोट भायमे कनियोँ अन्तर नहि बुझाइत अछि। आइ धरि गरेशकेँ एकटा पेन्टो हम बनवा देलिऐक अछि? लोक तँ यैह कहतैक जे बाप मरि गेलैक, भाय ताकब छोड़ि देलकैक। ओकर तँ भाइयो आ बापो हमहीँ छिऐक आब। हम नहि देखबै तँ के देखतै आब? आ मायकेँ जे बाबूजीक सराधमे नूआ भेलैक, तकर बादसँ एको पल्ला देलिऐक अछि? ओकर सभक हम क्यो नहि छिऐक?'

—'रहियनु ग' ने त'! हम कहाँ कहैत छी किछु? दोकानवालाकेँ द' क' तीन सय बाँचत—से तारसँ मनियाडर क' दियनु आ अपने सब पेटमे नूड़ी ठुसि-ठुसि क' पड़ि रहु!'

—... ... ...

—'हुँह! हमरा लग सुर्खूरू होअय आयल छलाहे—चलू काल्हि सिनेमा। जेना हम बड़ रकटल होइ सिनेमा लेल। जाउ, जाउ, देखि लेलहुँ हम सिनेमो आ पहिरि लेलहुँ बनारसी साड़ियो। मोर मन, मोर मन नहि पतियाय आ सौतिनिक टाङ दुनू झुलिते जाय हमर मोन पतियाब' आयल छलाह-ए। हम जेना चिन्हैत नहि होइयनि हिनका। हमर सख-सेहन्ता तँ तहिये जरि क' खकसियाह भेल जहिया आँहाँ सन निसोखिया हमर सौँथ छूलक...'

—... ... ...

—... ... ...

—'हँ, ठीके कहैत छी। अहूँक सख-सेहन्ता नहि पूरा क' सकलहुँ। बाबूजी 'बौआक कमाइ, बौआक कमाइ' करिते-करिते मुँह बाबि देलनि। मायकेँ हमरा सन पूतक अछैत वनके पात तोड़य पड़ैत छै। गरेश जिलामे स्थान अनलक तैओ नीक कॉलेजमे नहि एडमीशन दिया सकलिऐक जे जनता कॉलेज सन सड़ल-सरंड़ी कॉलेजमे पड़ल अछि...'

—...

—'सत्ते हम किच्छु नहि क' सकलहुँ। एकटा नोकरीयो भेल तँ तेहेन जे अपना बेटोकेँ समय पर कपड़ा-लत्ता नहि जुमा पबैत छी। हम बेकार लोक छी, फालतू छी...'

—... ... ...

—'छोड़ू ई सब। हमर जीह पर बज्जर खसय। किए हम बिक्ख उगिलए लगलहुँ आइ?'

—'नै, अहाँ सत्ते बजलहुँ अछि। पाइये छिऐक। पाइये धूरी छिऐक। एही अक्षक चारू कात जिनगीक वृत्तचक्र चकभाउर कटैत अछि। आँहाँ सत्ते बजलहुँ अछि। हम... हम सत्ते बड़ निसोख छी। उसठ्ठ छी। चलू। काल्हिए चलू बजार। एकटा गज्जी-सिल्क कीनि लिय'। देखल जेतैक...।'

—'आब चुप्पो रहू! बहुत भेल। हमरा माफ क' दीय'...'

—'नहि-नहि, अहाँक कोनो गलती नहि अछि। काल्हि हम सिनेमा जयबे करब। काल्हि हम मासु अनबे करब। काल्हि हम'

—'हमरा जीब' देब कि नहि अहाँ? एना नहि करू। एना नहि बाजू। आँहाँकेँ हमरे सर-समाङक सप्पत छी।'

—'हे-हे...। फेर अहाँ सप्पत। अहाँक समाङ एतेक खस्ता नहि अछि, से किए नै बुझैत छिऐक अहाँ?'

—... ... ...

—'श्रीमतीजी, आइ न' मार्च छिऐक!'

—... ... ...

—'सुनितो छिऐक की? अपना सभक 'मेरैज-डे' छी आइ। आरे आँहाँ कनैत किए छी? ओना नहि करू। आँहाँकेँ कनैत देखिक' हमर अतमा खँघरए लगैए। अहीँ आँचरसँ आँखि पोछ' लागब तखन हम...। 'मैरेज-डे' पर साड़ी-साया-ब्लाउज नहि द' पौलहुँ तँ की हेतैक? हमर हृदय तँ अछि किने? ओ त' अहाँक छी। अहीँ टाक छी।'

—... ....

—'आइ नहि कानू। हमर रानी ने, आइ नहि कानू'

—... ... ...

—'अहाँ बताहि छी? आइ अपना सभक 'मैरेज-डे' छी किने'

—'छी त' की?'

—'किच्छु नहि?'

—'उहुँ!'

—'हँ, डेढ़ बजैत छै!'

—'त' सूति रहू। हैया गेरुआ अछि। हैया चद्दरि अछि?'

—'से त' बुझलहुँ। गेरुआ अछि, चद्दरि अछि। मुदा...'
—'मुदा की?'
—'अहाँ कहाँ छी?'
—'चुपचाप सुतू से कहि दैत छी। नहि तँ बातसँ बेजाय भ' जायत।'
—'से त' सुतिते छी!'
—'तखन?'
—'तखन सोचैत छी, 'मैरेज-डे' इजोतमे मनाबी कि...'
—'जाउ, अहाँ बड्ड अथी छी।'
—'कथी?'
—'मेथ्थी। आर की?'

•

मिथिला मिहिर, 26 जून—2 जुलाई, 1983 ई.

टा-टा

—आँहाँ?

—आँहाँ?

—हँ!

—हँ!

— कत' आयल रही?

—ओहिना!

—... ... ...

असगर बैसल-बैसल बोर भ' गेलहुँ, त' सोचलहुँ गाँधी-मैदानसँ बूलि-टहलि आबी!

—... ... ...

—अहाँक ठोर पर फुफड़ी किए पड़ल अछि एना?

—ओकर काज छिऐक पड़नाइ!

—... ... ...

—आँहाँ एखन करैत की छी?

—सिन्हा-लाइब्रेरीमे दरखास्त तैयार क' क' लिफाफमे बन्न करैत छी आ कहियो-काल क' गाँधी-मैदानमे बेंच पर बैसि क' चिनियाँ बदाम खा लेल करैत छी।

—किए? नौकरी नहि भेटल अछि की?

—खादीक कुर्त्ता, हैण्डलूमक पैजामा, से कहबाक लेल काफी नहि छैक की?

—... ... .

—ओ कत' रहैत छथि?

—के? ओ?

—हूँ!

—दिल्लीमे। बड्ड व्यस्त रहैत छथि। हरदम टूरे पर।

—कहियो-काल अबैत-जाइत रहैत छथि किने?

—'हँ, कहियो-काल।'

—'पाइ-ताइ खूब होइत छनि किने?'

—'हँ!'

—'आइली-बाइली?'

—... ....

—'सुखायल घावक खैंठी नहि ओदारबाक चाही!'

—'से की?'

—'सैह!'

—'अहाँक बाबूजी तँ कहनहि रहथिन जे एम.ए.पास वरसँ की विआह करब बेटीक? दोसर वर जे छै पटनहि मे, एम.बी.ए. क' रहल छै। अफरात पाइ हेतैक। आइलियो-बाइलीक इत्ता नहि। आ तेँ ओ हमरासँ छीनियो लेने रहथि अहाँकेँ!'

—'छोड़ू आब ओ गप्प-सप्प।'

—... ... ...

—'हँ, ठीके कहैत छी!'

—'की?'

—'ओइ गप्प-सप्पसँ की फायदा?'

—... ... ...

—'हौ, चिनियाँ-बदामवला!'

—'जी हजूर!'

—'एक सय ग्राम!'

—'पाइ हम दिऐक?'

—'उहुँ!'

—... ... ...

—'ई अहींवला औंठी छी।'

—'हैत!'

—'आँहाँ जे विवाहमे हमरा 'प्रेजेन्ट' कयने रही, सैह!'

—'हमरा खूब नीक जकाँ मोन अछि। ओना औंठीक बहाने हमरा अहाँ सबकिछु मोन पाड़ैत छी, ताहि लेल धन्यवाद!'

—'तकर जरूरति नहि छैक!'

—'तैओ!'

—... ... ...

—'ई कतेक दिनक अछि? बेटा थिक कि बेटी?'

—'दू पुरलैए। सन्तान-सन्तान होइ छै। बेटा हो कि बेटी?'

—'फैशन आइ काल्हि धोखादायक होइत छै किने? तेँ... यैहटा किने आकि...'

—'एखन कोनो संभावना नहि?'

—... ... ...

—'मेल रहैए किने?'

—'उँ! हूँ-हूँ! ...सब ठीक छै!'

—... ... ...

—'अहाँ विवाह नहि केलहुँ की?'

—... ... ...

—'खाउ ने, खाउ ने! खेनाइ किऐक छोड़ि देलिऐक?'

—... ... ...

—'हमर प्रश्नक जवाब नहि देलहुँ?'

—'की जवाब दीअ'? जवाब देबा ले अछिए की?'

—'एखन करबाक विचार नहि अछि की?'

—'एखन की? कहियो नहि।'

—'नै-नै। एहेन बात नै बाजू!'

—'सुझावक लेल धन्यवाद!'

—... ....

—'सर्भिसक मादे?...'

—'किच्छु नहि। मिथिला युनिवर्सिटीमे इन्टरभ्यू छल। बस भाड़ा सेहो बेकार! प्रोफेसरी सँ किरानीगीरी पर अयलहुँ, सेहो नहि सस्ता छैक। सबठाँ वैह बात! पैरवी कि पाई। आ हम तँ दुनूमे...'

—'कत्ते पाइक काज हैत?'

—'धन्यवाद!'

—'एकटा मौका मंगैत छी!'

—'जहिया मौका देने रही किछु करबाक, तहिया तँ...

समाज-परिवारक बन्हेज तोड़ि नहि सकलहुँ अहाँ आ आब...'

—... ... ...

—'हम कोनो प्रार्थनो करै जोकरक नहि छी?'

—'हमरा आब सहानुभूति तीत अकत्त लगैत अछि।'

—... ... ...

—'हम एखनहुँ अहाँकेँ...'

—'व्यर्थ!'

—'ताजिन्दगी...'

—'बेकार।'

—'हम अहाँकेँ किछु नहि द' सकलहुँ!'

—बेरोजगार लोकक लेल ई कोनो नव बात नहि। ओ आदमी नहि होइत अछि। ककरोसँ किछु 'रिटर्न'क आशा नहि रखैत अछि!'

—'एना नहि बाजू!'

—'ओकरा प्रेम नहि होइत छै! ओकरा सेक्स नहि होइत छै!'

—... ... ...

—'हम कहियो मोन पड़ैत छी?'

—किछु काल ले' ट्रेनमे ककरोसँ भेंट होइ छै, से तँ लोक...आ अहाँक संग तँ... मुदा छोड़ू! ओ सब मोन पाड़लासँ की फायदा?'

—'सबकिछु फायदे लेल नहि कयल जाइत छै।'

—... ... ...

—'अहाँ आ ओ सुखी छी किने? ओ खूब मानैत छथि किने?'

—अहाँकेँ जाहि उत्तरसँ संतोष हो, सैह ल' लीय'।'

—'मुदा!'

—'उँह। छोड़ू ओ सब! अपन-अपन सीमा होइत छै।'

—'अच्छा, आब चलैत छी। सिन्हा लाइब्रेरी खूजि गेल हेतैक।'

—... ... ...?

—... ... ...?

•

मिथिला मिहिर, 21-27 अगस्त, 1983 ई.

लुट्टिस-केस

तोँ छनमरा कोदारि स' कोदरबाहि करैत चकलाक-चकला उनटौने जा रहल छल' भजार। फेर झटकि-झटकि माटि सँ अपना गामक छहर केँ पुष्ट कयने जा रहल छल'। भरल-भरल पथिया माटि कूना, लूटर, गेनालाल, झंठू, सूनर, बौअनमा, फूलन, टुनटुन आ एहने कतेको भोलंटीयरक माथ पर सह द' द' उठा क' छहर पर फेकबौने जा रहल छल'। तोँ एकरा अपन काज बुझैत छलहक किऐक तँ एही छहरक मजगूती पर तोहर सबहक आ दसकोसी लोकक जीवन-मरन अरकल रहै छै। तें तोँ माइन्जनक काज करैत हकासलो-पियासल रहि क' कोदारि पकड़ने छल'।

मुदा तोरा नहि बूझल छल' जे कमला केँ बान्ह'वला ई बान्ह ओहने भ' सकैत छलै, जेहने ओरसीयर सैहैब, ठिकेदार सैहैब आ मुखिया भोला राउत चाहितथिन। तेँ तोरा ई तीनू गोटे बड़ कसिक' देबारने रहथुन जे जरूरति सँ बेशी माटि तोँ छहर पर किऐक फेकबौलह? तोहर मन मोचड़ा-सोचड़ा क' कुसियार भ' गेल रह' आ रस आँखि सँ टप-टप चूबि गेल रह'। तोँ जे चाहल' से अनर्गल रहैक। तेँ छहर ओतबा पुष्ट नहि भ' सकलै ढरानक बीच मे, जतबा तोँ चाहैत छल'। रिंग-बान्ह गहनमरू बच्चाक टाङ बनि क' रहि गेल छलैक। आ फाटक जे गरुकालक सहारा छलैक, कोनो डँड़खिल बच्चाक बेसम्हार डोराडरि जकाँ लड़बड़ करैत छहरक बाल-बिधवा बहिन बनल बौक छलैक।

ओही साल मुखियाजी महींसक लेल सिकमी घर बन्हलनि। ओही साल ओरसीयर सैहैब तीन-महला पिटलनि।

आ तोँ? तोँ की केल' भजार अमरित राउत?

गढ़िया टोलक एक्कैस टा अनटुट्टू जवानक माइन्जन बनल अपना आँखिक समक्षहिं गढ़ियाक लुटरी आ पँचकौरिया केँ टिनही बट्टा ल' क' झंझारपुर टीशन दिस जाइत देखल' —भीख माङक लेल। तोहर घरवाली डोका के आड़िये-आड़िये कचिया हाँसू ल' ल' गोज्जैत रहलथुन आ बोनही पोखड़ि मे करहड़-सारुख उखाड़ैत रहलथुन। तोँ बकरी-पाठीक डोरी पकड़ि-पकड़ि बत्तू लग जा-जा 'उड़ीत-उड़ीत' करैत रहल'। छहर पर हेंजक-हेंज मोटर-कार आबि-आबि

छहरक तन्दुरुस्तीक साटीपीकट दैत रहलैक।

आइ तोँ कमलाक तथाकथित छहर पर बैसल एकटा महासमुद्र मे हेरायल छ'। तोहर गढ़ियाटोल जलोदीप भेल छ' भजार। मुखिया भोला राउतक कोठा चमचम क' रहल छनि। कमलाक पानि छम-छम-छम-छम बहि रहल छनि। तोरा आँखि मे मुखियाजीक छत पर चहकैत फुद्दी सन-सन बेटी-धी सब गड़ैत किए छ' भजार? ओ सलबार-फराक, तरह-तरह के शहरी डिरेस, जलझम्प मे रङ-विरङक ओढ़नी उड़ियबैत आ कमलाक वरदानक आनन्द लैत शहरी लड़िकीक 'लूडो-लूडो' खेलेनाइ आ अँचरा पहिरने छहरे पर झुटकाक चीछ पारि-पारि किट-किट-थाः' 'खेलेनाइ'— दुनू मे तोरा कोनो साम्यता बुझाइत छै?

भजार! मुखिया भोला राउतक बेटी मेनका अपना बच्चा केँ जन्म लैत देरी अमूल-दूध शुरू क' देलथिन आ अपने दूध सुखेबाक गोटी खा क' शरीर बचा लेलनि। तोहर रामपरी भगबा पहिरने मथाहाथ धेने छहरक कातक बगूरक गाछ तर बैसल छ'। हाथ मे बकरी रोम' लेल एकटा सटका। तोहर बड़की बेटी लालदाइ मैल-चिक्कट आ गुदराही नूआ पहिरने पेटफुल्ला छौंड़ा केँ छाती लगौने रहैत छ'। छौड़ा दूधक अभाव मे कटकटा क' खून घिचैत रहै छै आ तोँ घर-बाहर करैत रहै छ'। गरीब-गुरबा केँ लाज-लेहाज उठा लेब' पड़ै छै भजार! तोरा लालदाइ के साया-बेलाउज पहुना कत' सँ देत'? मुखिया भोला राउतक जमाय पी.डब्लू.डी. मे छथिन।

मुखियाजी घरक दालिक छौंक तोरा नाक मे सुरसुरी लगा रहल छ' मुदा तोँ ओइदिनक स्मृति मे हेरायल छ' जहिया छहरक मटिकट्टीक रुपैया बँटाइत रहैक। ओरसीयर सैहैब, ठिकेदार सैहैब आ मुखियाजी तोरा डिम्हा पर नाचि रहल छथुन। तोँ अपना पुतलीक सामने खाली लाल-हरियर नमरी लोट सब उड़ैत देखि रहल छ'। खबरदार! हाथ नहि बढ़ा सकैत छ'। ई मौलिक अधिकार हुनके तीनू गोटे केँ छनि। पल खसिते गंगासागर मे उगैत कपिल मुनिक मंडिल जेकाँ एकटा कोठा उगि अबै छै, जीप आ जेलो उगै छै। दोहाइ कमला माइ के छी। तोरे परसादे!

फेर राता-राती जलोदीप। रिंग-बान्ह निपत्ता। फाटकक जलसमाधि छहर मे भोंकाँड़। वाटर-वेजक ट्रकक-ट्रक बलुआही बोड़ा स' फाटक आ भोकाँड़ के गहल जेबाक फुसियांही प्रयास। सबटा सपने छिय' भजार! फेर फाटक छहर, बोड़ा, भोंकाँड़-सबकिछु एकार्णावा। गढ़िया टोलक एकचारी सबहक कमलाक

रेत पर दाहा खेलेनाइ। छागर-पाठीक मेमियाइत आर्तनाद। डँड़लिब्बी बुढ़ियाक भासब। गेनमाक घरखस्सी आ खम्हा तर मे ओकर माय साफ! जय कमला! बलि लिय' डँड़लिब्बी बुढ़ियाक। बलि लिय' गेनमा माइक। बिखधर पठाउ! ऊँच जगह पर! छहर पर पठाउ। एत' लुटरा ओंघरायल अछि। बिष्ठीये टा छै। सौंसे देह बिखधरेक कर्मक्षेत्र। हे नागदेवता! हबकू-हबकू। झटका लाधू हे वरुण देवता। देखब। मुखियाजीक पूण-परतापे कहीं उबेर ने भ' जाय। दुइयो दिन तक लधने रहू। पूजा धनिकहे टोल स' भेटत। हँ'...।

अयँ हो भजार अमरित राउत! तोँ खाली भोतिएले रहब'? अरे समाचारो-तमाचारो त' सूनल करह। देश एकैसम शताब्दी मे जा रहल छै। आब कहिया बुझबहक एकैसम शताब्दी? जहिया सिरी सोखा अर्थी उठौथुन तहिया? एक जूम तमाकुल चुना क' ठोर मे दैह आ दू बेर थोपड़ी बजाबह। तुरन्त हेलीकप्टर नाच' लगत' माथ पर। पानिक तर मे निपत्ता गढ़ियागाम जगजियार भ' जैत एकबार मे। पटना-दिल्ली मे प्रसिद्ध। आ खस' लगत सलाइ, चूड़ा, चिन्नी, कम्मल, पन्नी, साड़ी, धोती, पाँवरोटी।

दोसर थोपड़ी बजेब' त' बलाउकक नाव आब' लगत' एक-दू ...तीन, अन्तहीन पतियानी। नावक-नाव गहूँम चाउर। खराँत। सभ्य भाषा मे रिलीफ। तरि जयब'। भरि सालक खोरिस आबि रहल छ'। कत' क' रखब'? कमला मइया धन ल' क' अयलथुन्ह अछि। कमला माइ कोसी माइ। इन्नर देवता धन्न छी।

भजार! हे वैह अयलथुन सी.ओ सैहैब। एस.डी.ओ. सैहेब। मन्तरी एमेले मुखमन्तरी सैहैब। अइ जिनगी मे देखियौ सकितहक कहियो? देवदूत सब थिकाह। पयर पकड़'। देखहक मुखियाजीक माला कतेक मोट छनि। हाथीक सूँढ़। पहिराइये देलथिन सी.ओ. सैहैब के। आब भाषण क' रहल छथुन। सब कल जोड़ने एकटङ्गा देने ठाढ़। हजूर माय बाप! विष्णुक अवतार। विदा भ' गेलथिन सरकार। ओ! चौबीस ठाँ टूटल छइ छहर किने? सबठाँ ने इन्कारी जरूरी छइ। बाढ़िये तेहन छैक अइ बेर त'। फेर सबहक मरम्मति जरूरी हेतैक।

भजार! तोँ कत' भोतिआयल छ'? एना बुकौर किए लागल छ'? तोरा तँ परजातन्त्र मे बहुत छूट छ'। चाह' त' भुखलो मरि सकै छ'। डुबियो सकै छ' बाढ़िमे। होश कर' भजार। समाचार सून' समाचार। समाचार नहि सुनल' तँ मुख्यो समाचार सून' कम-सँ-कम।

—'हरियाणा-गुजरात केँ सुखाड़ सँ लड़बाक हेतु प्रधानमंत्री-कोष सँ

पचास करोड़ रुपया आवंटित। बिहारक मुख्यमंत्री द्वारा राज्यक बाढ़ि प्रभावित इलाकाक हवाइ-सर्वेक्षण। लोक सभ केँ सुरक्षित स्थान पर पहुँचाब' मे सेना द्वारा मोटर-बोट आ हेलीकाप्टरक उपयोग। हेलीकाप्टर द्वारा भोजनक पैकेट खसाओल जायब तथा मुख्यमंत्री द्वारा राहत कार्य पर संतोष व्यक्त। कमला-बलानक जलस्तर झंझारपुर मे खतराक निशान सँ बासठि सेंटीमीटर ऊपर।

भजार! ऊपर नहि ताक'। हेलीकाप्टर सँ पैकेट खसतै। आँखि फुटि जयत'। तकबेक छ त' मुखिया भोला राउतक कोठा दिस ताक'। बाढ़िक महासमुद्र केँ तकैत चकविदोर लागल डोका-सन-सन नयना। कुर्सी तोड़ैत जुबक। जुबक केँ 'पापा-पापा करैत मुखियाजीक नतिनी। सी.ओ. क जीपक प्रतीक्षा करैत मुखियाजीक चंचल नजरि। आँखि जुड़ा जयत' भजार अमरित राउत।

कात भ' जा भजार। टरक अबै छै। माइन्जन भ' क' छहर पर बैसल छहक। टरक मुखियाजीक घर लग ठहरतै। पक्का देखिहक। लोभ-लाभ नहि कर'। तोँ गढ़ियाटोलक माइन्जन छ'। भोला राउत पंचायत भरिक मुखिया छथि। बेरबाद क' देथुन।

वाह रे वाह। भजार! देखहक अन्दाज ओत्तहि ठहरलै ने? खराँत हेतै। डीलर—सैहैब सेहो आबि रहल छथि। वैह पीपड़पाँती लग। आब क्यो भूखल नहि मरतै। आर कत' हेतै बँटवारा? छहरे पर हेतै की? मुखियाजी आइ बोरि देथिन सभकेँ। टरक आपस झंझारपुर पहुँचबो ने करतै कि बोरा सभ मुखियाजीक दलान पहुँचि जेतै। आर तोरा सब केँ खराँत द' क' की हेतै? राम-नामक माला जप'। अन्तकाल पछताएगा जब तन जइहेँ छूट।

आरेबा! भजार। सनकि गेलह अछि की? ई की फुरेलह तोरा? सुरफुरा क' ठाढ़ भेल' आ अपना हेँड़ दिस बिदा भ' गेल'। चुपचाप गबदी लाधि क' परजातंत्री तमस्सा देखब' से नहि?

साहित्यकार सब त' सैह करैत छथिन। सीख' किच्छु। आहिरेबा! अयँ हौ, लूटर, गेनालाल, टुनटुन, फूलन राउत, कनहू ठाकुर, हजरा सबके किए भजा रहल छहक हौ? की करबहक? किछु विचार छ' की? हे कमलेसरी! विवेक दिऔ एकरा सबके। ई सब तँ बोरिया-ढाकी ल' ल' टरके दिस भागल जा रहल छै। भरिसक लुट्टिस करतै। मुखियाजी, डीलर सैहैब केँ शुभ-शुभ नै जाय देतै ई सेनमा-जेरबा सब। हौ भजार तोँहू अनहेर करैत छ'। तोरा पेट मे खलबल्ली मचल छ' त' ढकोस' कमलाक पानि आँजुरे-आँजुर। सरकार लेल कोनो तोँही

सबटा नै ने छहक? आरे बंगला देस केँ दस हजार टन चाउर पठेबाक छै। नेपाल केँ दस हजार टन गहूँमक मदति करबाक छै। देश ओहिना दक्षिण-एशियाक नेता छ'? देखहक ग' इथोपिया मे की बितैत छै? ओइ स' त' सयबर नीक छै मिथिलाक हालति? एखन लुटरा के पेटकटारी लाग' दहक। फेर हरित-क्रांति हेत' अपनो ओइठाम। नेपाल सरकार स' समझौता। कमला-बलान बराज। पनिबिजली परजेक्ट। कोसीयो परजेक्ट स' विशाल-विशाल। खाइ-पीबै जैह'। बाढ़ि निपत्ता। हाथ-हाथ केँ काज। पेट-पेट केँ दाना। तहन प्रिटोरियाबला जाति आ वर्णभेद अपना ओइठाम नहि रहतैक। मुखियाजी मध्यकालीन सामन्ती मानसिकताक संवाहक नहि रहताह। जननेता रहताह। घबड़ाब' नहि। मोन थीर कर'। तोँ मरियो गेल' त' की? पोता-छेरपोता त' ओ स्वर्ण-युग देखत'? तोँ स्वर्ग स' हँसिह' खुशहाली देखि-देखि क'।

देख' भजार। मुखियाजी, डीलर सैहैब, भुटाइ नेता आबि गेल छथि टरक लग। ओ सब आब लूट' देथुन? ओना चारू टोलक गरीबक हेंज बोरिया-पथिया ल' क' आबि गेल छ'। मानै नै जेतै बुझाइए। मुदा चलत' तोरा सबहक? भुटाइ नेता मुखियाजी सँ मेल केने छ' से बुझलो छ' तोरा? तोंही सब लूटि लेबहक त' मुखिया भोला राउत जे परतापुर सँ ढक बुनबौने छथिन, से खालिए रहतै अइ साल की? फेर नातिन जे अठारहम मे पयर देने छनि, तकर की हेतै? सी.ओ.; बी.डी.ओ.क लेल भरिसाल कचौड़ी के छनतनि? कत' सँ छनतनि? छ' पैरुख?

अरे-अरे! बताह भ' गेल' भजार हौ? तोँ तँ हुर्र-बरेड़ा मचा देलहक। डलेभर-खलासी-मुखिया-डीलर सभ भागि गेल' मुखियाजीक कोठा पर आ होलिया रहल छ' ओत्तहि स'— अनाज लुटैत गरीबहा सब के।

गरीबहो सब मुदा बुढ़बा आङुर किए देखा रहल छनि हुनका सबके? भाइ अमरित राउत! सब बेर बाढ़ि मे ई चारि-पाँच गोटे सभटा खराँत गब क' जाइ छलै। एना जे अइबेर केलहक-ए से आगरिम द' सोचबो केलहक-ए जे की हेत'? कहियो एहेन सुनानहु-देखनहु छलहक? बोनियो मे मरुआ-खेसारी-अकटा-मिसिया, ई सब गरीब-गुरबाक जिनिस भेलैक!

भजार, टरक घूमि गेल'। खूम रेस केलक'। लैह ने! आब त' धूरो-गर्दा निपत्ता भ' गेल'। बुझैत जइहक महिरम आब। मुदा तोँहू धह-धह जरैत छ' भजार। अपना जिनगी मे कहियो हारि नहि मानलह। आब तोँ गढ़ियाटोल आ

बभनटोलीक गरिबहा सभक सङोर क' रहल छ', से कर'। सबत' एक्कहि विपत्तिक मारल छ'। मुदा चेति जाह। चेत' भजार। झंझारपुर मे लुट्टिस भेलैए गोदामक। ओत्तहु नहि छोड़लकै लुटनिहार सबकेँ। हे वैह आगू-आगू दूटा जीप आबि रहल छै। भाग'-भाग'। मुखियाजीक शरण मे खस' ग' एखनो। आ कि कमलेसरीएक शरण लैत जा। तेसर शरण जहले टा छ' भजार।

मुदा मानि गेलिय' तोरो माइन्जनी। अइ पैंतालिसम बर्खक उमेर मे तोरो नेतागिरी फुरेलह अछि। खद्दरधारी नेता जकाँ नहि बनि सकब', से कहि दैत छिय'। ओ सेहन्ता नहिये रखिह'। ओना जे इच्छा तोहर।

हौ भजार! सब उर्दीधारी पुलिसबे सब उतरैत छ' जीप स'। एँह एँह! बन्दूक देखहक। हाकिमो छै। दरोगा, सी.ओ. सब एम्हरे लफरल अबैत छै। आब की करब' भजार अमरित राउत?

हद्द भ' गेल। तोरो जीवट कहल नहि जाय। अयँ हौ, सोंसे बभनटोली आ गढ़ियाटोल पतियानी मे ठाढ़ भ' गेलै। तोँ त' जुलूस बना लेलहक हौ! सब नारा लगबै छहक! मुदा मुखियाजी आ भुटाइ नेता त' गबाही देबे करथुन आ तोरा सबके पकड़ि क' लइए जेत'।

छोड़ मरदे। जा ने जहले। एत' छहर पर रौद मे टटा क' बाढ़ि मे दहाक' आ बरसा मे सड़िक' मरइते जेब' की ने? आ जहल मे दस दिन खिचड़ियो त' भरि तोजी भेटत'। रोहानी घूरि जेत' भजार।

आब त' तोरो लग आबि गेल' उर्दीधारी सब हौ। आगू-आगू डी.एस. पी. छिय'। तोरे लग आबि क' ठाढ़ भ' गेल' हौ।

—'अयँ हौ खरात त' सगर गाम लेल छलैक। किए लूटि लेलहक तोँ सब?'

—'जै लुटलिऐक हजूर तैं ने अखनी जबाब दै लागी ठाढ़ छिऐ ग'? नै तं भुखले अँतड़ी मचोड़ि क' मरि गेल रहितिऐक। मुखियाजी के हाथ मे टरक पड़ितै हजूर त' एको कनमा हमरा आउर के नै ने भेटितै।'

—'के सब लूटि मे छल-ए? हम सबके जहल ल' जेबै?'

—'ई पतियानी मे ठाढ़ सब मौगी-मरद-बच्चा-बूढ़। सबके ल' चलू हजूर। अपना बखराक सरकारी अन्न खेलाक कारणे जौँ जहले जेबै त' खिचड़ियो सँ तँ जान बचतै! एत' तँ कफन आ खराँत दुनू मे सँ किछुओ ने भेटतै। अइ देस मे जे अपराधी भ' क' रहै छै, तकरे सुख आ परतिष्ठा दुनू भेटै

छै। नीक लोक भ' क' गुजर केनाइ बड़ मोसकिल छै। ओरसीयर सैहेब, ठीकेदार सैहैब आ मुखिया भोला राउत एहि छहरक मटिकट्टी मे लाखो लुटलनि अछि। की केलिऐ हजूर हुनका आउर के? कानूनक आँखि कत' गेलै तै काल? हम कहै छी, रपट लिखू हजूर। पकरू हिनका सबके त' बूझी हम हजूर! गरुकाल मे चारि किलो गहूँम ल' क' लोक अपन जान बचेलकै, तकर सजाय देबै हजूर? ई छहर ककरा लूटिक कारणेँ टुटलैए? बी.डी.ओ. सैहैब के कहलियनि त' किच्छु नहि बजला हजूर आ काज ओहने भ' गेलै जेहने ओरसीयर कहने रहै हजूर। अबलाहा के नोचि क' सब क्यो खाय आ बलमन्ता भीड़ कियो नहि जाय। तखन हम सब गोरे तैयार छी। जहाँ ल' जेबै, तहाँ जेबै हजूर। चलै चल सब गोरे।'

भजार! थड़थड़ा देलहुन तोँ सी.ओ. सैहैब के। बोलता बन्न भ' गेलनि। जलूस आगू बढ़ि रहल छ' भजार। दोबगली पुलिसबा सब छ'। सम्हार' भजार!

आरे! आरे!

आब त' 'इन्किलाफ-जिन्दाबाद' भ' रहल छै...?

•

गराड़

जखन क्यो हमरा कहैत अछि—'वाह! पूर्ण कलाकार छी अपने।' तँ हमर अँतरी-भोंतरी उसनलहा आलू जकाँ भफाय लगैए। ओना भाफ हमरा मुँहसँ निकलैत नहि अछि बाहर। मुदा अइ प्रशंसाक अर्थ हमरा यैह लगैछ, जे कहनिहार बूझि गेल छथि—जे हम असामान्य जीवन जिबैत छी।

—'जे हम प्रतिष्ठा आ दारिद्रयक जाँतमे पिसाइत निम्न-मध्यमवर्गीय लोक छी।'

—'जे हम... मुदा... छोडू ई सब छोडू!'

बी.कॉम.के साटीपीकट ल' क' चारि साल धरि जहन कलकत्ताक सड़क बीते-बीत धङलाक बादो कोनो गोड़ा नहि बैसल, तखन हम निस्तुकी कयने रही—कलकत्ता छोड़ि कतहु अन्यत्र प्रयास करबाक।

तावत मुदा संयोगवश हमरा धनबादसँ निमंत्रण आयल रहय, विद्यापति पर्वमे भाग लेबाक हेतु।

जे रोगीकेँ भाबय, से वैदा फरमाबय।

लेलहुँ ब्रीफ-केस। बिदा भ' गेलहुँ। बेरोजगार लोककेँ अरजाले-खरजाले कतेक?

'कंग्रेचुलेशन्स ए लॉट। बहुत खुशी भेल एहेन पूर्ण कलाकारसँ भेंट क' क'। —नयन बाबू हमरासँ हाथ मिलबैत कहने रहथि, जहन हम मंचसँ गीत-गाबि उतरल रही।

हमर मुँह 'फक्' भ' गेल रहय—जहन ओ हमारासँ पता मंगने रहथि। हमरा भेल रहय जे ओ हॉल कुम्हारक चाक जकाँ नाचि रहल छै जहन—बेरोजगार छी की? —ओ पुछने रहथि।

...आ जवाबक एवजमे हमर फुफड़ी पड़ल ठोर कने आर चियरि गेल रहय। हमर चोटकल गाल कने आर चोटकि गेल रहय। हमर खुटिएल दाढ़ी कने आर बदरंग भ' गेल रहय। आ, अंततः बहुत प्रयासक बाद मुसकिआयल रही हम—फीका-फीका सन।

हमर आँखि डबडबा गेल रहय— 'कोनो चिन्ता नहि। हम छी किने?

सभ व्यवस्था भ' जेतैक।' – आश्वासन जखन नयन बाबू सन बी.सी.सी.एल. क वरीय अधिकारी हमरा पीठ ठोकि क' देने रहथि। क्षण भरिक लेल ओहि दू बजे रातिमे हमरा आँखिक सोझाँ आशाक सूर्योदयक अरूण किरण छिटक' लागल रहय, जखन ओ कहने रहथि– 'ताबे हमरे डेरा पर रहू। धीया-पुताकेँ देखि देबैक। फेर सब ठीक भ' जेतैक। कोलफिल्ड छिऐक। कतौ-ने-कतौ गर लागिए जेतैक।'

कोनो बेरोजगार ग्रेजुएट एहिसँ बेशी की आशा करत ककरहुसँ?

...आ प्राते भेने हम रुन्नूकेँ रटब' लागल रही–

बा-बा ब्लैक शिप

हैव यू एनी वुल...

पम्मीकेँ पढ़ाब' लागल रही–

जे.ओ.बी. जॉब–जॉब माने नौकरी

एस फॉर–सरभेंट, सरभेंट माने नोकर

टी फॉर–टीचर, टीचर माने शिक्षक

–'कि पम्मी पूछि देने रहय, 'सर जी, अहाँ सरभेंट छिऐ कि टीचर?'

–'हम टीचर छी किने?'

–'तहन मम्मी अहाँकेँ हमरा सबकेँ पार्क घुमा लाबैले' किए कहैए?'

... ...? ... ...?

छ' मास बीति गेल रहैक।

कोनो बेरोजगार लोकक लेल छ' मास एकटा दीर्घ अन्तराल होइत छै। से एहि दीर्घ अन्तरालमे हम कएबेर नोरे नहायल रही, जहिया-जहिया गामक चिट्ठी समाद अनने रहय–

–'मायक दम्मा बढ़बाक।'

–'तीन-तीन साँझ चुल्हा नेबार हेबाक।'

–'क्के-क्के दिन पोरो आ करमी साग पर खेपबाक।'

–'बाबूजीक गामे-गामे छिछियाक' पेट पोसबाक।'

–'जीवनाथक पेंट-बुश्शर्ट लुतरी-लुतरी हेबाक।'

–'फीसक अभावमे इसकुलसँ जीवनाथक नाँ कटबाक।'

–'फरीक द्वारा पंचकठबा खेतक आड़ि काटि लेबाक।'

–'मायक गाम भरिमे कुटान-पिसान करबाक।'

—'मुखियाक सूदिक चिट्ठी तमादी हेबाक।'

—'सरपंच द्वारा रुपैया लेल मायक बेटी-रोटी एकट्ठा करबाक।'

—'कमलाक बाढ़िमे फेर अल्हुआ आ खेरही भासि जेबाक।'

—'बिहाड़िमे घर परसँ छाड़नि उड़ि जेबाक आ परदा टाट खसबाक।'

—'आर नहि जानि कतेक की सब?'

आ हम संतोषो देबाक लेल पचासो टाका मनिआर्डर नहि क' सकल रही। केने रही दस टाका। हुँह! हमर झुझुआन रकम देखि क' पोस्ट-मास्टरो जे नजरि फेकल करय—से हम जिनगी भरि नहि बिसरि सकैत छी।

हमर दिमागक बिड़हाड़ामे आरो बहुत किछु अछि, जे हम जिनगी भरि नहि बिसरि सकैत छी। हम की, क्यो एकटा बेकार लोक नहि बिसरि सकैछ।

कहब-की यौ?

—'त' नयन बाबू परम उपकारी रहथि—हम हृदयसँ कृतज्ञ रही हुनक उपकारक।'

—'नयन बाबू इमानदार रहथि—हम इमानदारीपूर्वक पढ़बैत रहियनि ध ीया-पुताकेँ।'

—'नयन बाबूक ओइठाम समन्धी सबहक हरदम भीड़-भड़क्का लागल रहैत छलनि, हम सभसँ यथोचित व्यवहार राखी।'

रुन्नू-पम्मी पढ़' बैसय—हम पढ़ाब' लेल हाजिर। पम्मी..., हम पैखाना ल' जाइ लेल हाजिर! भौजीकेँ गेस्ट आबनि—हम हलुआ बनाबक लेल हाजिर! भौजी हारमोनियम ल' क' बैसथि, हम गजल गेबा लेल हाजिर!

मुदा ई सब ताखे पर राखल रहि गेल रहैक तहिया, दस बजे रातिमे नयन बाबू कहने रहथि जहिया— 'एखन जँ कही 'रोड पर सुतू ग' तँ केहेन लागत? जावत् गुँजाइश छल रहलहुँ। आब जखन डेरामे भीड़-भाड़ भ' गेलैक अछि, तँ अपने ने सोचक चाही, डेरा तकवाक चाही। ओना जाबे नौकरी नहि भेल अछि, ताबे बरु दुनू साँझ एतहि भोजन कएल करू। मुदा रहबाक लेल तँ. ..।'

...आ हम पयरक औंठासँ सीमेन्ट खोधवाक व्यर्थ कोशिस करैत रहि गेल रही। ओइ दिन धरती नहि फाटल रहैक। हम पातालमे नहि धसल रही ओना रातिकेँ पलंगे पर कछमछा क' कटने रही, से दीगर बात! ओना नयन बाबूक बहिनोइक, हमरा बगलवला कोठलीसँ, दू टा पाँती—बेचारे अनाथ,

बेरोजगार छथि कत्त' जेता? आ हिनकर गीत आ स्वर बड़ दीव छनि। —गोखुला काँट भेंसि देने रहय, से दीगर बात।

—'हुनका बातकेँ 'फील' नहि करब। ऑफिससँ एलाक बाद हुनकर दिमाग गरम रहैत छनि, तेँ किछु कहि देलनि। जाबे नौकरी नहि भेल अछि... । अहाँक चलि गेने हमर रुन्नू आ पम्मी'...

—भिनसरे भौजी हमरा कहने रहथि।'

...आ हमर फुफड़ी पड़ल ठोर, फेर कने एकबेर चियड़ि गेल रहय।

—'हमर खुटिएल दाढ़ी एकबेर फेर, कने बेदरंग भ' गेल रहय।'

आ, अततः बहुत प्रयासक बाद एक बेर फेर, हम मुसकिआयल रही—फीका-फीका सन।

आ

—'हम पम्मीकेँ पढ़ाब' लागल रही—'

—'एस फॉर सरभेंट, सरभेंट माने नोकर'

—'हम रुन्नूकेँ रटाब' लागल रही'

—'बा-बा ब्लैक-शिप...।'

•

कोसी-कुसुम, कथा-लघुकथा विशेषांक, मार्च-अप्रील 1985 ई.

मोजरा-कल्चर

हुनका लोकनिक आवाज दबि गेलनि, काली झाक एहि तर्कक सोझाँ, जे-बाइजी केँ नहि अनने क्यो एक छेदाम चन्दा नहि देत आ तखन— माइकवला के कत' सँ पाइ देबैक? नवयुवक सब नाटक केना खेलयताह? पूजाक ओरिआओन कोना भ' पाओत? आदि आदि..।

तैं, हुनका लोकनिकेँ चुप रहि जाय पड़लनि। ओ सब मुँह सापुट क' लेलनि। आ काली झा विदा भेलाह। एक हजार टाका ल' क'। एक सय अयबा-जयबाक खर्चा आ न' सय बिआनाक।

काली झा एहि काजक हेतु सबसँ उपयुक्त लोक रहथि। दुनियाँ घूमल, देखल-सूनल, बूझल-गमल। तेँ कोनो दिक्कत नहि हेतनि— से अपने दुर्गापूजाक समितिक बैसार मे ठाढ़ भ' क' बाजल रहथि। कतहु भागवत रहैक कि प्रवचन, कीर्तन होइक कि नाटक-हुनका लोक केँ बजब' नहि पड़ैत छलैक। दसगर्दावला काज मे सबठाँ अगिला मुहरा। अष्टयाम सँ ल' क' नवाह आ भुइयाँ थानक ब्राह्मण भोजन धरि। श्रीखण्ड हरदम ललाट पर झकझक करैत- तें ककरो हुनका पर अविश्वास नहि।

से काली झा दसोटा नमरी डाँड़ मे खोंसलनि आ विदा भेलाह बिदेस्सर स्थान मे बस पकड़य-मुजफ्फरपुरक लेल। 'लाल बत्ती क्षेत्र' मे प्रवेश करैत काल हुनका एकोरत्ती ततमताहट नहि भेलनि। हुनका हँसी लगलनि मोने-मोन, कमजोर करेजवला लोक केँ कोना झुनझुन्नी भरि जाइत छैक आ कियो कोना पसेना-पसेना भ' जाइत अछि! हुँह! जहाँकि गद परहक थाप सूनत, आकि रोइयाँ भुलूकि जयतैक आ कोनो वेश्या जँ गट्टा पकड़ि लेलकैक, तखन तँ कपड़े मे सभ दशा। छीः छीः एहेन-एहेन डेरबुक लोक!

काली झा मुजफ्फरपुरक एहि 'लाल बत्ती क्षेत्र' सँ पूर्व-परिचित छथि। एहि काज मे ओ अपन दक्षता सँ परोपट्टाक कए गाम केँ अनुगृहित कएने छथि। हुनका सनक वैष्णव लोक पर जकरा नहिं विश्वास हेतैक तकरा तँ नरकहु मे ठेलमे-ठेला!

तेँ एहि क्षेत्रक प्रायः सभ अड्डा चलौनिहारि 'मेट' सबसँ हुनका भरि ठेहुन, भरि छाबा। हुनका देखितहिं सब दुमहले पर सँ, बालकोनी सँ चिकरए लगतनि—

—'पंडित जी पाँय लागीं!'

—'पंडितजी एम्हरे आयब!'

—'पंडितजी एनही आइयेगा!'

—'पंडीजी हमरा भूल गइलीं?'

—'पंडीजी सोलहे साल के हइ!'

'मेट' सबकेँ आपस मे होइत कट्टम-कट्टा प्रतिद्वन्दिता सँ जँ काली झा सन गहींर आ वैष्णव लोक कनियोँ विचलित भ' जाथि, तँ धिरकार बाबू साहेबक बुन्द केँ।

...ओ सबकेँ हाथक इशारा सँ तोख दैत, कोनो एकटा मकानक सीढ़ी चढ़' लगताह। हुनका लेल सबधान बाइसे पसेरी। एहि अर्थ मे काली झा सुच्चा साम्यवादी छथि। ओना ई दीगर बात जे हुनका खानदान मे कहियो कोनो जन-बोनिहार केँ सोलहो आना बोनि देवाक रेकट नहि छनि। ओहि काल मे हिनकर एक सय एगारह नम्मरक चानन हिनकर व्यक्तित्वक एकटा अविभाज्य अंग, चाण्डालत्वक प्रतिनिधित्व करैछ। मुदा ताहि बातक एत' कोनो सम्बन्ध नहि।

त' से अपना गामक रंग-ढंगक अनुकूल बाइजीक चुनाव करबा मे काली झा अगुताइत नहि छथि। खूब निचेन सँ एक के बाद एक मकान मे जा-जा क' टराइ करैत छथि। एहि काल मे ओ सब बातक ध्यान रखैत छथि, कारण सब जिम्मेवारी त हुनकहिं माथ पर रहैत छनि। जँ देह पर मासु नहि रहलैक, तँ गामक सिमान मे प्रवेश करितहिं टीका-टिप्पणी शुरू भ' जयतैक।

—'खटारा उठा अनलनिहेँ!'

—'एकरा देख' लेल लोक की जायत? अनेरे निन्न कामहि!'

—'त' बहि! यैह छै एत्ते हजार मे? अइ सँ नीक त फल्लां गाम वाली छै!'

—'धुर! धुर! चिल्लांगामवालीक परतर ई कत' सँ करतैक? ओकरा देखिते जीह सँ टप्-ठप्...।'

आ जँ कने मोटायल-सोटायल रहलैक, तँ अटकल पंचे साबा सय

शुरू भ' जयतैक

—'तीन बियानक छै!'

—'जौंआ बच्चा छै पेट मे!'

—'एकरा सँ की नाचल हेतैक? ई तँ एक्कहि टा गीत मे बम् बाजि जेतैक!'

—'बुढ़िया उठा अनलक। एकरा की कंठो हेतैक? आन चीजक तँ छोड़ू!'

तेँ काली झा बहुत सावधानी सँ काज लैत छथि। एक बेरे मोन नहि मानतनि, तँ पाँच बेरे नचाक' देखि लेताह, जे दम तँ नहि फुलैत छै? पाँचटा ठुमरी लगातार गबाक' जाँचि लेताह।

मोन जँ कोनो बात लेल खुट-खुट करैत रहतनि, तँ जा ओ अपने हाथेँ बाइजीक पेट टोबिक' नहि देखि लितथि ता बिआना कोना देथिन? आखिर गामक इज्जतिक सवाल छैक। कने सबकिछु रहबाक चाही, चेहरा-मोहरा, गति-गुद्दा, बान्ह-काट, दर्शक सँ पाइ घिचवाक लूड़ि, कंठ, रिझेबाक एक-एक चमत्कार! तखन ने ओ असली बाइजी भेल?

से कोनो हालत मे ओ ठका नहि सकैत छथि, जे कतहु मौड़ होब' पड़नि। इलाका भरि मे गामक नाम हँसारथ होइन्हि से हूसल शिकार काली झा नहि करताह। एहि सँ तँ हुनका पर सँ लोकके विश्वासे उठि जयतैक। एकर दूरगामी प्रभाव संभावित! तेँ...

तेँ एहू बेर काली झा सावधाने छलाह! चुलबुल्लीबाइ अपन बानगी प्रस्तुत क' रहल छलि। ओकर 'मेट' बीच-बीच मे काली झा केँ ओकर गुन बखान करैत जाइत छलि। काली झाक चेहरा प्रभावित जकाँ।

ई चारिम टराइ' छलनि। गत तीन मकान मे 'टराइ' ल' क' निराशे भेल रहथि। सभ मे कोनो-ने-कोनो खोट। ककरो मासु लटकल तँ ककरो पेट बढ़ल। ककरो रंग मलिछन, तँ ककरो कंठ फाटल झाँझन!

ई मुदा हुनका मनमाफित बुझना जाइत छलनि। उमेर बेशी-सँ-बेशी सतरह साल होयतैक। एकदम छरहरे। सोंटल-साँटल देह। भरल-पूरल गति-गुद्दा। चेहरा-मोहरा देखनुक। कोइलिया कंठ खन-खन करैत। घुघरु आ कंठ, एक रंग-एक ताल पर थिरकैत। हाथ-पयर, आँखि-भौं, हाव-भाव, सबकिछु!

मोन भाबि गेलनि काली झा केँ!

आब एकहिटा, मात्र एक्कहि टा शंका रहि गेल छलनि —कमाइक वयस भ' गेल छैक। कहीं किछु होइक ने एकरो!

से हुनकर एहि शंकाक निवारण 'मेट'क बारम्बार आश्वासन देलाक आ पेट उघारि क' देखौलाक बादो नहि भेलनि। ओ गंभीर बनल-दुनू ठेहुन केँ गमछा सँ गछारने बैसल रहलाह। चुलबुल्लीबाइ अपन 'टराइ' सफल बूझि ऐंठि क' घुँघरू खोल' लागलि। हरिमुनियाँ मास्टर हरिमुनियाँ बन्हलनि। तबालची तबला बन्हलनि। सरंगिया सरंगी उठौलनि। आ एका-एकी विदा भेलाह।

'मेट' काली झाक हेतु चाह-जलखै द' कहबा लेल बाहर निकललि तँ केवाड़ी भिड़कौने गेलि। काली झा उठि क' बिलैया लगा लेलनि, अन्तिम 'टराइ' लेल। चुलबुल्लीबाइ 'कएटा काली झाक कएटा टराइ' जकाँ एकबेर फेर राजधानी इस्प्रेस केँ बर्दाश्त करयवाली पुल बनि गेलि।

बिदेस्सर स्थान मे बस सँ उतरैत तीन बाजि गेलनि काली झा केँ। तीनटा रिक्शा कयलनि। एक पर हरिमुनियाँ-मास्टर आ चुलबुल्लीबाइ। दोसर पर तबालची आ सारंगिया। तेसर पर सब सामान ल' क' काली झा अपने। तीन रिक्शा एकहि संग बिदेस्सर-स्थान सँ उत्तर मुँहे भेल। हँ पयर धोक' माथ पर दू बुन्न पानि छीटिक' बिदेस्सर बाबाक दर्शन करब नहि बिसरलाह काली झा।

चुलबुल्लीबाइक मुँह पर थकान आ भावहीनता। आँखि दूर-दूर धरि सुखायल बाध के निर्निमेष देखैत। काली झाक ठोर पीक सँ लाल। विजयी मुस्कान स्पष्टतः झलकैत।

—'की यौ, कत्ते लागल?'

—'तीन हजार!'

—'कए रातुक साटा अछि?'

—'दू रातुक।'

—'वाह, वाह! कमाल अछि। यैह ई भेल किने? कोठियावला जे उठा अनलक-ए भुतही केँ? मारू बहिं। ने देख'-सून' मे आ ने गाबहि मे। मर तोरा भला मे, लोक ओकर की निंघार' जेतै? यैह, अहाँ गाम मे आबि क' लोक बैसत किने?

—'आह, जरूर आबी, जरूर आबी। पूरा गच्छ मे खबरि क' देबैक।

अबस्स अबैत जाथि!

—'आह, कहबाक बात छै?'

काली झा हर्षातिरेक सँ ओत-प्रोत भ' गेलाह। ओ मोने-मोन पलान बनब' लगलाह गाम पर कोना-कोना बजताह? पूजा समितिक सदस्य सबकेँ कोना-कोना विश्वास दिऔताह, जे ओ सत्ते तीन हजार मे अनलनि अछि। एकोपाइ एमहर-ओमहर नहि कयलनि अछि। ताहि लेल कोन सप्पत उपयुक्त हेतैक, जे एकेबेर मे सब मुँह सापुट क' लेअय? चुलबुल्लीबाइक रहबाक, खयबा-पीबाक इन्तजाम कोना-की-हेतैक? एकरा अपने चार्ज मे कोना राखी, जे नबकबेर छौंड़ा सबसँ बाँचल रहि सकय? आदि

दुर्गास्थान मे एकटा अजबे हलचल मचि गेल। जे जेम्हरहि छल, दौगल रिक्शा दिस। पंडित जी केँ दू अध्याय पाठ बाँकीये छलनि, मुदा सप्तशतीक पोथी राखि देब' पड़लनि। चीजे तेहने देखनुक रहैक, त लोक की करैत?

काली झा तुरंत माइक लग गेलाह आ एलाउन्स करबौलनि, जे ओ मुजफ्फरपुर सँ आपस आबि गेल छथि। से समितिक सदस्य लोकनि अविलम्ब दुर्गास्थान पहुँचैत जाथि। सदस्य-लोकनि धड़ाधड़ि पहुँचलाह, जेना बिहार सरकारक कोनो कार्यालय मे चेयरमैनक अचानक निरीक्षण भेला पर कर्मचारी सभक आकस्मिक अवकाशक दरखास पहुँचैत छैक।

काली झा अपन यात्रा-विवरण सुनाब' लगलथिन। एखन ओ अपना जनतबेँ मार्के पोलो आ बास्को-डि-गामा सँ कम नहि छलाह। यात्रा मे भेल एक-एक कष्टक वर्णन ओ मुँह पर कष्टक भाव आनि-आनि क' कयलनि। हुनका मे ईहो बड़ पैघ विशेषता। व्यावहारिक लोक रहलाक कारणें, सिद्धान्त सँ बेशी महत्व ओ व्यवहार-पक्ष केँ दैत छथि।

अस्तु, जेना-तेना हुनका यात्रा-संस्मरण सँ लोक केँ मुक्ति भेटलैक। किन्तु साटाक रकम सँ सब चौंकल जरूर। अन्ततः वैह, जे आब जे भेलैक से ठीके भेलैक', वला बात। आ सब अपन-अपन कार्य मे लागल।

काली झा अपना निर्देशन मे चुलबुल्लीबाइक समान सभ रिक्शा पर सँ उतरबा क' दुर्गाथानक पाछू मे बनल मिडिल स्कूलक एकटा कोठली मे रखबौलनि। किछु ओछान-बिछानक इन्तजाम क' फेर चुलबुल्लीबाइक कम्पनी हेतु चाह-पानिक तुजारति मे जुटि गेलाह। मुदा आध-आध घंटा पर कोठली

मे जाक' 'अपना हिन्दी' मे चुलबुल्लीबाइ केँ पूछब नहि बिसरथिन—कोनो दिक्कत तो नही है न? कुछ खगता हो तो हमही को बुला लीजिएगा। हाँ, यहाँ सार्वजनिक काम मे कियो घुरि क' पूछबो नै करेगा। तहन पाछू हमको दोष मत दीजिएगा।' मुजफ्फरपुर मे ठेंठ मैथिली मे गप्प कयनिहार काली झा एत' अगबे हिन्दी (?) दरड़ए लगैत छथि। तेँ तबालची, कि सारंगिया, कि हरिमुनियाँ-मास्टर के साध जड़ले रहतनि जे काली झा एको बेर पुछितनि—आपलोगोँ को भी कोनो खगता है? मतलब रहैत छनि त मात्र चुलबुल्लीबाइ सँ। ओकरा लेब' अऔतैक तँ ओहो सब खयबे करैत जायत—ओ सैह बुझैत छथि। ठीके बुझैत छथि। ओ की, सब। सारंगिया आ तबालची सँ ककरा कोन मतलब? चुलबुल्लीबाइक बाते किछु आर छैक।

रहि-रहि क' माइक आसमर्द क' उठैत छलैक। —हाँ आजुक राति! मुजफ्फरपुरक जानलि-मानलि गायिका चु-ल-बु-ल्ली-बा-ई अहीँ सभक सेवा मे। संग मे महान सामाजिक नाटक—चम्बल घाटी का लुटेरा! माधोसिंह आ चुलबुल्लीबाइ! ठाकुर, धाँय-धाँय धराम! चुलबुल्लीबाइ, छम छमाछम! दिल्ली के लड्डू, जे नहि खायब, पाछू पछतायब।

दुर्गाथान दलमलित भ' जाइत छल। दुर्गामाइक चालक लाल-पीयर-बुल्लू-रंगक पन्नी सब थरथराय लगैत छलनि। दुर्गाथानक रनरनी काल्हि सँ बहुत बेशी आइ। प्रायः जे अबैत छल, भगवतीक दर्शनक औपचारिकताक निर्वाह क' क', धुरिऐले पयरे मिडिल-स्कूल दौड़ैत छल -चुलबुल्लीबाइक दर्शन करए।

आ दुर्गामाइक आगू एक मिनट एकटंगा देनिहार भक्त जखन चुलबुल्लीबाइ लग सँ एक-घंटाक बाद घुरैत छल त ओकर ओ सब कष्ट हरित भ' गेल रहैत छलैक जे ओ दुर्गामाइ के तथाकथित एकटंगा द' क' गोहरओने रहैत छल। आखिर भगवती बड़ सहजोर छथिन, से बात त' लोक तहिये जनलक, जहिया पंडितजी केँ साक्षात दर्शन द' क' कहने रहथिन जे—हमर पूजा धूम-धड़क्का सँ हो। आ ग्रामीण केँ तकर खास अर्थ लगलनि जे, 'रंडी अबस्स आबय!'

...से स्कूलक चारू भाग युवक सभ मरड़ाय लागल। तबालची, सारंगिया आ हरिमुनियाँ मास्टर, सब 'मैदान' दिस गेल छल। चुलबुल्लीबाइ असगरे अपना मेक-अप मे लागलि छलि।

किछु गोटे चुलबुल्लीबाइक कोठलीक गेट पर ठाढ़ भ' क' हँसी-मजाक करए लागल। धीया-पुता सब अचरी-कचरी बाजैत चलि जा रहल छल—

—'देखही आब पोडर लगबै छै!'

—'आब नथिया पहिरै छै!'

—'आब काजर...'

—'उँह, उँह देख लिपिस्टिक'

—'चुलबुल्लीबाइ केँ नहि बर्दाश्त भेलैक तँ केवाड़ी बन्न क' लेलक। नवकबेर सबके ई अपमानजनक लगलैक। ई ठेसी! भाग-भाग तँ रंडी छी, तखन एतेक टेढ़? ओ सब सहटिक' स्कूलक पाछूक गाछी मे चलि गेल आ आमक ठारि पर बैसि क' हुलकी-बुलकी मारए लागल।

देखिते-देखिते ओत्तहु एक जेर धीयापुता जमा भ' गेलैक आ गाछ पर चढ़बाक प्रयास करए लागल। एकटा युवक दबल आवाज मे डँटलकैक— जो, तोँ सब बच्चा छेँ। तोँ सब की देखबीही? एकटा कठपिंगल छोंड़ा जवाब देलकैक एँहेँ! ई सब देखथिन आ हमरा सबकेँ मना छै? ई बड़ हीरो छथिन। गे मैयो! सिटीली! युवक ओकरा दिस सँ अन्यमनस्क भ' क' फेर चुलबुल्लीबाइ दिस आँखि केन्द्रित कयलक। चुलबुल्लीबाइ निश्चिन्त भ' क' कपड़ा बदलि रहलि छलि, कि साड़ी हाथ सँ छुटिक' खसि पड़लैक।

...एक्कहि बेर गदहपचीसीवला नवयुवक सभ पिहकारी मारलक। चुलबुल्लीबाइ के बन्न द' पसेना फेकि देलकैक। ओकर कोंढ़ उनटि गेलैक आ छाती दू-दू बीत फान' लगलैक। ओ ठामहि चुक्कीमाली भ' क' बैसि गेलि आ साड़ी सगर देह पर लपेटि लेलक। फेर साहस क' उठलि आ खिड़की भट्ट द' बन्न क' लेलक।

एकटा आर जोरगर पिहकारी!

चुलबुल्लीबाइ अयना निकालि क' काजरक रेखा ठीक कर' लागलि। एमहर एकदिस सँ सारंगिया-तबालची आ हरिमुनियाँ-मास्टर लफड़ल अबैत आ दोसर दिस सँ काली झा चोटायल साँप जकाँ फनकैत अबैत।
आब तँ नवतुरिया सब सन्न!

सब गाछ पर सँ फनवाक क्रम मे ढनमनाय लागल। जा काली झा गाछ लग पहुँचथि, युवक सब यैहले, वैहले फुर्र!

काली झा बमकिते दुर्गास्थान पहुँचलाह। फेर सब मिलि हुनका

शान्त कयलक। थोम्ह-थाम्ह लगाओल गेल। मुदा युवक सभ चोटा गेल रहय, जकरा खिड़की बन्न क' क' चुलबुल्लीबाइ 'अपमानित' कयने रहैक।

ता एमहर माइक कड़कड़ा उठल।

मंच पर आसमानी रंगक ड्राप-सीनवला पर्दा आस्ते-आस्ते सिहकैत हवा मे झूलि रहल छल। चोराक' लगाओल गेल हजार वाटक बिजली-बल्ब जगमगा रहल छल। नेपथ्य मे नाटकक हेतु मेक-अप भ' रहल छल। केओ चम्बल घाटीक डाकू ठाकुर प्रताप सिंह आ माधो सिंहक मोंछ बनयबा मे व्यस्त, केओ लक्ष्मण सिंहक दाढ़ी बनयबा मे व्यस्त आ केओ एकटा निमोछिया छौंड़ा केँ ठाकुरक बेटी बनयबाक हेतु ओकरा ब्रेसियर मे तूर कोंचबा मे व्यस्त। सभ अपन-अपन काज मे लागल। किछु लाठीधारी कार्यकर्त्ता ठाकुरक पुरखाही बेटी केँ खौझयबा मे ब्यस्त!

ता एम्हर घघड़ा ब्लाउज आ ओढ़नी मे साक्षात् चुलबुल्लीबाइ प्रकट भेलि। सारंगिया, तबालची आ हरिमुनियाँ-मास्टर मंच पर अपन-अपन आसन जमौलक। चुलबुल्लीबाइ तथाकथित ग्रीन-रूम मे एकटा कुर्सी लगाक' बैसलि।

लाठीधारी कार्यकर्त्ता जे ठाकुरक पुरखाही बेटीक अंग निहारबा मे ब्यस्त छलाह, आब ओही कार्यक हेतु चुलबुल्लीबाइ दिस घुमलाह। ओ अपना तलवार-कट मोंछ आ फ्रेंच-कट दाढ़ी पर हाथ फेरय लगलाह।

डकैत ठाकुर प्रताप सिंहक बेटी, जे एत्तेक काल एकटा महिला विशेषज्ञ (पुरुष) सँ साड़ी खोंसबैत छल, आब ताही काजक हेतु चुलबुल्लीबाइ दिस दौगल आ ओकरा नेहोरा कर' लागल। ओना ओ अपने नहि गेल छल बल्कि पठाओल गेल छल, मुदा ताहि सँ की? चुलबुल्लीबाइ अठनियाँ हँसी हँसैत पहिने ओकर सायाक डोरी कसि देलकैक आ फेर साड़ी पहिराब' लगलैक।

ई महिला-भूमिका अदा करबाक ओहि बेचाराक पहिल उपलब्धि छलैक। आगाँ साल सँ निश्चित रुपें महिला-भूमिका हेतु प्रतिस्पर्द्धा होयतैक।

नाटक प्रारंभ होयबाक घोषणा कयल गेल, बेर-बेर। लोक सब अगुता रहल छल। पहिने कोरस भेल-राष्ट्रीय गीतक, जे सुनि स्वर्ग मे रफी साहेबक आँखि नोरा गेल होयतनि। तकर बाद सीन सबहक एक झाँकी। आ तकर बाद चिरप्रतीक्षित चुलबुल्लीबाइक घुघरु झनझना उठल। तबलचीक गद परहक थाप आ चुलबुल्लीबाइक पयर एक संग चल' लागल। लोक नेहाल भ' गेल।

दस हजारक हुजूम सनाथ भ' उठल। दुर्गामाइ गद-गद भ' गेलीह।

पंडितजी आ काली झा मंच पर सारंगियाक बगल मे बैसल छलाह-ताल पर मूड़ी झुलबैत। चुलबुल्लीबाइ सुरड़ने जा रहलि छलि—बीच बजरिया खटमल काटे, कैसे निकालूँ...

पंडितजी मंद-मंद मुस्कुराक' चुलबुल्लीबाइक दलकैत देहयष्टि पर अविराम आँखि गड़ौने छलाह। की काली झा पंडितजी दिस इशारा करैत चुलबुल्लीबाइ केँ कनखी मारलनि।

चुलबुल्लीबाइ दक्ष खेलाड़ी जकाँ भौरिया कटैत, पंडितजी लग आबि क' बैसि रहलि आ अपन ओढ़नी सँ हुनकर मुँह झाँप' लागलि। पंडितजी बारह आनावला दाँतनिपोड़ मुस्कान मारैत—उँह! उँह!—करए लगलाह।

हुनकर मुँहक भभक आ बिजली पर पीयर दाँतक खैड़ीक चमक सँ चुलबुल्लीबाइक जीह ओकियाय लगलैक। ओकरा मोन भेलैक जे ओ एक लोइया खखाड़ पंडितबाक मुँह पर फेकि दिअय। मुदा आखिर पाइक सवाल छलैक। ओकर अहं केर सवाल छलैक, दस हजार दर्शकक बीच मे ओकर इज्जतिक सवाल छलैक। उठैत तँ कोना? पहिले तीर निशान पर नहि लगतैक, तखन...

पंडितजी पहिने तँ मटिअयलनि, मुदा बुझयलनि जे ई बेइज्जति कैए क' छोड़त। तखन दूटकही निकाललनि। दोसर कोनो अवसर रहितैक, तँ नोर छलछला अबितनि। दू टकाक कोनो ठाँ नहि रहलनि। भरि मासक नोनक खर्च! मुदा एत' तँ सवाल चुलबुल्लीबाइक छैक। हँसैत रह' पड़लनि। मुदा आहिरेबा!

चुलबुल्लीबाइ तँ रुपैया फेकि देलकनि! लोक मारलक पिहकारी! पंडितजी पानि-पानि भ' गेलाह। काली झा कुटिल मुस्कान छोड़ैत रहलाह आ चुलबुल्लीबाइ काली झाक सह पाबि पंडितजी केँ बेर-बेर ओढ़नी ओढ़यबाक प्रयास करैत रहलि।

पंडितजी केँ चुलबुल्लीबाइक गरदनि मे लागल पोडरक मौगियाइनि सुगंध बड़ सोहनगर लागि रहल छलनि। मुदा समस्त श्रोताक नजरि अपना पर केन्द्रित हेबाक अनुमान लगा जल्दीये करब समीचीन बुझयलनि। अंततः पंडितजी केँ आब पँचटकही निकालहि पड़लनि। हुनकर दर्द क्यो बूझि सकितनि? काल्हिए तँ सम्पुट-पाठक तरिए अभिराम मंडल सँ पाँच टा

पँचटकही बिआना भेटल छलनि— ताहू मे सँ एकटा खोड़े भ' गेलनि। ओह!

आकि तखनहि पंडितजीके जुआनीक जोश हिलोड़ मारलकनि। ओ जिद्द ध' लेलनि—हम आलपीन ल' क' अपने हाथे गँथबौ।

लोक फेर पिहकारी मारलक।

चुलबुल्लीबाइ कने थकमका क' एकबेर काली झा दिस आ एकबेर अपन तीनू सङ्बे दिस तकलक। आह! बेचारी, छल तँ अन्ततः एकटा नारिये किने? मुदा सभ दिस सँ ओकरा एक्कहि तरहक संकेत भेटलैक— परिस्थिति सँ क' ले समझौता। सबदिन सैह इतिहास रहलौ-ए। आखिर सवाल पाँचे टाकाक नहि छैक, एही गीत सँ एकटा परम्पराक शुरुआत सेहो करबाक छौ।

ओ अपना मुँह पर अनोन— बिसनोन सन एकटा बलजोरी मुसकी अनलक। ओ नारी हेबाक गलती करए लागलि छलि, जे ओकर जन्मदात्री आ नानी-पर्यंत नहि भ' सकल छलैक। फेर ओ सम्हरलि आ एकहि क्षण मे रंडी भ' गेलि।

पंडितजी थरथराइत हाथें आ उधकैत मोने आलपीन सँ पँचटकही केँ चुलबुल्लीबाइक उभरल ओढ़नी पर गथलनि। आ वैतरणी तरि गेलाह। हुनका आब गौदानक जरूरति नहि रहलनि।

दस हजारक हुजूम पिहकारी आ थपड़ी सँ दुर्गा-माता केँ हिला देलक। दुर्गा महरानी धन्न-धन्न भ' उठलीह।

चुलबुल्लीबाइ फेर उठिक' नाच' लागलि-दोहरी-उत्साहक संग— 'बीच बजरिया खटमल काटे, कैसे निकालूँ चोलिया से...'

जेना-जेना नोट बरिस' लागल, तेना-तेना ओ उड़ीस काटल पर दर्दक हाव-भाव देखाब' लागलि। एक-दू टकाक नोट ओ हाथे सँ लैत छलि आ आ दस-बीस देनिहार केँ आलपीन ल' क' अपनहि हाथे ओढ़नी मे गंथबाक छूट छलैक। पंडितजी से रस्ता धरा देने छलथिन।

चुलबुल्लीबाइ रुमाल सँ मुँह आ छाती पर टघरल जाइत पसेना केँ पोछलक आ पंडितजीक मुँह पर फेकलक। पंडितजीक दाँत बिदरि गेलनि। रुमालक पोडराइन भभक हुनका एकटा अजीब सनक संवेदना उत्पन्न क' देलकनि।

लोक अपन मोरौसी पिहकारी मारलक।

एहि एक गीत पर चुलबुल्लीबाइ केँ एक सय सँ बेशी भेटलैक। एक-दू टकाक किछु नोट हरिमुनियाँ पर हिचकैत आ पंचटकही-दसटकही नोट चुलबुल्लीबाइक ओढ़नी पर नितराइत।

नाटक प्रारंभ भेल।

मुदा लोकक मांग गरमाइत गेल—चुलबुल्लीबाइ! चुलबुल्लीबाइ! नाटकक दृश्य पर दृश्य कटाय लगलैक। लोक हुर्र कर' चाहलक। फेर कार्यकर्त्ता सब लाठीक हाथें लोक केँ बैसौलक।

हुर्र केँ शान्त करबाक भार उठौलनि इलाकाक जानल-मानल मैथिलीक गायक। माइक पकड़ि क' जहाँकि एकटा जागरण—गीत उठौलनि कि रंग-बिरंगक टीका-टिप्पणी शुरू भेल।

—'जाउ-जाउ।'

—'घिनेलहुँ!'

—'धुः ई की सब स्टेज पर चलि अबै छै? गावक लूरि छैके नहि आ...'

—'होइ छनि जे हमहूँ रंडी जकाँ जमि जायब। हौ बूड़ि, ओकरा तँ गलो छैक आ कलो छैक। अवगति चाही ने गयबाक!'

पर्दाक पाछू सँ आवाज अयलनि गायक केँ—चलि आउ, चलि आउ! लोक सब जेहो बैसल छल, ठाढ़ भ' गेल। बेचारे गायक अपन सन मुँह लेने पर्दाक पाछू आबि गेलाह। ओत' निर्देशक महोदय चटनाइ शुरू कयलथिन— दुर छी! ई सब गीत एहेन-एहेन मंच पर चलैत छै? ई सब राखू विद्यापति-पर्व लेल। जेहेन देस, तेहन भेस। एहेन मनोरंजन लेल बैसल दर्शक लग अहाँ—'हम छी मैथिल के सन्तान'—गायब तँ के सूनत? सब जनैत छै, छीहे मैथिलक सन्तान! जन्मे जखन मैथिलक परिवार मे भेल, तँ हेबे करब मैथिल। एहि मे सन्देह कोन? जाउ, नाटक देखू ग'। लोक केँ बैसाब' मे मदति करू। बी कन्स्ट्रक्टिभ, नॉट डिस्ट्रक्टिभ!

गायक बिफरि क' रहि गेलाह। हुनका आँखि सँ अगिनवाण छिटक' लगलनि। मुदा...

—'आहा-हा! कतेक नीक गीत गबै छलैए ओ अपना भाषा मे, से सरधुआ सब पिहकारी मारिक' भगा देलकै। एना किए बताह भेल छै सब रंडियाक पाछू? अपना सबकेँ बहु-बेटी नहि छइ जे...? रंडीया के त' रुपैयाक काज छै। निरलज्ज भेलि अछि। यैह सब ने सीखैत जयतै छौंड़ा-छौंड़ी सब?'

ई छल स्त्रीगण-समाजक प्रतिक्रिया!

—'हम तँ पहिनहि कहने रहियनि-वानर सब नारिकेलक स्वाद नहि बूझत। अहाँ स्टेज पर नहि जाउ। तँ हमर बात नहि मानलनि। उनटे व्याख्यान देब' लगला, जे हमर संस्कृति केँ घून खेने जा रहल अछि। मोजरा-कल्चर केँ जड़ि सँ उकन्न करब जरूरी छैक। अन्यथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी पंगु भेल जायत। एकर स्वाहा कर' दिय'। त लीय' करैत रहू स्वाहा।'

—'दहिना हाथ मे घड़ी पहिरने एकटा आधुनिक कनियाँ बजली।'

—'यै भौजी, वनचर छै लोक सब। भ्रष्ट भ' गेल छै रंडी पाछाँ। आइ रंडी नहि रहितैक, तँ हमरे भैयाक गीत केहेन ने जमितैक। —कनियाँक ननदि छलीह ई।'

नाटक एक दृश्य आर आगू बढ़ल। लोक दृश्य समाप्त भेलाक बाद फेर हल्ला कयलक—चुलबुल्लीबाइ! चुलबुल्लीबाइ! कि तखने फेर वैह गायक फानि क' मंच पर गेलाह आ माइक पकड़लनि। मंचक पाछू मे निर्देशक आगि भ' गेलाह—हिनका के पठौलक फेर? ई किऐक गेलाह? सब कयल-धयल केँ गोबराब' पर लागि गेल छथि ई। हिनका कान पकड़ि क' निचाँ करु।

गायक आत्मविश्वासपूर्वक माइक फुकलनि आ गंभीर आवाज मे बजलाह— 'हम अपने लोकनिक मात्र पाँच मिनटक बहुमूल्य समय लेब। हमहुँ मौगी केँ नचेबाक एहि घुनलग्गू आ अश्लील परंपरा केँ तोड़बाक व्रत लेने छी। खाली अपने लोकनि सहयोग करी।

काली झा आ पंडितजीक नाक सिकुड़ि गेलनि। काली झा के अपन भविष्य अन्हार-गुज्ज बुझा पड़लनि। चुलबुल्लीबाइक तीनू संगी एक-दोसर दिस टक-टक ताक' लागल।

गला खखाड़ि क' गायक एकटा आधुनिक लोकगीत उठौलनि। स्थायी खत्म होइत-होइत लोकक उकस-पाकस बन्न भ' गेलैक। अन्तरा पर अबैत-अबैत, दर्शक-दीर्घा मे कए गोटे ताल पर चुटकी बजब' लगलाह। गायकक उत्साह दुगुन्ना भ' गेल। लगलैक जेना माइक फाटि जयतैक।

आ गीत खत्म होइत समस्त स्रोता आसमर्द क' उठल। दस हजारक हुजूम गायकक छल। निर्देशक महोदय केँ चकबिदोर ल' लेलकनि। गायक मंच सँ उतरलाह आ सांढ़ जकाँ मूड़ी उठौने विदा भेलाह। निर्देशक

महोदयक मुँह 'सूक-पाक' भ' क' रहि गेलनि।

चुलबुल्लीबाइ गायक द्वारा देल एहि माटि केँ नकारि नहि सकलि। ओ मंच पर आयलि तँ लोक केँ शान्तिपूर्वक बैसवाक अपील कयलकैक। ओ फेर एकटा ओहने अश्लील गीत उठौलक—मजा मारे सलबरबा, सटल रहेला. ..

फेर थपड़ीक गड़गड़ाहटि आ कुँठित सेक्सक शिकार लोक दिस सँ पिहकारी उठल। दुर्गाथान दल-मलित भ' उठल। चुलबुल्लीबाइ अपना सर्वाङ्ग शरीर केँ कमची जकाँ लचब' लागलि। घघरा केँ बामा हाथें पकड़ि ठेहुन तक उठौलक। ओ अपन देहयष्टि केँ उभारि-उभारि क' दलकाब' लागलि, कारण ओ बुझैत छलि जे आब गला मात्र सँ काज चल'बला नहि छलैक।

बामा कात मे मंचक बाँस पकड़ने किछु मुस्तंड छौंड़ा सबहक आँखि लाल होब' लगलैक। ओ सब अपना मे किछु फुसफुसायल। ओकरा सबकेँ चुलबुल्लीबाइक खिड़की बन्न करब मोन पड़लैक। ओ सब ओकर मंच परहक अंगप्रदर्शन केँ पचा नहि सकल।

ओ सब उठिक' ठाढ़ भ' गेल आ हुर्र-बरेड़ा मचा देलक। ता कियो जाक' बिजलीक लाइन काटि देलक। अन्हार-गुज्ज भ' गेलैक। लोक जेम्हरे-तेम्हरे भाग' लागल।

चुलबुल्लीबाइ मंच पर सँ उतरि ग्रीन-रूम भागलि। ओहो छौंड़ा सब ओम्हरहि रेड़लक। देखिते-देखिते चुलबुल्लीबाइ केँ वैह छौंड़ा सब गोलिया लेलक आ लपक-झपक कर' लागल। एकटा धतिंगा सन के छौंड़ा चुलबुल्लीबाइ केँ उठाक' स्कूलक कोठली दिस भागल। बाँकी छौंड़ा सब सेहो पाछाँ।

अचानक गायकक नजरि पड़लनि तँ ओहो निच्छोह दौड़लाह। स्कूलक बाहरे मे गायक ओहि मुस्तंड-छौंड़ा केँ छिटकी मारलनि। छौंड़ा तड़ाक बजरा खसल आ चुलबुल्लीबाइक देह पर पड़ि रहल। गायक तड़ातड़ि ओहि छौंड़ा के लाते-मुक्के धुन' लगलाह—लुच्चा, लंपट! एही लेल अनैत गेलेहें एकरा? गाम मे आनिक' ई दुर्व्यवहार? अपना सबकेँ माय-बहिन नहि छौक?

ता गायकक माथ पर पाछू सँ 'ठाँइ' द' एक बेंत लगलनि। ओ अकबका गेलाह। जा सम्हरथि—तड़ातड़ि कए बेंत लगलनि। ओ खसि पड़लाह। कपाड़ सँ सोनितक पेमाल बह' लगलनि।

फेर सब छौंड़ा मिलि क' चुलबुल्लीबाइ केँ झिकझोरए लागल। गायक ओकर पयर केँ गसिया क' पकड़ए चाहलनि। ओ सब झमारि क' चुलबुल्लीबाइ केँ टंगलक आ स्कूलक कोठली ढूक' लागल।

कोठलीक खिड़की भटाभटि बन्न होअ' लागल। गायक, माथ सँ बहैत सोनितक पेमालक कोनो परवाहि कयने बिना, कोठलीक केबाड़ी दिस ससरए लगलाह।

•

ताण्डव-नृत्य

ओ ठकमूड़ीवला मनःस्थितिमे माथा हाथ धयने बरण्डा पर बैसल छल। अवकाश प्राप्त-सनक कुर्सी पर। एक बेर फेर ओकर अन्तसक मानव आन्तर्नाद क' उठलै, जखन आगू द' फेर एकटा मुर्दा- 'राम नाम सत है' कहैत, ओकरे मोहल्लावला द्वारा निकालल गेलैक। अपूर्व सुन्दरीक मुर्दा, बीस-बाइस सालक रहल होयतैक।

ई एगारहम छलैक। ओ गनैत जा रहल छल, सोचैत जा रहल छल। बच्चा, बूढ़, जुआन, गरीब, धनीक, सभक बीचक खाधि केँ प्रकृतिक एकटा हिलोरि केना मेटा दैत छैक? लोकक इजाद कयल व्यवस्था जखन निस्सहाय भ' जाइछ प्रकृतिक समक्ष, तखन लोक एना किएक करैए जीवनमे? केहन-केहन कुकर्म? कथी लय?

आइ सामान्य परिस्थिति रहितैक, तँ धोधिफुल्ला बेपारीक लहासक सङ गाजा-बाजा धुधुआइत रहितैक, फूलसँ लादल रहितैक, ओकर लहास आ चचरी पर पड़ल ओकर लहास एहन पितामरीसँ झाँपल रहितैक जाहिमे मात्र सीताराम-सीताराम, लीखल रहितैक। पाछाँ-पाछाँ कोनो बेटा-नाति पाइ लुटबैत चलितैक।

मुदा आइ तँ बाते किछु आर छलैक। जहिना भिखमंगाक लहास तहिना करोड़पतिक। करोड़पति बेपारीकेँ उकबत्तीयो देनिहार नहि रहलैक। सौंसे परिवार पचास सेकेण्डक विभीषिकामे समाप्त। करोड़ोक सम्पत्तिकेँ भोगनिहार उवाली आइ क्यो नहि। ई सम्पत्ति केना-केना अरजल गेल होयत?

ओकरा ओ गरू'वला भोर मोन पड़लैक। ठीक-ठीक एक घंटा पूर्व ओ लग्घी क' क' पड़ल छल बिछाओन पर। भोर एखनो अन्हार रातिकेँ चीरि नहि पाओल छल। आ कि औंघायलेमे ओकरा बुझायल रहैक जेना एकटा डेराओन सनक गड़गड़ाहटिक आवाज उठलैक। चिड़ै-चुनमुन्नी झौहड़ि क' उठलैक। ओ अकान' लागल रहय आ कि ओकर पुरान चौकी चरमराय लगलैक। ओकर छठम इन्द्रिय बजलैक-भूकम्प! भागू!

ओ पत्नीकेँ झिकझोरि क' उठौलक आ बेटी केँ पजिया क' केवाड़ दिस भागल रहय। मुदा आहिरेबा! कुञ्जी तँ टेबुल परहक डायरी पर राखल

रहय। की भेल? ओ अकबका गेल रहय। ओ आ पत्नी आसमर्द करैत, किलोल करैत रहि गेल रहय। ओ अपन छतकेँ फाटैत देखलक। ओकरा भेलैक जे ओ सभक सङ मरि रहल अछि। ओ खिड़कीक जाली तोड़ने रहय एके घुस्सामे। ता भूकम्प थम्हि गेल रहैक। ओकर पत्नी टेबुलक तरमे राखल आलू मे सँ कुञ्जीक झाबा निकालि लेने रहथिन। ओ बाहर निकलल, तँ अवाक रहि गेल। बाप रे बाप! सगर आङनमे जेना ईंटाक बरखा भेल रहैक। दुमंजिला परक ईटाक रेलिंग टूटि-टूटि क' दोम्मा मे खसल रहैक। आङनक सीमेंट सकनाचूर भ' क' फूटि गेल रहैक। ईटाक पथार।

किन्साइत कुञ्जी भेटि जाइत तुरंते आ ओ सभ घरमे निकलि जाइत, तँ आइ ओ तीनू ईंटाक बरखामे सकचुन्ना भ' जाइत।

से बड़ी काल धरि ओ सुस्त भेल बैसल रहल। बेटीकेँ एतबा आदंक ल' लेने रहैक, जे ओ बारह बजे दिन धरि सुटकले रहैक। किन्नहुँ अपना कोठली दिस जयबाक नामे नहि लैक।

ओ कोठली देखलक तँ चकबिदोर लागि गेलैक। ई मकान खसलैक केना नहि! पचासो ठाम चिरक्का लागल छलैक। फर्श, खिड़की देवाल, छत-सभ छहोछित।

भिनसर भेने सौंसे शहरक चीन्ह-पहचीनवला लोक ओकरा बुड़िबक साबित करबाक पूर्ण कोशिश कयने रहय। किएक तँ ओ भीतर सँ ताला बन्द क'-क' सूतल रहय। ओ निर्निमेष सभक मुँह टक-टक तकैत रहि जाय। ओकरा सद्यः दृश्य मोन पड़ि जाइक। ओ फेर लोककेँ बुझेबामे अपस्याँत भ' जाय जे ताला बन्द रहलेक कारणें ओ बाँचि सकल।

ओकरा अपन मजबूरी मोन पड़लैक। ओहन पुरान मकानमे एकटा कोठली ल' क' रहबाक मजबूरी। छौ सयक कमाइ, ताहि पर पाँच गोटेक परिवार। नीक मकानमे रहबाक सपना ओ कोना देखितय? एतेक भाड़ा ओ कत' सँ दितैक? दिन-राति झरपटही साइकिलसँ काया धुनैत-धुनैत ओ एकटा मजदूरक जिनगी जीबैत छल। एम.ए. पास मजदूर। दोकाने-दोकान जा क' श्वानवृत्ति। ओकर एकटा मित्र ओकरा मजाक उड़ौने रहथिन— दोकाने-दोकान जाक' एकाउन्ट करबकेँ श्वानवृत्तिक संज्ञा द' क'। ओ फोंक सन हँसी हँसिक' टारि देने रहय। ई तथाकथित श्वानवृत्ति वस्तुतः कतेक अपमानजनक होइछ, क्यो पूछय ओकरासँ?

पचास टाका भाड़ा द' क' ओ एहने कोठलीमे रहि सकैत छल, जकर केवाड़-खिड़की भगवाने भरोसे। ताला लगौनाइ आवश्यक। अन्यथा कुकूरे-बिलाइक बसेरा। ओकर एहि मजबूरीसँ शहरक बुद्धिजीवी वर्गकेँ कोन मतलब छलैक? ककरा फुरसति छलैक जे राजनीतिक गुटबंदीक चर्चा छोड़ि एकटा अदना लोकक मजबूरी पर ध्यान दितैक?

से ओकर ठकमूड़ी साँझमे तखन टूटल रहैक, जखन एकटा बच्चाकेँ छिट्टामे ल' क' एक गोटे गाड़' जा रहल छल आ ओकरा पाछाँ हाकरोस करैत ओकर माय दौड़ल अबैत छलैक। ओ पथरायल आँखिए तकैत रहि गेल छल।

ओकरा साँझमे पड़ोसियाक टी.वी.—पर मुख्यमंत्रीक हुलसैत-फुलसैत चेहरा, खादीक सोफियाना धोती-कुरता परहक कलप आ संवाददाता सम्मेलनक उत्तर दैत मुख्यंत्रीक वाक्पटुता एवं प्रत्युत्पन्नमतित्वसँ वितृष्णा उत्पन्न भ' गेल रहैक। ओ माफिया हाथक कठपुतरी बनल राजनीतिज्ञ सभक क्लीवता तथा प्रकृति एवं बेइमान मानव-निर्मित विभीषिकासँ उत्पन्न क्रन्दनक चीत्कार, दुनू एके सङ सूनि आ देखि रहल छल।

ओ टी.वी.क समाचारवाचिकाक मुसकियाइत चेहरा, डबल-डबल आँखि, आइ-ब्रो पेंसिलसँ रंगल भौंह, लिपलौज लगाओल ठोरक चमकी आ गुलाबी गालक भूरक सामंजस्य एहि शहरक बेरबादी, शमशानी चुप्पी, भूकम्पी आदंक आ टूटैत हिचुकीक सङ स्थापित करबाक बेकार कोशिशमे लागल छल। कतेक बुड़िबक अछि ओ! ओ अपने मादे सोचने रहय कि तखने काल्हि प्रधानमंत्री आ मुख्यमंत्रीक दौराक घोषणा कयने रहय समाचारवाचिका। ओ हँसैत रहय। हँसैत उठि गेल रहय टी.वी. लगसँ। टी. वी. क मालिक ओभरसीयर साहेब ओकरा दिस आश्चर्यपूर्वक देखि फेर समाचारवाचिकाक ऊपर-नीचाँ होइत ठोर आ दुनू ठोरक बीचसँ निस्सृत आवाजक मधुरताक आभास कर' लागल रहथि। आ ओ अपना मकान दिस निहार' लागल रहय। अष्टयाम आ नवाह कीर्त्तनक मोहल्लामे आयोजनक प्रासंगिकता पर विचार कर' लागल रहय।

ओ सड़क पर टहलैत जा रहल छल। बेचैन। सभ्यताक विकास, वैज्ञानिक आविष्कार आ प्रकृतिक आगू मनुष्यक निस्सहायताक मादे ओ सोचैत जा रहल छल।

ओ जनैत छल-राति भरि जगबाक छैक। कैक राति धरि यैह क्रम जारी रहतैक एखन। ककरो आँखिमे निन्न कहाँ? अनेक झटका आबि चुकल छैक। छौ बेर ओ रोड पर भागल अछि कत्ती-कत्ती राति क'। सौंसे मोहल्ला आसमर्द करैत रोड पर आबि जाइत छैक आ सभ अपना-अपन ढंगे अनुभूतिक विवेचना कर' लगैत अछि। अनुभूति जे अनुभवक रूप ल' लैछ।

भिनसर ओ असोथकित छल। राति भरिक जगरना ओकर पल उठ' नहि द' रहल छलैक। मुदा ओ उठि क' स्नान क' तैयार भ' गेल रहय। ओकरा अस्पताल दिस जाक' देखबाक छलैक। ओ कोनो राजनेता नहि अछि जे हवाइ-सर्वेक्षण करैत, किंवा ओकरा पाछू-पाछू चमचा-बेलचाक झुंड चलितैक। मुदा ओ लोकक व्यथाकेँ लगसँ देख' चाहैत छल। ओ पयरे विदा भ' गेल रहय।

कलक्टर सैहैब सोमरसपान क' सनमाइकावला आभूषणजरित पलंग पर सुतले छलाह। जीरो वाटक नीलवर्णी बत्तीक रिमझिम इजोतमे नाइट-शूट जगमगा रहल छलनि। कि ता टेलीफोनक घंटी बड़ी जोरसँ टनटना उठल। मुख्य-सचिवक संदेश, जे काल्हि बारह बजे दिनमे मुख्यमंत्री आ प्रधानमंत्री द्वारा भुवकम्प-पीड़ित एहि शहरक सर्वेक्षण हैत।

कलक्टर सैहैबक अँगुरी टेलीफोन डायल करबाक हेतु नाच' लागल—हलो सुपरिंटेंडेंट; काल्हि पी.एम. आ सी.एम. आबि रहल छथि बारह बजे। अस्पताल जेथिन—भूकम्प-पीड़ित सभकेँ देख' लेल। हलो, दू टा रूमकेँ एअरकंडीशंड करबा देबैक। दवाइक पूर्ण इन्तजाम हेबाक चाही। कोनो चीजक कमी या रोगी द्वारा शिकाइत नहि हेबाक चाही। एकर ध्यान रखबै। किछु खास रोगीकेँ ट्रेन्ड क' देबैक जकरा पी.एम. आ सी.एम. सँ भेंट-घाँट करेबैक। हम भिनसरे आबि रहल छी।

फेर एस.पी. केँ कानून-व्यवस्थाक हिदायत द' क' कलक्टर सैहैब करोट बदललाह।

रातिएमे सुपरिंटेंडेंटक गाड़ी चलि पड़ल अस्पतालक दवाइक भण्डारपालक ओतय। दुनू गोटे आमने-सामने भेलाह—

—'मिसरजी, काल्हि पी.एम. आ सी.एम. आबि रहल छथि।' अस्पतालक निरीक्षण हेतैक।

—'सर, दवाइ तँ किछु छैके नहि। ताबत् सिन्हा मेडिकल्ससँ जरूरत

भरि मंगा लैत छी। पाछू आपस क' देबैक। फेर दू लाखक दवाइक दावा ठोकि देबैक। पछिलो इस्टौक तँ सभ बजारमे पठा देलिऐक। दस हजार अपनहुँ केँ राखले छै। हम तँ भिनसरे ल' क' जयबे करितहुँ अपनेक बंगला पर। आब आबि गेल छी सर त' एखनहि...'

—'ओ.के. जेहेन विचार हो अहाँक! अच्छा ब्लड-बैंकसँ दू हजार सी. सी. खून मंगा लेब। हम टेलीफोनसँ कहि देबैक मानसरोवर ब्लड-बैंककेँ। और दूमंजिला पर जत' एक्को टा भूकम्प-पीड़ित नहि जा सकय, दू-चारि गो अपन रोगीकेँ ट्रेन्ड क' क' पढ़ा देबैक। दू गो रूम एअरकंडीशन्ड भ' जेबाक चाही। ई सब किछु आठ बजे धरि भ' क' तैयार रहबाक चाही।'

—'अपने निश्चिन्त रहिऔक सर। सभटा भ' जेतैक। कलक्टर साहेबक आगमन धरि सभ ठीक रहतैक।'

मिसरजीक अजेगरि सनक कुमारि बेटी कॉफी आनिक' सुपरिंटेंडेंट साहेबक हाथमे थमा देलथिन। ओ लाइटरसँ सिकरेट धरा ठोरमे लगौलनि आ कॉफीक चुस्की लेब' लगलाह। मिसरजी गेरुआ तरसँ कुञ्जीक झाबा निकालि गोदरेजक आलमारी खोलि दस हजारक गड्डी निकाललनि। बान्हि-छेकि क' बैगमे देलथिन आ सुपरिंटेंडेंट साहेबकेँ अरिआति देलथिन। जाइत-जाइत सुपरिंटेंडेंट साहेब दू शब्द बोकरलथिन —अहाँ अपन शेयर'...

—'हँ-हँ दया अपनेक सर! सब भ' गेल छै।

बेटीकेँ पयर छूबाक इशारा कयलनि मिसरजी। अपने कल जोड़लनि। सुपरिंटेंडेंट साहेबक गाड़ी चलि पड़लनि। भिनसर आठ बजे धरि सभ व्यवस्था दुरूस्त छल। कलक्टर साहेब सुपरिंटेंडेंटक प्रशंसा करैत नहि अघाइत छलाह। आ सुपरिंटेंडेंट मिसरजीक प्रशंसा करैत।

पूरा अस्पतालक मैदान रोगीसँ भरल छल। अस्पतालमे चुट्टी ससरबाक जगह नहि। मैदानमे, रौदमे, टटाइत रोगी। बर्खामे भीजैत रोगी। घुट्ठी भरि पानिमे डूबल खाटक पौआ। काल्हिसँ किकिआइत रोगी सभकेँ दिन घुरलैक। सभ पर अस्पतालक कर्मचारी आ डॉक्टर सहानुभूति बरिसाब' लागल। मलहम-पट्टी होअ' लागल। सभकेँ छुट्टी भेट' लागल। विशेष रूपेँ अंग-भंगवला रोगी सभ भिन्न-भिन्न वार्डमे पठाओल जाय लागल। एहि तरहें पूरा मैदान आ हड्डीरोग विभागकेँ खाली क' साफ-सुथरा कराओल गेल। एगारह बजैत-बजैत जेरक-जेर भी.आइ.पी. सभक जूता खटखटाय लागल।

आठ टा प्रशिक्षित रोगी आठो बेड पकड़ि लेलक। दुनू एअरकंडीशंड रूममे दवाइ-वीरो, खून एवं अन्य आवश्यक सामग्री परिपूर्ण रूपेँ राखल छल। नर्स डॉक्टर, हाउस-सर्जन, भी.आइ.पी. सभ प्रतीक्षारत रहथि-सोफा पर। एक-सँ-एक पुरना डॉक्टर सभ बैसल। रवियोकेँ दर्शन देबाक आ लेबाक हेतु।

ठीक एक बजे। देवराज इन्द्रक पुष्पक विमान नाच' लागल। हरियर सिगनल भेटलैक। विमान उतरल। प्रधानमंत्री, जमीन छूलनि। मुख्यसचिव, राज्यपाल, सभ पाछाँ-पाछाँ चलि पड़लाह। हवाइ-अड्डाक बाहर विशेष रूपेँ सुसज्जित कार तैयार छल। कार सोझे अस्पताल दिस चलि पड़ल। मार्ग आ कोठली बूझल छलैक डरेभरकेँ। पूरा मार्ग पुलिससँ गज-गज करैत। ठाम-ठीम टुटपुजिया नेता सभ माला फेकि रहल छल प्रधानमंत्री पर आ प्रधानमंत्री हाथ-हिला-हिला अभिवादन क' रहल छलाह।

एहि तरहेँ सभ गोटे एअरकंडीशंड कोठलीमे पहुँचि गेलाह। भिजिट होअ' लागल। रोगी सभ खूब प्रशंसा कयलक, अस्पतालक व्यवस्थाक। कोनो शिकायतक सवाले कहाँ? खूनक इस्टौक देखलनि प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री दवाइक इस्टौक देखलनि। एक नम्मरक व्यवस्था।

फिरीसान छलथि प्रधान आ मुख्यमंत्री। एतेक छोटसन घटनाकेँ पेपरबला सभ कोना उछालने छल। भूकम्प तँ जापानमे हरदम होइते रहैत छैक। एहन प्रेसक विरूद्ध संसदमे किएकने मानहानि विधेयक आनल जाय?

पुष्पक विमान आकाशमे उड़ि चलल। अस्पतालसँ सभ दवाइ आ खून पुनः सिन्हा मेडिकल आ ब्लड-बैंककेँ आपस करबाक हेतु एकटा एम्बुलेंस चलि पड़ल। मिसरजी दू लाखक दवाइक दावी तैयार करबाक निर्देश टाइपिस्टकेँ देव' लगलाह।

ओ, जे एहि सभ घटनाक पाछाँ-पाछाँ छाया जकाँ घूमि रहल छल, बड्ड मोसकिल सँ अपनाकेँ संयत बनौने रहल। घूमैत रहल।

ओ हड्डी-वार्डसँ घूरल। एकोटा भूकम्प-पीड़ित नहि। जेना भूकम्प मे ककरो हड्डी टूटले नहि होइक। ओ कैंसर-वार्ड, टी.बी. वार्ड आ बेरा-बेरी सभ वार्ड घूरल। बाँकी सभ वार्डमे लोक किलोल करैत। क्यो देखनिहार नहि। ककरो माथा फाटल। ककरो अंग-अंगक हड्डी टूटल। ककरो किछु, त' ककरो किछु। एकटा दवाई, एकटा कम्पाउण्डर, एकटा नर्स, एकटा हाउस-सार्जन

ककरो पता नहि। खाली रोगी, खाली रोगी, तकर अलिबार-परिवार आ तकर करुण क्रन्दन! ओकर मोन कोना-कोनादनि कर' लगलैक।

आकि तखने वार्डे-वार्डे दवाइक भण्डारपाल घूमि-घूमि क' एलान कयलनि— 'स्टोरमे दवाइ खत्म भ' गेल। प्राइवेटमे जाइत जाउ। अस्पतालमे सरकार दिससँ दवाइ भेटत, तखने उपचार शुरू हैत। रवि रहलाक कारणें क्यो डॉक्टरो नहि औताह।

रोगी सभक आदमी फटाफटि रिक्शा—टेम्पू ठीक कर' चलि पड़ल, प्राइवेटमे भर्ती करेबाक हेतु। ओत्तहु भीड़ भ' जैतैक।

साँझ झिलमिला रहल छल। ओकर पएर दनादनि उठि रहल छलैक। ओ सोच' लागल ई देश कहियो सोनाक चिड़ै छल। सभ्यता-संस्कृतिमे विश्वगुरु। एक-सँ-एक महापुरुषक श्रृंखला। एक-सँ-एक स्वर्णयुग देखने आ भोगने। मुदा प्रजातंत्री स्वर्णयुग सन एकोटा युग नहि।

ओ सोराजक औचित्य पर सोच' लागल। की आइयो एहि देशक अदना लोक अंग्रेजीए राज जकाँ गुलाम नहि अछि? खाली शोषकक चेहरा आ वर्ग बदललैक अछि। पहिने आन शोषण करैत छल, आब अपने लोक। मानसिकता आ व्यवस्था तँ ओहनेक-ओहने छैक!

भूकम्प उनैस सय चौंतीसक होइक, किंवा उनैस सय अठासीक। क्षेत्र दरभंगा-मधुबनीक होइक, किंवा मुंगेरक-शोषक सभ ठाम होइछ। शोषण सभ ठाम अछि। आम लोकक लेल कोन अन्तर? मिसरजी आ सुपरिटेंडेंट साहेब कत' नहि छथि? प्रधानमंत्रीसँ ल' क' मिसरजी धरि सभ अपने लेल। नमस्कार इमानदारी! गेल जाओ!

ओ फेर ओभरसीयर साहेबक टी.वी. लग छल। फेर वैह समाचार वाचिका प्रकट भेलीह। फेर समाचार-पर-समाचार गाँथल। प्रधानमंत्रीक हुलसैत-फुलसैत चेहरा। भूकम्प-पीड़ीत क्षेत्रक सर्वेक्षणक खबरि। संवाददाता सम्मेलनमे व्यस्त प्रधानमंत्री। भिजिटकालक अस्पतालक फोटो। रोगी सभसँ गप्प करैत प्रधानमंत्री। सान्त्वना दैत मुख्यमंत्री। व्यवस्थाक जायजा लैत मुख्यसचिव। आह! एक-सँ-एक परिधान। एअरकंडीशन्ड कोठलीक सजावटिक दृश्य। भी.आइ.पी. सभक फोटो। ओकर मोन छटपटाय लगलैक।

आकि ताबत् मुख्य-समाचार समाप्त भेलैक आ शुरू भ' गेलैक अलका नुपूरक कत्थक नृत्य। एक-सँ-एक भाव-भंगिमा। चम-चम चमकैत

परिधान जेना प्रधानमंत्री आ मुख्यमंत्रीक कुर्त्ताक कलप चमकैत रहैक। नर्त्तकीक थिड़कनमे क्रमशः गति अबैत गेलैक। ओकर पयरक थापक सङ ओकर आँखि नाच' लगलैक। घुघरूक बोलमे ओकरा रोगी सभक किलोल सुनाय पड़' लगलैक। अलका नुपूरक एक-एक बोल पर ओकरा प्रधानमंत्रीक संवाददाता सम्मेलनक एक-एक शब्द सुनाय लगलैक। ओकरा तीनू भुवन नाचैत बुझयलैक। ओकर माथा चकराय लगलैक। ओकरा बुझयलैक जेना अलका नुपूर अन्तर्धान भ' गेल होइ आ ओकरा जगह पर प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मुख्यसचिव, राज्यपाल आ झुण्डक-झुण्ड नेता सभक नचैत फोटो ओकरा आँखिक समक्ष आब' लागल होइ। समूह नृत्य। नृत्य चरम-सीमा पर चलि अयलैक। ओ एक-एक भाव भंगिमाक सङ अपना पयरसँ थाप देब' लागल। टी.वी. पर बैसल सभ ओकरा दिस ताक' लगलैक, रसिक बूझि क'। मुदा ओ राजनीतिक एवं सांस्कृतिक कत्थक-नृत्यक सङ स्वयं नृत्य करैत जा रहल छल।

ओकरा भेलैक जेना ओकरा समक्ष बेरा-बेरी एक-एक क' मुर्दा सभ निकल' लगलैक— 'राम नाम सत्त है, सब का यही गत्त है। ...राम नाम सत्त है।' —सय, दू सय, असंख्य मुर्दा, अनवरत, अनगिनत...

—फेर अलका नुपूर। कत्थक नृत्य। तखन महाकाली आ हुनक सखी-सहेली सभ नरमुंडक माला गंथने, खप्परमे खून चुअबैत। टप्-टप्। बलड-बैंकक खून।

दृश्य-परिवर्त्तन। मिसरजी, सुपरिंटेंडेंट साहेब। एम्बुलेंस। दवाइक गाड़ी। प्रधानमंत्री आ मुख्यमंत्रीक नृत्य— 'ता ता'! त्रिशूल, बघछाला, महाकाली, महाकालस्वामी —प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, अलका नुपूर सभ नचैत! चरमनृत्य! कत्थक नृत्य!

आ कि तखने महाकाली आ महाशिव टी.वी. फोड़ि देलनि आ दुनू अलोपित भ' गेलथि। त्रिशूल आ कत्ता दुनू एके सङ चलि पड़ल आ कत्थक-नृत्य कर' लागल। धिन-धिन-ता-ता...। ता-ता-धिन-धिन। ता-धिन-ता-ता...।

आ ओ टक्-टक् तकैत छल। विस्फारित आँखिएँ।

•

'वैदेही' जून, 1989 ई.

दीप

ओ लालकाकी छलीह। सूप डेङबैत। चारि बजे भोरमे। दीया-बातीक भोर। हुनका अपन नबारी मोन पड़लनि तँ सासुक मरण मोन पड़लनि। ओही साल ओ पहिले-पहिल सूप डेङौने छलीह। नैहरक नाँ छलनि जयकला। सासुरमे पहिल-सुन्नरि भेलीह, जा कनियाँ-मनियाँ छलीह, नवकबेर।

धीयापुता भेलनि, तँ लालकाकी भ' गेली। लक्ष्मीपात्र छलीह। अयली झोपड़ी मे, देखिते-देखिते राजमहल ठाढ़ भ' गेलनि। दस अल, दस दल। चओर डोलैत, मानिक जरैत। मोतीपुर पाटन।

लछमी मानल गेली। पयर पड़िते उन सँ दून भ' गेलैक। छूबथि सोहग्गा, बनि जानि सोना...

लालकका देहाती डॉक्टर छलखिन। दस-उपकारी। सुइया भोंकथि। हैजा छोड़बथि-पानि चढ़ाबथि। इलाका मे टन्ना। नाम्बर लोक। लालकाकीक अबिते मुखिया भ' गेला गामक। तीन टा रत्न भेलनि। तथाकथित पुत्ररत्न।

पहिल पूत दूलारे बुरिया गेलनि। लालकाकीक पेटी तोड़ि रुपैया निकालि मेला भागि जानि। पन्नीक-पन्नी बिस्कुट आनि कुसियारक खेत मे बैसि कुटकुटा जानि, संगी-साथीक संग। फेर कुचालि मे पड़ि गेलनि। घसबाहिनी-बोनिहारिनक ताकमे रह' लगलनि। एक-आधटा चरित्रहीन घसबाहिनी नमरी घिचबाक लोभे पड़िका देलकै। नामी भ' गेलनि। नाक कट' लगलनि। एक बेर जे बाघ मनुक्खक खूनक स्वाद पाबि जाय, तँ बड़ मारुख भ' जाइछै कहाँदन। सैह भ' गेलनि बड़का बेटा। मकइक आड़ि पर, राहड़िक खेतमे, कुसियारक खेत मे, ताड़ी पीबि क' बलजोरी कर' लगलनि। कएटा पंचैती। आजिज भ' गेला लालकका। विआह क' देलखिन।

मुदा सासुरोमे लुतुक छुटलनि नहि। वैह रहलखिन जे बाध-बनमे छलखिन। कोबरेमे एकटा पितियौत-गोतियौत सारि भेंट करए अयलनि, तँ हँसी-ठट्ठाक गलत अर्थ लागि गेलनि। प्रयास केलखिन, तँ तेहेन ने भम्होरलकनि जे सासु-सारिके बिलाड़ि द्वारा भम्होरबाक बहाना बनब' पड़लनि।

फेर पुतोहु अयलखिन। बेटा आब थोड़ेक शान्त भेलनि। पुतोहु लगाम

लगौलकनि। मुदा पुतहुक मातृत्व बहुतो दिन धरि अतृप्त रहलनि। सखा-पात भेलनि नहि। बाँझिन कहल जाय लगलीह। अतृप्ति बदमाशीक रूप ल' लेलकनि। नामी बदमाश भ' गेलनि पुतोहु। बात-बात मे दुमहला पर सँ कंठ फाड़य लगनि पुतोहु। परोपट्टाक लोक कहय—मुखियाजीक पुतोहु छिऐक। बारह बर्खक बाद बाँझपन हटलनि पुतहुक। बेटा भेलनि, बहुत खर्चाक बाद।

अपने लालकाका मुखिया छलाहे। बड़का बेटा नामे डीलरीवला लाइसेंस बना देलनि। चारू दिस सँ बटोर' लगला। लछमीकेँ खुटेस देलनि अपना बथान पर। टैरगाड़ी भाड़ा पर चलैत। ठट्ठ गृहस्थी। जमल।

मझिला बेटा सेहो मैट्रिक करैत-करैत दू बेर घर सँ भगलनि। ओकरो विआह-दान करा देलथिन। पुतोहु दू दियादनी भ' गेलथिन।

बड़कीकेँ होब' लगलनि तँ चारिटा बेटी भेलनि। दोसर बेटाक प्रतीक्षामे। हारि क' अपलेशनक शरण लेलनि।

माँझिलकेँ सेहो दू बेटा, दू बेटी।

छोटका बेटा घीचि-तीर क' बी.ए. पास केलकनि। ओकरहु घर-परिवार बसा देलखिन। मझिला आ छोटका ठीकेदारीक लाइसेंस बनौलथिन आ अपन-अपन राष्ट्रीय बचत प्रमाण-पत्र, आर.डी. एकाउन्ट, फिक्सड डिपोजिट, आदि केँ मोटाब' लगलथिन। छ' टा बेटी लालकाका केँ। छबो सँ निश्चिन्त। सभ जमाय एक-सँ-एक हीरा। सभ विआह—दुरागमन होइते-होइते अपन-अपन असला-खसलाक संग शहरक शरण लेथि। लालकाका आ लालकाकीक नैन जुड़ा जानि, धने-जने भरल-पुरल बेटी-जमाय केँ देखि। क्यो बाँझ-बहिला नहि। न' टा संतान। नबो भरल-पूरल परिवार। आर की चाहियनि?

मुदा नहि। चाहियनि आर किछु।

जे बेटी-जमाय सब बुझैत छनि, बेटा-पुतोहु नहि। लालकाका सिद्धान्तवला लोक। बेटी-जमायकेँ बेसी दी नहि, तँ लेबो नहि करी किच्छो। बेटी-जमायक सख-सेहन्ता मे लालकाकीक जिद्दक बावजूद लुत्ती लगौनिहार लालकका, जमाय सँ एकटा खड़ लेबाक पक्षमे नहि। बेटी-जमाय सेहो अपन धोंछ बाप-ससुर सँ पूर्णतः निश्चिन्त।

तखन चाहियनि की भला?

चाहियनि आदर-स्नेह मान। से तीन बेटा-पुतोहु सँ नहि भेटलनि। जरैत

रहलाह। सूई भोंकैत रहलाह। परवरिश करैत रहलाह सभक। सभ गराड़ बनल रहल। छ'-छ' सात-सात गोटेक अलिबार-पलिवारबला बेटा सभ, अपना-अपनी क' माय-बाप सँ घीचबामे व्यस्त रहल। के कते लैत अछि गार्जियन सँ, ताहि प्रतिस्पर्धा मे सभ आत्मलीन। अपना-अपनी मे समेटल। महास्वार्थी।

पुतोहु सभ सुलक्षणा छलथिन। भानस केना करितथिन बौआसिन सभ? दरबज्जा पर महावीरजी आ कालीमाइक मंडिल छलनि। एक घर पंडा बसौने छलाह। पुजवाक निमित्त। पंडा शिवकान्त मंडिल-पूजनक अलावे, घर मे एम्हर-ओम्हर काज करैत छल। ओकर माय भानस क' दैत छलनि लालकाकीक। जहिया पंडाइन दुःखित पड़ि जाय, तहिया लालकाकी अपने। साठि बर्खक उमेर छलनि। दन्तार सनक हाँड़ी- लोहिया छलनि। चौबिस गोटेक भानस साँझ-प्रात। अपस्याँत भेल लालकाकी। डाँड़ झुकल लालकाकी। एक आँखि चलि गेल छलनि। मथदुःखी माय दिस सँ विरासत मे भेटल छलनि।

मथदुःखीक दवाइ अपने लालकका करैत रहलथिन। अन्ततः मथदुःखी एक आँखि केँ निपट क' क' चलि जाइत रहलनि। दोसर आँखि मे मोतियाबिन्द। अपलेसन भेलनि। क्यो ताकुत कयनिहार नहि। चश्मा देलकनि डॉक्टर। बेटी-जमाय सभ जिगेसा करए आबय लगलथिन। धरोहि लागि गेलनि। छाती सूप सनक भ' जानि ललकाकीक।

खूब फबनि चश्मा। एक बेर पयर पर अढ़ैया खसि पड़लनि। किछु तौलैत रहथिन। पयर चुड़ा गेलनि। पूरा ठीक नहिये भ' सकलनि।

नेङराइतो मुदा लालकाकी करैत रहली। मरैत रहली। बेटा-पुतहुक व्यवहार सँ धक्का लगलनि। धड़कनक बेमारी भ' गेलनि। लालकाका केँ बजबाक बय भ' गेलनि। एक हजार जंजाल। हर बखतक फिरीसानी।

दरबज्जा पर चंडाल-चौकड़ी जमनि। जोड़ीक-जोड़ी तास फेंटाइत। व्यवस्था लालकाकाक!

भिनसर क' न' बजे धरि चाहक रमझौआ। सय, डेढ़ सय, कप। ओतबे पान। व्यवस्था लालककाक!

ताहि परसँ निकम्मा लोक सभक भीड़। बड़का बेटा अपना सार केँ राखि पढ़बैत छलनि। बेरोजगार बेटा, कनियाँ, पाँच बच्चा, तखन सार। पूर्ण निर्ल्लज। व्यवस्था लालकका-लालकाकीक। थाकि जाइत गेलथि दुनू। तीन-तीन बेर मैट्रिक फेल, आइ.ए. मे चोरीक आरोप मे निष्कासित सार।

मुदा सार, तें गराड़। लायक स्वाधीनता सेनानीक नालायक पूत। देखाउँसे मझिला बेटा सेहो अपना सारकेँ रखने। तास आ भोजन। बस्स एतनी जीवन। अनका सहारे! गराड़ बनल। बहिनोइ सभक फोंकिला ठेसीक बल पर ढेकरैत।

बड़का बेटाक बिलेकमे चीनी बेचवाक आदतिक परिणामस्वरूप शिकायत भेलैक। अचानक सी.ओ. क निरीक्षण मे पकड़ा गेलनि। डिलरी समाप्त। जहलक स्वाद भेटलनि बड़का बेटा कें।

फेर जमानति करौलथिन लालकका। केस लड़य लगलाह सरकार सँ। लाइसेंस मुदा रद्द भ' गेलनि।

आब बड़का पूत ठीकेदारी लाइसेंस बनौलकनि। करए लगलाह। टेन्डर लेबा लेल इंजीनियरक लल्लो-चप्पो। जे केनाइ आवश्यक होइक, सभ किछु।

एही क्रममे कए टा ठीकेदार सँ आ नहि जानि ककरा-ककरा सँ कतेक पाइ पैंच-ऋण लेलकैक। देबाक सवाले ने कोनो। सभ आबि-आबि लालकका केँ तगेदा करनि। लालकका एक-एक क' सधब' लगलाह। इज्जतिक प्रश्न छलैक।

फेर नौकरी लेल सभ भाइक आपसी प्रतिस्पर्धा। बड़का केँ आयुर्वेदिक कॉलेज मे किरानी बनवाक छलैक। सात हजार घूस चाही। भरलनि लालकाका।

मझिला केँ एहने एकटा इंजीनियरिंग कॉलेज मे तकनिकी नौकरी पकड़वाक छलैक। सात हजार। ओहो भरलनि लालकाका। छोटकू वयस्क शिक्षा मे घोंसियाय चाहलनि। दस हजार। लालककाक अलमारी हलुकाय लगलनि।

सब भाय चाकरी मे लागल। अपना-अपना मे। लालकका सैह चाहिते रहथि। पैंसठि सालक उमेर। तैओ भिनसर सँ साँझधरि एके पयर पर नाचल फिरथि। प्रतिपाल करबाक हेतु। प्रतिदिन पचास-सय टकाक सूईभोंकीक' आमदनी। प्रतिदिन पचीस टकाक तरकारी। छोट-छीन भोज प्रतिदिन। भनसीया आजिज भ' जाय। लालकका आजिज भ' जाथि। लालकाकी पोता-पोती नाति-नातिन सँ तंगो-तरीज भ' जाथि। कोनो-ने-कोनो बेटी-जमाय प्रायः अबिते रहैत छलनि। बेटी-जमाय केँ देखिते लालकाकीक मोन साओन मासक मेघ उमड़ला पर झूमैत मयूरी सनक झूमय लागनि। मुदा बेटा-पुतोहु सभ सँ जुड़ेबाक सपना, सपने रहि गेलनि। पुतोहु सभ दिस नजरि जाइते ओ

एना झूड़-झमान भ' क' खसि पड़थि, जेना चरम-गति सँ नृत्य करैत मयूरीक नजरि ओकर सुखाएल टाङ पर पड़िते ओ झूड़-झमान भ' क' खसि पड़ैछ।

लालकाकी सेहो सौंसे जिनगीक प्रयाससँ लगाओल पलिवारक फुलवारीः फड़ल-फुलायल आ ताहिसँ नहि जुड़ेबाक संतापसँ अतृप्त रहि गेली। एहिमे हुनका लालोकका संग नहि देलथिन। पुरुष-प्रधान समाज मे पुरुषक मनमानी केँ साधारण बात आ स्त्रीगणक भाग्य मानि क' ओ खेपैत गेलीह। लालकाका कर्मपुरुष छलाह, से अवश्य। मुदा छलाह तँ एही पुरुष-प्रधान समाजक एकटा सदस्य। ताहि स्तर पर ओ उदार भ' क' केना समाज मे नामर्दी देखबितथि?

लालकाकी नेङराइत, सौंसे पलिवारक सेवा-बरदाइस करैत रहली। साठि सालक उमेर मे। हुनकर क्यो नहि केलकनि।

से लालकाकी आइ दीयाबातीक चारि बजे भोर मे संठी ल' क' सूप डेङा रहल छलीह। घरे-घरे जिंजिड़ खोलबा क' ढुकि-ढुकि क' डेङबैत जा रहल छलीह। क्यो-क्यो खौंझा रहल छलनि, निन्द मे खलल पड़बाक खातिर। मुदा ओ डेङबैत जाइत छलीह। आ कनैत जाइत छलीह।

तीनू बेटा महीने-महीने दरमाहा उठा क' पुतहुक कोंचामे खोंसि दैत छलनि। घरक खर्चा लेल लालकाका-लालकाकी! लालकाकी केँ सेहन्ता रहि गेलनि, जे एकहु टा बेटा कहियो दरमाहा उठा क' हुनको खोंइछा मे दितनि। फेर बरु ल' लितनि। हुनका टीस देलकनि। एहि भावनाक एहि घर मे कोनो स्थान नहि छलैक।

से जुड़ेलनि जमाय सभसँ। लालकाकी प्रशंसा करैत नहि अघाथि जमाय सभक। मुदा आब लालकाकी सँ घीचल नहि जानि।

लालकाकी सूप डेङबैत जाथि आ नोर हहरल जानि। एतेक टाकेँ जिनगी जेना सपने मे बिता देलनि। कोनो तीर्थो-बर्थो नहि केलनि। भेटलनि की? एक मुट्ठी सुख, एक छिट्टा दुःख। फन-फन जरैत तूर सन सुख, पहाड़ सनक दुःख।

ओ सूप डेङबैत छलीह। हुनका भेलनि सूप हुनके पीठ छियनि। हुनका अपने पीठ पर चोट लगैत बुझयलनि। मोन पड़ि गेलनि, तीन साल पहिने कोनो बात ले बड़का बेटा सँ मतान्तर भ' गेलनि। बाता-बाती उग्ररूप ध' लेलकनि। एतेक, जे बड़का बेटा चूल्हा तर सँ चेड़ा उठा क' पिटपिटा

देलकनि। घर दलमलित भ' गेल। लालकाका ओकरा परिवारक खेनाइ-पीनाइ चारि साँझ धरि बन्द क' देलखिन। मुदा अपनहुँ सभ केँ गीड़ल नहि जानि। फेर लालेकाकी खेनाइ बनाक' द' अयलथिन। **'कुपुत्रो जायेत, क्वचिदपि कुमाता न भवति।'**

अपने सन्तान द्वारा चेरा सँ छरपिटायब कूहि देलकनि लालकाकी केँ। चोट सँ बेशी, समाजक बूझब हुनका कूहि देने रहनि। पीठ केँ नहि, करेजा केँ। हुनका शोग ल' लेलकनि। आइ हुनका अपना आ सूपक पीठ मे, संठी आ चेरा मे, कोनो अन्तर नहि बुझाइत छलनि।

आ ओ हबोढकार कनैत, एहि कोन-सँ-ओहि कोन धरि सूप डेङबैत जा रहल छलीह। ठोर पटपटाइत छलनि— अन-धन-लक्ष्मी घर आउ, दालिद्र बहार जाउ... ककरा लेल? ककरा लेल? चेरा सँ पीटयला बेटा लेल? बात-कथा कहयवाली पुतोहु सभक लेल? कि पाहुन बनल बेटी-जमाय लेल?

लालकाकी केँ आहि आबि गेलनि। विरोग छूटि गेलनि। अमावस्या रातिक अन्हार काजर सनक कारी रहय। अज्ञानताक अन्धकार। ताहि मे कतौ-कतौ माटिक दिवारी टिमटिमाइत।

चारि बजे भोर मे तेल-बाती लगिचा गेल छलैक। लालकाकी केँ चिन्ता भेलनि-कहीं मिझा ने जाय? जेहो ज्ञानक प्रकाश अज्ञताक अन्धकार केँ चीड़ैत जरि रहल अछि, सेहो ने मिझा जाय? पह फाट'वला छैक। तावत जरैत रहबाक चाही। ओ देखलनि तुलसी-चौड़ा परहक दिबारीक तेल खतम भ' रहल छलैक। ओ टेमी घुसुका देलनि। एकटा मिझैल दिवारी सँ तेल ढारि, ओइ दिबारी केँ जीवन देलनि।

एक बुन्द आँखि सँ खसि पड़लनि दिबारी मे। हलचल भ' गेलैक। ओहि दिवारी सँ ओ आश्वस्त नहि भ' सकलीह। क्षीणो सनक आश्वासन ओ नहि द' सकलनि, से बात नहि। मुदा, हुनका भेलनि जे एतेक तेल भिनसर धरि टेमी केँ जिया क' नहि राखि सकतैक। मुदा, हारलाक बावजूदो, आत्म-सम्मानक भावना सँ असगरे संघर्षरत, सीमा परहक कोनो अन्तिम सिपाही जकाँ, ओ दिबारी मे तेल ढारि देलनि। दिवारी जर' लागल। ओ सूप डेङबैत विदा भ' गेलीह। आँखि पोछैत।

•

रचना, अप्रैल-जून, 1989 ई.

थाक

'लगहरि' विभागक एकटा 'सम्मानित' अधिकारी।

सम्मानित? कोन अर्थ मे? कथीक बल पर?

पाइक बल पर। सामाजिक कार्यकर्त्ताक अर्थ मे। बिहार सरकारक एकटा राजपत्रित अधिकारी। कृष्ण कान्त ठाकुर। पद, प्रतिष्ठा, धन, सामर्थ्य। कोनो अर्थ मे सम्मानिते कहल जयताह, आइ-काल्हिक समाज मे। अंततः आइ-काल्हि सम्मानक हेतु आर की चाही? जे चाही, छलनि।

पितानाथ धनिक छलथिन। मैट्रिक प्रथम श्रेणी मे पास कयलनि। सभ व्यवस्था रहैक। केन्द्र पर अपन आदमी, गार्ड सँ सुपरिंटेंडेंट धरि। आइ. एस.सी मे सेहो तेहने रिजल्ट। दिक्कत नहि भेलनि। बी.एस.सी. मे टॉप क' गेलाह। मौसाजी विभागाध्यक्ष रहथिन।

बैसलाह वन-विभागक बड़का औफीसरक परीक्षा मे। बहती गंगा रहैक। हाथ धो लेलनि। दौड़-प्रतिस्पर्धा मे पाँचे हजार मे पार लागि गेलनि। डी.एस.पी. मामाक मित्र रहथिन। लिखित परीक्षा, अन्तर्वीक्षा या मेडिकल टेस्ट मे क्रमशः दस हजार, दस हजार आ दू हजार। एहि तरहें कुल्लम सत्ताइस हजार मे बनि गेलाह वन-विभागक अधिकारी। सहायक वन संरक्षक। बड़का गो हाकिम।

अगिले साल पिताजी विवाह करौलथिन। अपने कारी खट-खट रहथि। इच्छा गोर कनियाँक रहनि। पीढ़ी सुधारबाक हेतु। पिताजी एहने पार्टी टेबलथिन जिनकर कनियाँ भव्य रहथिन। शालीन।

कनियाँ भावी स्वर्णिम जिनगीक सपना मे डुबैत-उतराइत। वर, कनियाँक रूप-लावण्यक गुलाम, वेदिऐ तर सँ।

पितानाथक बेटा केँ लगहरि औफीसर बनयबा मे लागल सताइस हजारक दुन्नो सँ बेशी ऊपर भ' गेलनि-एकसठि हजार। ताइ दिन मे। व्यवस्थित (?) छलाह। व्यवस्था भेटलनि। सोना सँ छड़ा गेलनि। पुतहुक एक-एक अंग। कोनो अंग बाँकी नहि रहलनि। नाम भ' गेलनि इलाका मे। एकसठि हजारक रेकट, बहुत एम्हर आबि क' टूटल अछि। एकटा इन्जीनियर द्वारा।

कन्यागतोक माथ ऊँच भ' गेलनि। जमाय अनलक अछि। कारी भेलैक तँ की? शंकर जी, कृष्ण भगवान, सभ तँ कारिये छलथि। भाग होइत छै। तकदीर होइत छै। श्रीमन्त छथिन। चेहरा पर पानि छनि। छट-छट करैत छथि। छैल-छबीला। एसमार्ट। सासु धन्य। बेटी केँ आगू-पाछू करबाक, करैत रहबाक आदेश देलथिन। दिनो केँ घर जेतैक दीपा। जमाय केँ भियाओन काजर कयलथिन सासु, नजरि-गुजरिक खियाल सँ। सबकेँ बूझल छलैक—जंगलक हाकिम। राजपत्रित अधिकारी। बहुत पाइबला पद। दीपा लेपित भ' गेलि वर मे। सोझे बर्खे दुरागमन करा लेलथिन ठाकुर। दीपा दूजीवा भ' क' सासुर गेलि। गोर-नार चिक्कन-चुनमुन बेटा। सभतरि हँसी-खुशीक वास।

दुरागमन मे कोंच-अलमारी, अलना-कुर्सी-टेबुल आदि मे दीपाक बाबूजी केँ किछु लगलनि नहि। लगलनि एकटा अशोक लीलैन्डवाला ट्रक, अपना दरबज्जा पर। कथ, सागवान, सखुआ, चह, तरह-तरहक लकड़ी सँ भरल। दुनू दिस यश। जमाय विष्णुक अवतार होइछ। सैह छलथिन। दुनू घरक कल्याण। एके ट्रक मे।

ठाकुर केँ लोटा ल' क' सार बाध दिस ल' जाइत छलनि—से ककरो नीक नहि लगैत छलैक। जमाय गंभीर छलथिन। ककरो सँ ढील गप्प कयनिहार नहि। जमाय चारि हजार देलथिन। पैखाना बनि क' तैयार भ' गेल।

ता दीपा फेर दोसर बेटाक माय बनली। अगिला साल तेसर। दीपा रानी मधुमाछी बनलि सुखक भोग करैत छलि। दू टा नोकर हरदम आगू-पाछू करैत रहैत छलैक। दैनिक मजदूरी पर नियुक्त। वेतन कतहु बनैत छलैक, काज कतहु करैत छलैक। ओकरा की आपत्ति भ' सकैत छलैक? ओकरा आपत्तिक अर्थे की छलैक? नौकरी कोनो एतेक छोट आ आसान चीज नहि।

ठाकुरक प्रतापें दीपाक दू टा भाय आइ आपूर्ति विभाग मे दैनिक मजदूरी पर नौकरी क' रहल छलैक। हेबे करतै पारमिन्ट आइ-ने-काल्हि। एहने एकटा बाभनक टेल्ह सासु-ससुरक सेवा करैत छलनि, सासुर मे।

गाम मे नौकरीक चारिम वर्ष मे आठ कोठलीक मकान बनौलनि। पोखरिक मोहार पर। दू कोठलीक छोट भायक हेतु सेहो बना देलथिन। अलग सँ। बहुत सेवा केने रहनि, हुनका दीपाक ओ। जखन दीपा खून मे नहायल रहय, बाल्टीनक-बाल्टीन कपड़ा छोट भाय खीचनि। ई सभ काज

नोकर केँ नहि करए देथिन ठाकुर।

से नाम भ' गेलनि। पैघ भाय हो तँ एहेन। बिना सोचले दू कोठली बना देलखिन ओकरो। के ककरा देखैत छै? भाय-भाय केँ आब भाय कहाँ बुझैत छै? भगवान छथिन सोझे-सोझ। पिताजीक मृत्यु भ' गेलनि।

लोकक आशा सँ बेसी जयवार नोतलनि। खाजा-मुङबा, सोहारी-तरकारी, दही-चिन्नी ल' क'। थैः थैः भ' गेलैक। दिग्विजय भ' गेलनि। ठेहुन-छाबा। यशक बाढ़ि कमला-कोसीक बाढ़िक रेकर्ड तोड़लक।

माय विधवा भ' गेलथिन। पाँच हजार द' क' काकाक संग चारू धामक तीर्थयात्रा करा देलथिन। काका धन्य। अपन बेटा बुरिया गेलनि। प्राइवेट कालेजक प्रोफेसर। तीन सय मासिक। पी.एच.डी. क' क' की भेलनि? इमानदार छथि। सुखाएल छथि। घिनायल छथि। बाप केँ चारू धामक यात्रा पर जाइत काल, एकटा अठन्नीयो धरा नहि सकलाह।

मुदा छोट पितियौत कृष्णकान्त ठाकुर हुनका बाप केँ से करा देलथिन। आ हुनका सँ किछु नहि भेलनि। भरि-राति जगले रहि गेलाह। भिनसरे कनियाँ केँ सुतले छोड़ि, बाबूजीक तीर्थयात्रा लेल विदा हेबा सँ पूर्वहिं, साइकिल उठा कॉलेज दिस चुपचाप भागि गेलाह।

माय एकादशीक यज्ञ कयलथिन। अपने जीबैत अपन श्राद्धकर्म। अपने द्वारा। की व्यवस्था नहि छैक प्राचीन हिन्दू-पद्धति मे? जेहेन पैरुख, तेहने व्यवस्था!

बापक वृषोत्सर्ग श्राद्ध आ भोज आदि मे लाखो टपि गेल रहनि। मायो मे लोक सैह आशा करैत छल।

माय विख्यात ब्यास अभिराम दास केँ बजाक' भागवत सुनवाक इच्छा प्रकट कयलथिन। बेटा तैयार!

कुटी बनल। सभ बन्दोबस्त भेल। एक ट्रक लकड़ी मे सभ किछु व्यवस्थित। चुटकी बजबैत। समाज दासो-दास। बरमहल दस टा ब्राह्मण-भोजन भैए जाइत छलैक। धर्म-कार्य मे समाज हिनका प्रतापें किछु पुण्य लूटिए लैत छल। समाज केँ आर की चाही?

माय भागवत सूनि लेलनि। सब सुख भोगि लेलनि। सरबन बेटाक परतापे मैयाँ बनि गेलीह। सभ अद-पद भ' गेलनि।

अपने ठाकुरजी तीन बेर सस्पेन्ड भेलाह। मुदा क्यो बूझि नहि

सकल। तीनू बेर पचास-पचास हजार खर्चा क' आबथि, हेड-ऑफिस मे। सभ किछु ठीक-ठाक भ' जाइक। चरित्रक प्रतिवेदन साफ-सुथरा। कहियो लाल नहि लागल। हेड-ऑफिसक अधिकारी सभ चरण-पुजाइयेक हेतु सस्पेन्ड करबाक नाटक करैक, से बूझथि ठाकुर जी।

ठाकुर जी एक लाख खर्च कयलनि। प्रमोशन हेतु। लक्ष्मी की ने करथि? भ' गेलनि। आब जिला वन अधिकारी भ' गेलाह। बड़का हाकिम। बेशी गुंजाइश। विभागक गाड़ी सार एमहर--सँ-ओमहर हुड़हुड़ौने घूरनि। पुलिसक कत' मजाल जे टोकय? बहिनोक गाड़ी। अनधिकृत कोना? पुलिसक वरीय अधिकारी निरीक्षण मे आबय, ओकर एक नम्मरक स्वागत केर इन्तजाम राखथि ठाकुरजी। चपरासी सभ दासो-दास भेल। छ' घंटाक जप केँ ठाकुरजी अति-संक्षिप्त क' देथि। माँक उपासक। शक्तिक उपासक। चपरासी सभ मुर्गा हलालय। विदेशी शराबक व्यवस्था करय। देसी देहक बेवस्था करय। सहजहिं प्राप्य। जंगली मासुक आर कोन साफल?

मुदा डाकबंगला मे। डेरा मे नहि। ठाकुर जी अपने सन्त स्वभावक छलाह। हँ, झूठोक कलंक लगायब उचित नहि। अपने दीपाक सिवा कहियो ककरो छूलनि नहि। पूजा, दीपा, रुपैया। बस्स!

निरीक्षण मे आयल अधिकारीक विदा होयबा काल, कल जोड़ने ठाकुर जी, प्रसन्न मुद्रा मे भेंट करथि। मन्द-मन्द मुसकिआइत। दुनू भौंहक बीच मे सिनुरक ठोप जगमगाइत। 'कोनो दिक्कत नहि ने भेल? सेवकक मुद्रा मे। प्रश्नवाचक दृष्टिएं। आ हेड-ऑफिस मे हिनकर फाइल नाच' लागय। रबाइस जकाँ।

लाखक-लाख के लेन-देन प्रतिदिनक रहैक। बीड़ी-पातक लीलाम। ठीकेदारी ब्यवस्था। निविदा-सूचना। अपन ठीकेदार। अपन बात-बेवस्था। बिना कोनो हरहर-खटखट के अलमारी भरि जाय। दीपा उठि बैसय। नैहर आबय दीपा, तँ घोल भ' जाइक। दीपा एलै, दीपा एलै। आर कोनो बेटी मे एना नहि होइक। बड़की बेटी कहिया आबय, कहिया जाय, क्यो बूझय नहि। बुझबा योग्य पोस्टे नहि छलैक ओकरा पतिदेवक, मिडिल इसकुलक शिक्षक। ओ शिक्षक कहियो 'सुख' नहि द' सकलथिन, दीपाक बड़की बहिन केँ। कत' स' दितथिन? एकटा बेटी सेहो भगवान द' देलथिन। ताही चिन्ता मे भरि दिन, भरि राति मरय दीपाक बहिन, हमर बेटीक निमेरा केना

हेतै गे दीपा?

ओना, कहाँदन सभ सन्तान-सन्ताने होइ छै। एके रंग। मुदा दीपा आ ठाकुरक जे स्वागत-सत्कार होइक, से ओकर बड़की बहिनोइक केना होइतैक? से दीपा जनैत छल, जे ओकरा बहिनोइ केँ ई बात फील होइत छनि। ओ की करैत? अपना सौभाग्य केँ केना नकारि देत? ओ त सोचने अछि जे हुनकर बेटी पुष्पाक बिआह मे दस हजार ठाकुरजी सँ देखौका आ पाँच हजार अपना दिस सँ चौरौका देतनि। आर की करत? बहिनोइ केँ औफिसर बना देत, से तँ संभव नहि छैक। क्यो ककरो लेल की करत? कत्ते करत? कतबो किए करत? ई त नाते छैक बहिन-बहनोइक, तेँ ने। सारिक रूप मे तँ कतेक ने सेवा केने छनि जे...

तखन ओकरा भाग्य सँ ईर्ष्या तँ नहि करबाक चाहियनि। आइ जे एना कमाइत छथिन ठाकुर जी, तें ने पन्द्रह हजारक मदति हेतनि बेटीक विवाह मे तखन हिनकर घूस कमेबाक आलोचना किए करैत रहैत छथिन? के नहि कमाइत अछि आइ-काल्हिक जमाना मे? खाली बुड़िबके टा। अपनो नहि कमैतथि? गुंजाइशे ने छैक जत' कमेबाक, तत' तँ लाचारी-इमानदारी होयबे करतैक?

ठाकुरजी अपना गाम मे चौपहरा पूजा कयलनि। गाम उनटि क' आयल रहय आँगन मे। सौंसे गौआँ कीर्त्तन कयलक। गिलासक-गिलास प्रसाद पीलक। चिकसाही प्रसाद नहि। प्रसाद सनक प्रसाद। लोक केँ बुझयलैक जे पूजा सनक पूजा छलैक। फुसियांहीक शंख फुकनाइ नहि। फेर ब्राह्मण भोजन आदि...

मुदा ई सभ तँ समय-समय पर होइतहिं छलैक। ठाकुरजी सोचलनि, कोनो स्थायी महत्वक धर्मक कार्य कयल जाय। अपना पोखरिक मोहार पर एकटा माँकालीक मन्दिर बनायब आरंभ कयलनि। न्यों लेलनि। धूमधाम सँ। मन्दिर देखिते-देखिते बनि क' तैयार भ' गेल। कोनो की चन्दावला मन्दिर छलैक जे हकन्न कानि क' उठितैक? एके बेर सर्र द' आकास छू लेलकै। भव्य प्रतिमा बैसाओल गेल। पूर्ण व्यवस्थित। नियमित रूपें पूजा करबाक हेतु एकटा भगत, गुणदेव, केँ भार देलथिन। मासिक रूपें किछु हथउठाइ। जैह-सैह। बैसल गुणदेव केँ...

मन्दिर पर लाउड-स्पीकर कीनि क' द' देलथिन। भोर-साँझ हेतु

भजनक अनेक कैसेट सेहो। गुणदेव बजाओल करथि। अनूप जलोटा, हरिओम शरण, शारदा सिन्हाक तरह-तरहक भजनक कैसेट। कालीमाँ सूनल करथि। गुणदेव गूनल करथि।

ठाकुरजी दीपा-पति छलाह। कए लाखक पति छलाह। यश-पति छलाह।

मुदा ठाकुरजी सुखी नहि छलाह। ऊपर सँ शान्त रहितो, भीतर सँ अशान्त छलाह।

एकमात्र इच्छा अतृप्त छलनि—एकटा बेटी। एकटा कन्यादान करबाक सख। इच्छा दीपा केँ सेहो छलैक।

मुदा अपना हाथक बात नहि छलैक। एतेक मन सँ पूजा तँ करिते छल! भीख, दान, धर्मक प्रत्येक काज करिते छल। कत' त्रुटि छलैक, नहि जानि। माँकाली कहिया पूरा करथिन ठाकुरजीक इच्छा?

ठाकुरजी माँ कालीक जप पर सँ ऊठथि। विशुद्ध पंचमुखी रुद्राक्षक बनल हार राखथि आ दीपा मे मगन भ' जाथि। दीपा माँ के गोहराब' लागय।

एकबेर माँ सुनलथिन, तँ चारि मासक भ' क' चलि गेलैक। बाल्टीन उठा लेलकै। नोकर, नौकरी गमौलक। सस्पेंड क' देलथिन। फेर पूजा-अचर्ना होब' लागल। आफिसक काज बेसी सारे सम्हारि लैत छलथिन।

ठाकुरजी दर्शनक सन्दर्भ मे रजनीश सँ प्रभावित छलाह। बरमहल हुनकर चर्चा कयल करथि।

से समाधिस्थ भ' क' दीपाक संग ओ रहैत छलथि। पूर्ण आस्थाक संग। आंगुर पंचमुखी रुद्राक्षक हार पर जप करैत रहैत छलनि। दीपा आँखि मूनि क' माँक स्मरण करय। बेटीक कामना करय।

माँ सुनलखिन। दीपा भारी भेलि। दीपाक बाबूजी अस्पताले मे कम्पोटर छलखिन। ओ आ ठाकुरजी एहि बेरक अवसर केँ कोनो कीमत पर गमाब' नहि चाहैत रहथि। दीपा नैहर जेबाक इच्छा प्रकट कयलक। ठाकुरजी तैयार। ब्यवस्था मे तत्पर।

कार भाड़ा पर लेल गेल। दीपाक मनोरंजन हेतु रंगीन टी.वी. कीनि क' सासुर मे लगाओल गेल। गर्मी सँ बचवाक हेतु जिला वन अधिकारीक हैसियत सँ विभागीय जेनरेटरक खरीद भेल—होण्डा जेनरेटर। सार दिल्ली सँ कीनि सोझे अपना गाम पर ल' अनलथिन। सारक खानगी पदस्थापन दीपाक

बच्चा हेबा धरि सासुरे मे (?) क' देलथिन—विभागीय बुलेट गाड़ीक संग। दीपा अले-दले आबि गेलि नैहर।

जेनरेटर आँगन-घर मे चानन छिलकाब'वला इजोत सँ राति केँ दिन मे बदलैत रहल। दू टा नोकर घरक काज सम्हारय लागल। ठाकुरजी शनि क' आबथि। सोम क' जाथि। दीपा बिना एक सप्ताह रहब कम नहि भेलनि।

समय बीतैत गेल। लगिचाइत गेल। दीपा अथबल होइत गेलि। सेब, सम्तोला, अनार, मौसमी, केरा, कम्प्लान, प्रोटिनेक्स, डेक्सोरेंज—तरह-तरह के फल-फलहरी आ टॉनिक-दवाइ चलैत रहल। कोनो कमीक सवाले नहि छलैक।

साप्ताहिक जाँच। टेटनसक सुइया। जे कोनो विज्ञापन राति मे टी. वी. पर आबय, बच्चा-जच्चाक स्वास्थ्य हेतु भिनसरे बजार सँ किना क' आबि जाय दीपा लग।

समय आबि गेलैक। दीपावली-लक्ष्मीपूजा। अन्हार पर इजोतक विजय नहि। ओ मात्र औपचारिकता। छुरछुरी-रबाइसक पर्व। धनतेरस, धनक पूजा। लक्ष्मीक पूजा मुख्य, गणेशक गौण। धूमधाम आ देखयबाक पर्व। अज्ञता पर ज्ञानक विजय नहि। लक्ष्मी केँ खुटेसबाक पर्व।

ठाकुरजी अयलाह। लक्ष्मीपूजाक विस्तृत इन्तजाम भेल। पंडितजी नव वस्त्र धारण कयलनि। ठाकुरजीक उन्नत छातीक कारी-कारी केस विरुदावली गबैत छल। चाण्डालत्वहीनताक। उदारताक।

ठाकुरजी होम-जाप शुरू कयलनि। पंडितजी श्रीसूक्त सँ पढ़ब' लगलथिन।

दीपा केँ दर्द उठलैक। भाय डॉक्टरनी केँ बजा अनलथिन बुलेट सँ। डॉक्टरनीक कार रूकल। होमक धधरा धधकैत गेल। पूजा होइत रहल। निशा रात्रि मे माँक पूजा। दीपा बेहोश भ' गेलि।

सुइया-पर-सुइया पड़य लगलैक। बच्चाक गरदनि अटकि गेलैक। नाभि पहिनहि निकलि गेलैक। डॉक्टरनी अकबका गेलि। एक-एक सुइया पर कने-कने निकलैक। एकबेर एहने सन जोर पर बच्चा फेकलकै। दीपा पूर्ण बेहोश छलि। डॉक्टरनी निसास छोड़लक जे दीपाक जान बचि गेलैक।

बेटी भेलैक दीपा केँ। ठाकुरजी माँक पूजावला सिनूर तर्जनी मे लगाक' निकललाह आ बेटीक रूप देखि प्रसन्न भावें सिनुरक टीका क'

देलनि बेटी केँ। फेर होम पर बैसि गेलाह।

गोर-भुभुक्का चारि कीलोक बच्चाक कपार मे सिनुरक टीका झक-झक झलकैत छलैक। मुदा बच्चा ऐकबेर कानि क' चुप भ' गेलैक। डॉक्टरनी कार पर आनल ऑक्सीजनक सिलिंडर मंगौलक आ पाइप बच्चाक नाक मे देलकैक। कोनो उकस-पाकस नहि। हिलेलो-डोलेला पर नहि। बेटी तँ रूपवती छलैक दीपाक। मुदा...

बेटी मृत छलैक। डॉक्टरनी ऊठि गेलि। ठाकुरजीक करिया टाका बेटी केँ बचा नहि सकलनि। ठाकुरजीक आँखि पथड़ा गेलनि। जप करैत आंगुर एकटा रुद्राक्ष पर ठमकि गेलनि। कन्ना-रोहट उठि गेल।

ता दीपाक बड़की बहिनिक बेटी पुष्पा ओत' आबि गेलैक। ठाकुरजी ओकरा दिस ताक' लगलाह। इमानदार शिक्षकक बेटी। हुनका अपन लाखो रुपैयाक कमाइ, आइ पहिले-पहिल ब्यर्थ बुझयलनि।

ओ पुष्पा केँ अपना कोरा मे उठा क' बताह जकाँ चुम्मा-चाटी लेब' लगलाह।

मृत बच्चा केँ छिट्टा मे राखल जाय लागल।

ठाकुरजी केँ बुझयलनि, जेना छिट्टा मे हुनकर मृत बेटी नहि, लाखक-लाख रुपैयाक थाक होनि।

•

पहिल कथागोष्ठी (सगर राति दीप जरय) मुजफ्फरपुर मे पठित पहिल कथा, 21 जनवरी, 1990 ई.

खण्डित आदर्शक कथा

रामू झा! धह-धह जरैत एकटा काया।

जे कहियो कोनो तरहक समझौता नहि कयलनि। जीवनक कोनो स्तर पर नहि। जिनकर नाम सँ हुनका गाम केँ लोक जोड़ि देलक। हुनकर नाम लैते, हुनकर गाम लोक केँ मोन पड़ि जाइक। ओइ गामक नाम लैते, हुनकर नाम लोक केँ स्मरण भ' जाइक। तेहेन प्रतिष्ठाबला एकटा लोक छलाह रामू झा।

मैट्रिक पास कयनहि छलाह कि अंग्रजी-सत्ताक विरोधक प्रभाव पड़लनि। स्वतंत्रता-आन्दोलनक शंख फुकयलैक, तँ रामू झा कॉलेज मे रहि नहि सकलाह। मुँह मे नारा। हाथ मे झंडा। निकलि गेलाह घर सँ। कत', कोनो खबरि ककरो नहि।

रेलक पटरी उखाड़लनि। टेलीफोनक तार तोड़लनि। एकटा गोरा पलटन केँ ओध-बाध क' क' पिटलनि— जे एकटा मैथिलानी-बचियाक संग बलजोरी कयने रहैक। ओतहि अङरेजबाक नजरि पर चढ़ि गेलाह। क्रांतिकारी-विचार रखितहिं छलाह। सत्यवादी, गाँधीजी सँ कनिये कम। पकड़ाइत देरी नहि लगलनि।

पहिने भागलपुर जहल पठौलकनि। ओत' कैदी सभक संगठन क' क' जहल मे कयल जा रहल एकहक टा अत्याचारक विरोध केलखिन। नेता बनवाक प्रचूर संभावना छलनि। नैतिकताक घोर पक्षधर। पठा देलकनि हजारीबाग जहल।

ओत' खद्दर पहिरैत छलाह। टकुरी आ चर्खा कटैत छलाह। ओतहु जेलर आ अत्याचारी सिपहिया सभक विरुद्ध संगठन करए लगलाह। कैदी सभ केँ भरिपेट भोजन देबा लेल हल्ला करए लगलाह। पेट काटि क' भनसीया, जेलर आ सिपहिया सभके भूखल राखैत छलैक। ओ सब आरिज भ' गेल हिनका सँ हिनकर हल्ला-गुल्ला सँ। कष्ट देब' लगलनि। मुदा कैदी सब मे तहिना ई लोकप्रिय होइत गेलाह। क्यो मुँह बन्द नहि क' सकलनि।

किछु दिनक बाद सरकार अपनहिं रिहा क' देलकनि। गाम अयलाह तँ

नेताक ठप्पा लागि गेल छलनि। नामी भ' गेल छलाह। पिताजी केँ ई सब पसिन्न नहि छलनि। ओ कोनो आर सपना देखैत छलथिन। मुदा तकर आशा आ संभावना नहि बुझयलनि, तँ विवाह क' देलथिन रामू झाक। रामू झा पिताजीक विरोध कैयो क' मायक अधिकार— प्रयोग केँ रोकि नहि सकलाह। भ' गेलनि विवाह। मुदा पत्नी सोभावी भेटलथिन। सोलहमे दिन दुरागमन क' क' ल' अनलथिन, मायक सेवा मे।

अगिले साल पुत्र-रत्नक प्राप्ति भेलनि। फेर दोसरो पुत्र-रत्न अवतार लेलथिन। एकटा लक्ष्मी सेहो। बस केलनि।

ता सन् बियालिस आबि गेलैक।

काँग्रेस 'भारत-छोड़ो'क अगस्त-प्रस्ताव स्वीकार कयलक, तँ रामू झाक मोन मे हुदुक्का मारय लगलनि। पत्नीक आँचर, सन्तानक ममता, मायक नोर, पिताक अनुशासन— बाधा तँ बहुत कयलकनि, मुदा रोकि नहि सकलनि। राता-राती निकलि गेलथिन। बम्बईक हेतु।

रामू झाक बम्बई पहुँचबा सँ पूर्वहिं, सब मुख्य नेतागण गिरफ्तार क' लेल गेल छलाह। रामू झा पाँच टा क्रान्तिकारी संगीक संग बम्बइ पहुँचबा लेल फाँड़ कसने रहथि। कोनो ना।

मुदा रस्ते मे चीन्हि लेल गेलाह। भेष बदललनि। सफाइ देलथिन। किछु नहि चललनि।

अइ बेरुका जहल कने बेशी समय ल' लेलकनि। पत्नी भेंट करए जाथिन। फेर घुरि जाथिन। जहल मे महिला कैदी सब सँ भेंट-घाट होइन्हि। प्रेरणा काज कयलकैक। पत्नीयों क्रान्तिकारी विचारक भ' गेलथिन।

सोराज हेतु संघर्ष चलैत रहलैक। रामू झा सपत्नीक सक्रियता देखबैत रहलाह। दू बेर पत्नी-सहित जहल गेलाह। छोटो-छोटो अंग्रेजी-अत्याचार बर्दाश्त नहि होनि। जहलो मे पत्नी महिला-कैदी आ अपने पुरुष-कैदी सभक सङोर करिते रहथि हरदम। चुप बैसयवला नहि। गाम पर पिता चलि गेलथिन। रामू झा दुनू बेकती जहल मे। कहुना क्रिया-कर्म भेलनि।

बेटा सब केँ रामू झाक माय इसकुल धरौने रहथिन। बेटी बढ़ैत गेलनि। देस अजाद भ' गेल। सोराजक स्वाद लेल लालायित रामू झा मुक्त वातावरण मे साँस लेलनि। घर डेबब शुरू कयलनि।

ता माय चलि गेलथिन। घरक मजगूती नेने गेलथिन। रामू झा क्रमशः

काँग्रेस सँ बिदकैत गेलाह। समाजवादी विचारधाराक प्रभाव मे अबैत गेलाह।

बेटी बिआह जोग भ' गेलनि तँ चिन्ता भेलनि। अपने सन आदर्शवादी तकैत छलाह। नहि भेटलनि। मुदा कन्यादान भ' गेलनि कहुना। जमाय ठीकेदार निकललथिन। रामू झा कने असंतुष्ट भ' गेलाह। कने गुम्म सन। पारिवारिक मामला मे। जमायक विचार दू नम्मरक। काज दू नम्मरक। धन-संग्रह हेतु कोनो हदधरि जयबा लेल तैयार। हरदम। बेटीक जीवन द' सोचि क' चुप भ' गेलाह।

दुनू बेकतीक कयल-धयल केँ मोजर नहि देब'वला जमायक अलगे बथान रहनि। कोइलीबला परिवारमे पहिल कौआ आबि गेल। घोर अनैतिकतावादी। ने कोनो सिद्धान्त, ने कोनो आदर्श। रामू झा केँ डर भेलनि, घर-घर मे एहने बेटा-जमाय सभ भ' जाइक तँ की भविष्य हेतैक अइ देशक? हुनका सोराजक प्राते भेने पतित आ अनैतिक आभिजात्य-वर्गक जन्म भेला सँ दुःख भेलनि।

किछु दिनक बाद जमीन्दारीक लोप भेलैक। कने सन्तोष भेलनि रामू झा केँ। मुदा ने तँ गुलामी-मानसिकता हटल, आ ने जमीन्दारी संस्कार। हँ, इमानदारीवला मानसिकता जरूर बिला गेल। राजनीति सत्तालोलुपक हाथक कठपुतरी बनि गेल। अनैतिकता राजनीति पर हावी भ' गेल आ राजनीति जीवनक आन सभ पक्ष केँ जकड़ि लेलक। बहाना बना क' फेर व्यक्तिगत स्वतंत्रताक ठारि केँ पांगल जाय लागल।

उनैस सय सतहत्तरिक शंख बाजल, तँ रामू झा दौड़लाह पटना। हुनकर देशभक्त सिपाही फेर फाँड़ बन्हलनि। सत्ता-परिवर्त्तन भेबो कयल, मुदा घटकवादक भूत गीड़ि गेल सम्पूर्ण-क्रान्ति केँ।

प्रदूषण बढ़िते गेल। रामू झा देशक अभगदशा सँ बहुत दुःखी रह' लगलाह। कुकुरा-कटाउझि चलैत रहल। रामू झा वर्त्तमान सँ बहुत असंतुष्ट छलाह आ रामू झाक आदर्श सँ वर्त्तमान खौंझायल छलनि।

पत्नी आब पूरा-पूरी सेरा गेलि छलथिन। निराश जकाँ। मतान्तर ओहि दिन भ' गेलनि पत्नी सँ, जहिया रामू झा काँग्रेसी सरकार सँ स्वाधीनता सेनानीबला पेंशन लेबा सँ नासकार चलि गेलाह। पत्नी हवाक रुखिक मोताबिक चल'वला विचारक भ' गेलि छलथिन। रामू झाक आदर्शवादी त्यागक महत्व गाम मे क्यो नहि देलकनि। ओ समाजक नजरि मे 'आउटडेटेड' भ' गेल छलाह। हुनकर दम घौंटाय लगलनि गाम मे।

घर खस' लगलनि। कोसीक विभीषिका सँ त्रस्त गाम। दोसर भाग मे

कमला-बलानक तांडव-नृत्य। साले-साल। उपजा-बाड़ी दिनो-दिन बिलाइत गेल। खेत-पथार बाँझ होइत गेल। कहियो बाढ़ि, कहियो रौदी, लगातार जजात केँ चाटैत रहल।

मिथिला बुरैत रहल। रामू झा बुरैत गेलाह। खेतीक डाँड़ टुटैत गेलनि। जमाय केँ ठिकेदारी मे भट्ठा बैसि गेलनि। बेटी खगि गेलनि। रामू झा चिन्तित होइत गेलाह।

बड़का बेटा गन्हा क' बी.ए. केलकनि। छूराक बल पर। गाम मे प्रतिष्ठा क्षीण सँ क्षीणतर होइत गेलनि। नव-पीढ़ीक दायित्वहीनता, भ्रष्टाचार आ पथभ्रष्टता देखि रामू झा कुहरैत रहलाह। गामक नवकबेर रस्ता-पेड़ा देखि-देखि व्यंग्य करैत रहलनि। रामू झा घर सँ निकलब बन्न क' देलनि। नवकबेर सभ पर दया अबैत रहलनि। खौंझ उठैत रहलनि। दबैत रहलाह खौंझ केँ।

बेटा, पत्नी आ समस्त परिवार दिस सँ दवाब बढ़ैत गेलनि— अपना पाटीक मुख्यमंत्री छथि। कत्तहु बड़का बेटाक गोरा बैसाउ। रामू झा पेशोपेश मे पड़ि गेलाह। तत्कालीन मुख्यमंत्री उपकृत रहथिन। आपातकाल मे डेड़ साल नेपाल मे शरण दिया देने रहथिन रामू झा। से सब केँ बूझल छलैक। एहि अवसरक फायदा उठब' चाहैत छलनि बड़का बेटा। तँ की, रामू झा बेटाक नौकरीक पैरवी करए जेताह मुख्यमंत्री लग? ओ रामू झा जिनकर नाम 'पैरवी' शब्द पर घोंकचि जाइत छलनि? ओ रामू झा, जे सरकारी पेंशन केँ देशभक्तिक कीमत मानि एँड़ी मारि देलनि?

हँ, जेताह रामू झा। जाय पड़तनि, यदि परिवार केँ बूड़' सँ बचेवाक छनि। परिवारक प्रति अपन दायित्वक निर्वाह लेल अनुचितो तरीका अपनाबय पड़तनि। स्वाभिमानी रामू झा कहियो कोनो सत्तासीन राजनीतिज्ञ केँ अपना सँ बेसी भारी नहि बुझलनि। मुदा आइ जखन मुख्यमंत्रीक डेराक हेतु हुनकर डेग उठलनि, तँ हुनका अपन ओजन घटल बुझयलनि। जकरा बेर-बेर उपकृत कयलनि, तेकरा सँ एकबेर उपकृत होब' चललाह रामू झा। रामू झा एतहि टुटलाह। हुनकर टूटनक प्रक्रिया एहीठाम शुरू भ' गेलनि। रामू झाक मोन मरि गेलनि। डेग थड़थड़ाइत रहलनि, मुदा बढ़ैत गेलनि।

रामू झाक जर्जर काया जखन मुख्यमंत्रीक सोझाँ भेल, तँ चीन्ह' सँ साफ नासकार चलि गेलाह मुख्यमंत्री। रामू झाक मुँह सँ बाक नहि फुटलनि। ओ दू बेर—'नेपाल-नेपाल' बजलाह, तँ मुख्यमंत्री फटकारि देलथिन—की

नेपाल-नेपाल करै छी? कपार नहि देखै छी? जाउ, समय नहि खराब करू।

रामू झा दू सेकेन्ड टक-टक तकैत रहि गेलाह। हुनका रंग-बिरंगक आदर्श, नैतिकता, सत्य मोन पड़लनि। सम्पूर्ण-क्रान्तिक सम्पूर्ण गर्भपातक आइ आभास भेलनि। आपतकाल मे एही व्यक्ति केँ ओ नेपाल मे अइ डेरा सँ ओइ डेरा नुकौने फिरैत छलाह। देशक थाती बूझि क'। एकदिन अपमानित हेबा लेल किने? अपना हाथें खिच्चड़ि आ आलूक साना बना क' खुऔने रहथिन। नहि चिन्हबाक लेल? ओइ नेपाली महिला केँ विवाहक बहाना क' क' सब किछु लूटि लेला पर, अही व्यक्ति केँ रामू झा कोना-कोना जान बचौने रहथि? ओइ महिलाक सर-सम्बन्धी सँ, जे खुखरी ल' क' हिनका गली-गली तकने फिरैत छलनि? एही दिन लेल बचौने रहथिन? हुनकर ई थाती, कतेक फोंकिला, फूसि, भ्रष्ट आ कृतघ्न निकललनि?

रामू झा घूरि अयलाह गाम। गाम भरि मे आलोचनाक केन्द्र बिन्दु बनल रामू झा अपना एकचारी मे दिन काट' लगलाह। बड़का बेटा आवारा भ' गेलनि। भांग गाँजा-दारू सब पीब' लगलनि। तीन बेर भगलनि गाम सँ। कत्तहु नौकरी होइत तखन ने? घूरि क' आबि जाय फेर गाम।

छोटका बेटा महा-भुसकौल। बेटीक ओइठाम दिन कटैत रहनि। घिना-घिना क' पास करनि। पहुँचि गेलनि बी.ए. मे। मुदा रामू झा गलैत गेलाह। सोचैत गेलाह, आ गलैत गेलाह।

पत्नी एकदिन घुट्ठी ऐंठैत रहथिन। अपने डूबल रहथि महासोच मे। पत्नी कहलथिन—आब तँ अहाँक पैरूख घटि गेल। एकटा गप्प कहू?

—'की? —'पुछलथिन रामू झा।'

—'अहाँ केँ किछु भ' गेल, तँ हम दवाइयो कत' सँ करायब?' ककरा भरोसे हमर जीवन जायत? देश लेल बहुत कयलहुँ। मुदा हमरा लेल? अइ बुढ़ारी मे हम की-केना करब? ककर-ककर लात-बात सहि क' हम जीब? हमरा कोनो बेवस्था धरा दीय'।

रामू झाक आँखि उमड़ि अयलनि।

—'त' हमरा की कहै छी? जे कही, तैयार छी हम। —बजला रामू झा।'

—'बड़का बच्चाक बिआह करा दिऔक। आदर्श-फादर्शक बखेरा छोड़ू। सिंहेसर (जाउत) कहैत छल, पचास हजार बेवस्था दिया देब, मधेपुरवला सँ। चालिस हजार मे दू टा कोठली घर बना लेब आ दस हजार मे बड़का बच्चा

केँ कोनो बिजनिस ठाढ़ क' देबैक।'

रामू झा केँ किछु बजना नहि गेलनि।

एहि चुप्पी केँ 'एवमस्तु' मानि पत्नी बेटाक बिआह ले 'हँ' कहि देलथिन। मधेपुरवला आयल। सिंहेसर घमा-घमा क' पचपन हजार चुऔलक। पाँच हजार अपने कमीशन राखि क', पचास हजार काकी केँ द' देलक। काकी पचास हजार सँ भरल चङेरा गोसाउनक पीड़ी पर रखलनि। सिंहेसर, काकी, बड़का बच्चा, टोलक लोक आ गोसाउन, सभ गद्-गद्!

गद्-गद् के नहि? जे गद्गद् नहि भेलाह, अर्थात् रामू झा, तिनकर क्यौ पुछारि नहि कयलकनि। ओ पाइक गनती बेरमे दलानो पर नहि बैसलाह आ ने हुनकर होब' वला समधि केँ, समधि सँ भेंट करबाक स्पृहा रहनि। ओ भारतक स्वतंत्रता-संग्रामक इतिहास पढ़ैत रहथि, जाहि मे हुनका एहेन सैकड़ो आदर्शवादी योद्धाक कत्तहु चर्च नहि रहैक।

बिआह भ' गेलनि बेटाक। बरियाती नहि जाइत रामू झा केँ सगर टोल बलजोरी बरियाती ल' गेल। रामू झा पुतोहु केँ अशर्फी नहि चढ़ा सकलाह। तेँ आलोचनाक पात्र भेलाह। भातिज सिंहेसर काकीक देल किछु गहना अपना भाबहु केँ चढ़ौलनि। वैह घोघट देलनि। रामू झा मुँह देखि घूरि अयलाह।

बेटा पैंतालीस हजार मे दू टा कोठली पिटा लेलथिन। पाँच हजार मे दवाइक दोकान ठाढ़ क' लेलथिन, गुजर चलए लगलनि। घर टुकटुका गेलनि। मुदा अन्तस्मे संघर्ष चलैत रहलनि। तनाव शिथिल नहि भेलनि।

बड़का बेटा केँ थोड़ेक व्यवस्थित भेला सँ, थोड़ेक संतोष भेलनि।

मुदा संतोष क्षणिक साबित भेल। बड़का बेटा भिन्न भ' गेलनि। पुतोहु सज्जन नहि भेलथिन। खानदान केँ गारि सँ ओगारए लगलथिन। तेँ बेटा केँ भिन्न भ' जाय पड़लनि। बेटाक दोकानक कमाइ पुतोहु मुठियाब' लगलथिन।

रामू झा सपत्नीक फेर बेलल्ला भ' गेलाह। काया जर्जर होइत गेलनि। उत्साह टूटैत गेलनि। बेटाक सासुरक सौजन्य सँ बनाओल कोठा काज नहि अयलनि। पुरने एकचारी मे टुटलाही चौकी पर दुनू बेकती राति-दिन कटैत रहलाह। धोती फेरि-फेरि क' नहाइत रहलाह। गमछा पहिरि-पहिरि क' धोती सुखबैत रहलाह। एक पल्ला धोती। एक पल्ला साड़ी। दूनू बेकती। एकटा एकचारी। एकटा चौकी। एकटा टिनही थाड़ी। एकटा टिनही लोटा। समाजवादी रामू झा केँ, आर की चाहियनि? सर्वहारा भोजन—कदीमा, सजमनि, कुम्हड़,

पोरो-घौका-करमीक सागः मडुआ-खेसारीक रोटी, अल्हुआ, कहियो-काल भातो-भेटिये जाइत छलनि। पुतोहुक तड़ल तिलकोरक सुगंध आ बेटाक तिलकोरक तरुआ कुड़कुड़यबाक आवाज, स्वाद आ संतोष भेटिये जाइत छलनि।

छोटका बेटा बहिन-बहिनोइ लग पेट पोसैत रहलनि। कुशलो-क्षेम पूछ' नहि आबनि। पत्नी खुद्दी बरकबैत रहलथिन। खिच्चड़ि खदकबैत रहलथिन। रामू झाक जिनगीक चुल्हा मे आँच पड़ैत रहलनि। ...आर रामू झा खदकैत रहलाह।

एकदिन भिनसरे लोक देखलक—रामू झा दुनू बेकती कत्तहु चलि गेलथि।

कत'? कत'? काशी-वृन्दावन? नहि! पूर्ण नास्तिक छलाह। धर्म-परंपरा एक-एकसँ विरोध। शब्द-शब्द समाजवादी। लोक कहनि—नास्तिक छथि तेँ कष्ट होइत छनि आ मरबो करताह घिना-घिना क'।

तखन? तखन फेर गेलाह कत' दुनू बेकती?

गेलथि दिल्ली। पटना होइत। फेर काँग्रेसक राज भ' गेल छलैक। पटनासँ दिल्ली धरि।

दुनू बेकती दू टा दरखास ल' क' गेल छलथि। काँग्रेसी मुख्यमंत्री, काँग्रेसी-प्रधानमंत्री सँ, स्वतंत्रता-सेनानीवला पेंशनक हेतु गोहारि करब'।

दुनू दरखास अग्रसारित भ' गेलनि, पटना सचिवालय सँ। पत्नीक सूति-पाति जे रहनि, पटना मे बेचि लेलनि, तँ दुनू पीठक भाड़ा भेलनि। दिल्ली केन्द्रीय सचिवालय मे काज भ' गेलनि। दुनू बेकतीक पेंशन मंजूर भ' गेलनि। घूरि अयलाह गाम।

एक मासक बाद पेंशनक राशि आब' लगलनि।

सैह रामू झा, फेर पटना गेल छलाह। छोटका बेटा बी.ए. मैथिली ऑनर्सक परीक्षा देने छलनि। तकरे काँपीक पैरवी मे। गोटी बैसि गेलनि। तीन टा परीक्षक चिर-परिचित निकललथिन। दू टा स्वतंत्रता-सेनानी, एक टा स्वतंत्रता-सेनानीक पुत्र। एक टा जमायक बड़का भाय। चारि पेपर मे पैरवी लहलनि। बेटा केँ फस्ट-क्लासक अंक दिया क' आपस आबि गेलाह रामू झा। आशा छनि, आब बेटाक नामांकन बी.ए. मे भ' जेतनि।

समाज मे रामू झाक बिगड़ल प्रतिष्ठा फेर सुधरए लगलनि।

आइ रामू झा दुनू बेकती अहलभोरे दरिभंगा गेल छलाह। पेंशन उठाब'। सँझुका बस सँ आपस अयलाह, त' थाकि गेलाह। खाम्ही लागि क' ओठङि गेलाह।

पत्नी पुछलथिन—की भेल?

—'की हैत हमरा आब? जखन पेंशनभोगी भैए गेलहुँ। पैरबी कैए अयलहुँ अछि। पेंशन-मंजूरी मे सचिवालय केँ घूस दैए अयलिऐ आ बेटाक विवाह मे बेवस्था लैए लेल, तँ हम कत' रहलहुँ? हम तँ कहिया-कत' नहि मरि गेलहुँ? हम की जिबैत छी आब?'

कहैत रामू झा पेंशनवला टाकाक गेंठ पत्नी दिस बढ़ौलनि।

—'एहेन बात नहि बाजू। मरत अहाँक दुश्मन! —कहैत पत्नी टाका ल' लेलथिन।'

—'हमरा सन केँ स्वामी भगवान सब केँ दिह'थिन। हमरा गौरव अछि एहेन स्वामी पर! —बजलथिन पत्नी।'

रामू झा हँस' लगलाह। हँसी, गौरव करएवला पहिलुका रामू झाक टुटनाइ पर लागल छलनि।

साँझ झलफला गेल रहैक। पत्नी पेटी खोलि टाका रखिते रहथिन कि पुतोहु रामू झा लग आबि क' ठाढ़ि भ' गेलथिन। आँखि नोरायल छलनि। बेटाक आङुर पकड़ने रहथि, ठाढ़।

—'की बात छनि? —रामू झा पुछलथिन।'

—'आइ दवाइ-दोकान मे डी.एस.पी. आ दरोगा छापा मारने छलैक। सील क' देलकै दोकान केँ। नकली दवाइ सब बेचैत छलथिन, तेँ! हुनका पकड़ि क' दस बजे दिन मे ल' गेलै, से एखनधरि नहि अयलथिन अछि।'

कहि क' पुतोहु हिचुक' लगलथिन।

रामू झा दुनू बेकती एक-दोसरा दिस तकैत रहि गेलथि। पौत्र रामू झाक कनहा पकड़ि क' झूल' लगलनि।

पत्नी पेटी खुजले छोड़ि रामू झा लग अयलथिन आ टाका हुनका हाथ मे फेर द' क' हुनका दिस ताक' लगलथिन।

रामू झा दू रंगक फित्तावला हवाइ-चप्पल पहिरलनि आ थाना दिस विदा भ' गेलाह। अथ-उथ करैत, मुदा मंत्र-चालित सन।

•

मैथिली अकादमी पत्रिका, जनवरी-मार्च, 1990 ई.

चित्रहार

एहि बात पर प्रायः बेशीकाल हमरा दुनूक बीचमे बज्जा-भुक्की बन्न भ' जाइत अछि। हम रमाक सस्ता रुचि, मनोवृति आ आदति पर मोने-मोन खौंझा जाइत छी। हुनकर मानसिक स्तर केँ थोड़ेक हम ऊपर उठब' चाहैत छी। मुदा हुनकर दोसरे तर्क छनि। हुनकर तर्क छनि जे प्रत्येक आदमी केँ अपना रुचिक मोताबिक मनोरंजन करबाक छूट रहबाक चाही आ स्त्रीगणक एहि स्वाधीनता पर पुरुष-प्रधान समाजिक व्यवस्थाक चलते, पुरुष प्रायः कुठाराघात करैत अछि। से हुनका बर्दाश्त नहि छनि।

हम पत्नी आ अपना बीचक शिक्षा, ज्ञान आदिक खाधि केँ भरबाक हेतु हुनकर रुचि केँ साहित्य दिस मोड़बाक प्रयास सदतिकाल करिते रहैत छी। मुदा हुनका प्रायः कथा-कविता आदि सँ चिढ़ छनि। ओ एकरा सब केँ अनावश्यक आ व्यर्थ मानैत छथि। आ हम टी.वी., चित्रहार, आदि केँ।

होइत छै एना, जे हम साँझ क' कथा लीख' बैसैत छी। कहियो हुनका कोनो कथा दोसर कागत पर फेयर करए कहैत छियनि। ओ ततेक रुचि नहि रहलाक बावजूदो, से क' दैत छथि। कहियो हम हुनका लीखल गेल नव कथा सुनबा लेल बहुत आह्लादपूर्वक बैसाबैत छियनि। ओ बस बैसि जाइत छथि। हमर मोन रखबा लेल। कथा सुनबाकाल हुनका प्रायः हाफी होइत रहैत छनि, से हम लक्ष्य करैत छी। मुदा हम सुनबैत जाइत छी आ ओ चुपचाप सुनैत जाइत छथि। एकदम अन्यमनस्क भावें। पुछला पर 'हँ-हूँ' मात्र करतीह। हम ई बुझैत रहैत छी जे, ओ कथाक अर्थ प्रायः नहिये जकाँ बूझि रहल छथि। तैयो, हम हुनका सुनबैत छियनि।

हम ईहो लक्ष्य करैत छी जे, ओ कथा तँ सुनैत छथि, मुदा हुनकर ध्यान बैंकवला पड़ोसीक टी.वी.क विज्ञापन पर रहैत छनि। मोन उड़ल सनक। ओ कए दिन कहनहु छथि, जे अहाँक कथा एतेक पैघ किऐक होइत अछि? ओना ई तथ्य नहि छैक। हमर कथा एखन प्रायः ओतेक पैघ नहि होइत अछि। हुनकर मोन ऊबि जाइत छनि, कारण चित्रहारक आकर्षण हुनका लेल बहुत अर्थ रखैत छनि। तथ्य सैह छैक।

रमाक आरोप ईहो छनि जे, हम अरबद्धि क' बुध आ शुक्रदिन क' कथाक रमझौआ ल' क' बैसि जाइत छी, जहिया चित्रहार रहैत छै। हम सामान्य रुपें एहि आरोपक खण्डनक कोशिश करैत छी, मुदा हमर अन्तस्तलक स्वर एहि आरोपक सत्यता केँ नकारि नहि पबैत अछि। रमा समझौता कर' चाहैत छथि एहि बिन्दु पर, जे हम कथा लीखी आ रमा चित्रहार देखथि। आधुनिक विचारधाराक मोताबिक, हमरा ई मानि लेबाक चाही, से कौखनक' हमरा मोन मे होइतहुँ अछि। मुदा... फेर...

तखन हमरा ई अधलाह लगैए, जे बैंकवला पड़ोसीक घर जाक' चित्रहार आवश्यक रुपें देखले जाय। सबहक निजी जीवन होइत छै। हमरो अछि। हम ककरो निजी जीवन मे दखल देब उचित नहि बुझैत छी, से तर्क हुनका लग रखैत छियनि। हुनका विचार मे ई कोनो तेहेन दमगर तर्क नहि। आ ने ई ककरो निजी जीवन मे दखल देब भेलैक, कारण रमा केँ बेशीकाल बैंकवला पड़ोसीक कनियाँ चित्रहार देखबाक हेतु अपने चिकरैत रहैत छथिन। हुनकर ई चिकरनाइ हमरा मोने-मोन माहुर क' दैत अछि, कारण हमरा विचार मे ई एकटा आदर्श पड़ोसिन केँ बहलेनाइ, रुचि बिगाड़नाइ आ हमरा खौंझेनाइ भेलैक। तेँ हम हुनका कनियाँ केँ एकटा आदर्श पड़ोसिन नहि मानैत छी आ हुनकर चित्रहार-प्रेम केँ गुरीचक घोंट जकाँ घोंटैत रहैत छी।

एहि सभ बात केँ ल' क' कहियो-काल बतंगड़ बनि जाइत अछि। अन्ततः हम अपना ससुर पर तमसा क' अन्ट-सन्ट बाज' लगैत छियनि जे रमा केँ स्वाभाविक आ आवश्यक रुपें खराब लगैत छनि। हम कहि दैत छियनि जे एहेन छलहुँ तँ दुरागमन मे नैहर सँ टी.वी. ल' क' अबितहुँ।

आ बात जखन लेन-देन पर आबि जाइत अछि, तँ ओ पुरुष-स्त्रीगणक असमानता, नारी-शोषण, तिलक-दहेजक पुरुष-वर्ग द्वारा कयल जायवाला अनुचित आशा आदि पर लेक्चर झाड़ए लगैत छथि। हम हुनका 'इन्दिरा गाँधीक शिष्या' 'महिला यूनियन सेक्रेटरी' आ 'बेलना-आन्दोलनक नेत्री' कहि क' खिसियबैत छियनि। ओ हमरा 'सुखायल' 'रसहीन' 'जंगलमे रहए लायक संन्यासी' कहि क' जवाब दैत छथि। अन्ततः हमर साहित्य-लेखन केँ ओ 'ढोंग आ ढकोसला' साबित करबा मे जमीन-आसमान एक क' दैत छथि। तखन हम हुनका आवश्यक रुपें डपटि क' मुँह चुप क' दैत छियनि आ ओ अन्ततः बिछाओन ध' लैत छथि। गेरुआ मे मुँह नुका क' कानए लगैत छथि।

हम एक-आध बेर पछताइतो छी जे किएक देबारि देलियनि। मुदा फेर, हम अपन कथामे रमि जाइत छी, आ ओ निन्न पड़ि जाइत छथि। फेरो अपने-आप उठिकए भोजन बनब' ओ भनसाघर चलि जाइत छथि।

हमरा प्रायः वातावरण केँ स्वाभाविक बनयबाक बेगरता बुझाइत रहैए, एहना समय मे। तेँ हम भनसेघर चलि जाइत छी हुनका मनाब'। हुनका अन्ततः मानबैक छनि, तेँ मानि जाइत छथि। मुदा ओ चुप रहैत छथि। नारी हेवाक चलतें कयल जायवला विभेद हुनका मान्य नहि छनि। मुदा हम एकरा स्वाभाविक आ अवश्यंभावी मानैत छी। फैशन करब, नौकरी करब, आधुनिकतावादी विचाधारा आ नारी-मुक्ति आन्दोलन—ई सब नारा आ भाषण हमरा बेसी आकर्षित नहि करैछ। यैह कारण छैक जे ओ कोनो महिलावाला पत्रिका घर मे आनक प्रस्ताव सभ मास रखैत छथि आ हम 'स्तरहीन' कहि एहेन कोनो पत्रिका कीनब मटिया दैत छी। ई टी. वी. आ पत्रिका सभ तँ घर-घर मे विद्रोहक आगि लगा रहल अछि, हम मानैत छी। फेर हम एहि बात केँ टारबाक कोशिश करैत छी, कारण, एक घंटाक बाद बिछाओन धयला पर, अपना-आप केँ हम चुप आ अलग नहि राखि सकैत छी।

एक दिन तँ एहेन भेलैक जे हम हुनका कथा सुनबैत रहियनि। निचेन सँ। ओ बेर-बेर घड़ी देखथि। आठ बाजि गेल रहैक। किछु विज्ञापनक बाद चित्रहार होइतैक। रमा फिरीशान रहथि जे कखन हमर कथा समाप्त होयत आ ओ...

हमरा एहि बातक अन्दाज छल। तेँ हम आरो निचेन रही। रमा केँ खौंझयवा मे मोनो लगैत छल। आ ओ चित्रहार नहि देखथि, से अभिष्टो सिद्ध होइत छल। हुनका बैंकवला पड़ोसीक कनियाँ आ बेटी दू-दू बेर बजब' आबि चुकल छलनि आ हम पड़ोसीक बेटी केँ झझकारि लेने रहिऐक। अन्ततः हमर कथा समाप्त नहि भेल। चित्रहार शुरू भ' गेलैक आ ओ बैसल रहि गेलीह। आँखि सँ भट्-भट् नोर खसैत रहि गेलनि। हमरा हँसी लागल आ तामस उठल। हम हुनकर कानब केँ बचकानी मानलहुँ। हुनका परिपक्व हेबाक आवश्यकताक बात हम दोहरौलहुँ। ओ चुपचाप उठि गेलीह। चलि गेलीह बर्त्तन माँजक हेतु। हमरा तैओ एहि बातक खुशी भेल जे ओ अनुशासनहीनता नहि देखौलनि आ चित्रहार शुरू भेलो पर कथाक बिच्चहि मे उठि क' पड़ोसीक घर नहि गेलीह। हमरा रमाक प्रति कने दया आ सहानुभूति देखायब जरूरी लागल, कारण, भोजन

आ आरामक बेर लगिचायल छलैक। हम हुनका सामान्य बनाब' लागल रही।

रमा हमरा कए बेर कहि चुकल छथि, एकटा छोटकियो टी.वी. किनबाक मादे। मुदा हमरा संग नाना तरहक समस्या अछि। सब सँ पैघ समस्या पाइक अछि। बिना पाइ गनौने आदर्श-विवाह कयलहुँ। समाज मे बुड़िबक मानल गेलहुँ। साधारण नौकरी अछि, ताहि पर उत्तरदायित्वक पारावार नहि। महगीक एहि जबाना मे कहुना क' इज्जति बचाक' निमहैत चलैत छी। दू मासक दरमाहा लगौला पर टी.वी. होयत। तखन तीन मासक खोराकी डेरा-भाड़ा, दूध आ तरकारी, जेबी-खर्चा कोना होयतैक? कत्त' सँ चलतैक? पाइ बँचायब तँ जेना सपनाक गप्प जकाँ असम्भव छैक। तेँ हम एकरा टारैत रहल छी। दोसर, हमरा खौंझ अछि सासुर सँ। जखन हम पाइ नहि गनौलहुँ त' एकटा टी.वी.यो किऐक नहि भेटल? आखिर हम वर छी, कनियाँ तँ नहि? तेसर ईहो, जे टी.वी. अयने लेखन प्रभावित होयत, तेँ।

एहि सभ कारणक, जकरा हम तथ्यक रूपमे रमा लग उपस्थापित करबाक प्रयास मे लागले रहैत छी, कोनो जबाव हुनका लग नहि रहैत छनि। आ एकटा संवादहीनता परिणाम होइछ, एहि पति-पत्नीक-संवादक।

संवादहीनता हमरा जबदाह लगैत रहैत अछि। मुदा तकरा भंग करब ओतेक आसान नहि लगैत अछि हमरा। अन्ततः ओ कोनो काजक बहाना लगाक' उठि जयतीह आ हम अपन मूड सामान्य करबाक हेतु साहित्यक सहारा लेब' लगैत छी।

एहिना हालहिं घड़ी—पावनि मे सासुर गेल रही हम। रमाक संग। ओत्तहु पितिया ससुरक घर मे टी.वी. छनि। शुक्रदिन चित्रहार रहैक। हमरा आदतिक अनुरूपहिं, कथा लिखबाक मूड छल। तल्लीन भ' क' प्लौट केँ मथैत रही। चित्रहारक जखन समय भेलैक, हमर सासु रमा केँ तकने घुरथिन। ओ कतहु भेटि नहि रहल छलथिन। सासु व्यस्त रहथि। 'ओझाजी, रमा छनि एत'? —पुछलथि हमरहु सँ। हमर 'नहि' कहला पर ओ हमर बगल मे सरहोजिबला कोठली भीतरे सँ बन्न देखलथिन। केबाड़ी ढकढकौला पर आ चिकरला पर रमा केबाड़ी खोललथिन। चेहरा नोरे-झोरे एकार्णावा भेल रहनि। माय द्वारा—'की भेलौ गे,' पुछला पर आँखि पोछि क' फेर कोठली, चलि गेलथिन। जखन चित्रहार देखबा लेल बहुत जिद्द कयलनि माय, तँ बजली—सबहक जिनगी मे सब सुख नहि ने रहैत छै,' आ बच्चा जकाँ हिचुक' लगलथिन्ह।

हमरा बहुत तामस उठल, मुदा...। ओ ककरो बात नहि मानलथिन आ चित्रहार नहिये टा देखलनि। हमरा ई बात नीको लागल आ क्रोधो उठल, जे एखन हमरा देखार करबाक हेतु ई जिद्द ध' लेलनि। एक-दू दिनक पश्चात्, हम रमाक संग डेरा पर आपस चलि अयलहुँ।

तकर बाद सँ ओ चित्रहारक समय मे प्रायः भावहीन चेहरा बनौने रहैत छथि। हम जखन हुनका सामान्य बनयबाक कोशिश करैत छी, ओ उठि जाइत छथि। हम बेशी छेड़छाड़ करब उचित नहि बुझैत छी आ दूरदर्शनवला सभ केँ चित्रहार देखयबाक हेतु गाड़ि पढ़ैत छी। ओकरा बच्चा आ स्त्रीगण सभ केँ बहसेवाक, संस्कार बिगाड़वाक, दिल्ली-बम्बइक संस्कृति गाम-कस्बा पर थोपबाक, विद्यार्थीक पढ़ाइ-लिखाइ चौपट करबाक, लोकक रुचि बिगाड़वाक आ एहने सन नाना प्रकारक आरोप लगा अपन खौंझ उतारबाक प्रयास करैत छी आ बड़ा मोस्किलसँ कलह रोकि पबैत छी।

एहने सन एकटा कलह क' क' कार्यालय आयल रही आइ, जे कनिये बिसाइये गेल। हाजिरी कटि गेल आजुक। हमरा कने लेट भ' गेल छल। ता पदाधिकारी रजिस्टर मंगा क' हाजिरी काटि देने छलाह। कोनो उपाय नहि छलैक। एक दिनुका वेतन कटनाइ अवश्यंभावी। खराब लागल। रमा पर तामसो उठल। तेहन ने घुघना लटका क' बिदा करतीह जे बिसाइये जायत, किछु-ने-किछु। आठ बजे बिछाओन छोड़ि दैत छी, तैयो हाजिरी कटि जाइए। मोन तँ टी.वी. पर उड़ल रहैत छनि। जुत्ता देतीह, तँ मौजा नहि, कमीज देतीह तँ बटन टूटल, आइना देतीह तँ कंघी हेरायल। लेट नहि हेतैक तँ की हेतैक? डेरा घुरैत काल बड्ड तमसायल रहैत छी हुनका पर। आइ हुनकर कल्याण नहि छनि। आइ फेर हँट-देबाड़ हेबे करतनि। अपन नेप चुआबैत रहिहथि। एना कतहु घर-परिवार चललैक अछि?

घड़ी आठ बजा रहल अछि। हमरा हाथ मे रुमाल मे तरकारी बान्हल अछि। हमरा चित्रहार मोन पड़ि जाइत अछि। फेर एकटा खौंझक भाव अबैत अछि। आ हमर डेग आर लोथ होब' लगैत अछि। डेग पर
आलस जम' लगैत अछि, बर्फ जकाँ।

मुदा डेरा कार्यालयसँ बेशी दूर नहि अछि। तेँ पहुँचैत छी डेरा आ अवाक् रहि जाइत छी। डेरा मे टी.वी. चलि रहल अछि आ रमा उल्लासपूर्वक चित्रहार देखि रहलि छथि। हमरा देखिते मुस्की छौड़ैत, हुलसैत घर सँ निकलैत छथि आ स्वागत करैत तरकारीवला पोटरी हाथ सँ ल' लैत छथि। हमर

आश्चर्य भंग करैत कहैत छथि—बाबूजी केँ बोनस भेटलनि अछि। तेँ आइ टी.वी. ल' क' भैया लगा गेलथिन। रमा एतबा कहि क' टी.वी. बन्न कर' लगैत छथि—ई सोचि क' जे चित्रहार सँ हमरा 'एलर्जी' अछि।

हम मना करैत छियनि आ रमा केँ हाथ पकड़ि क' बैसा लैत छियनि। हमरा हुनकर खुशी मे थोड़ेक सहभागिता आवश्यक बुझाइत अछि आब। दुनू गोटे प्रेम सँ चित्रहार देख' लगैत छी।

हम गंभीरतापूर्वक सोचैत छी —आब कथा-कविताक समय हमरा बदलि देबाक चाही। दाम्पत्य-जीवनक सुख लेल एतबा प्रयास कोनो अनुचित नहि। चित्रहार अन्ततः ओतेक खराब मनोरंजन नहि। हम ससुर केँ मोने-मोने धन्यवाद दैत छियनि आ सोचैत छी जे साहित्य लेल भोरहरिये ठीक रहतैक। वस्तुतः कथा लीखक हेतु निश्चिन्तता आवश्यक, जे भोरहरिये मे संभव। एहि तर्क सँ सहमत होइत, हमरा बुझाइत अछि, जेना नीक लागि रहल अछि। आ चित्रहार सेहो।

•

कथा-रैली (ड्यौढ़), 29 अप्रील, 1990 ई.
मे पठित आ विवेचित

कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो

यैह दू साल भेल हेतैक।

कथा एकटा कोनो कैलास मंडलक थिक, जे कोनो गामक वासी हो, एक्के बात भेल। ओना कथा कहबा मे हमरा सुविधा हो, ताहि वास्ते कैलास मंडल केँ हम अपने गामक एकटा जवान मानि लैत छी। हमरा बुझने एहू मे कोनो तेहन हर्ज नहि जे, कैलास मंडलक स्वभावक सम्बन्ध मे हम ई मानि ली, जे ओ सोझ आ नीक लोकक लेल जतबे मीठ छल, अपना भूतपूर्व हबेली आ ओकरा शूद्र बूझ'बला बभनटोलीक लोकक लेल ओ ततबे तथाकथित 'ऐंठल राड़' छल।

कथा, जे—दू साल पूर्वक थिक, तकर एक साल पूर्व, कैलास मंडलक बाबू, रौदी मरड़, कमलाक बाढ़ि मे, अल्हुआ चालि क' बाध सँ घुरैत काल, धार मे भसिया गेल, से एक्के बेर पिपड़ा घाटक पुलक खाम्ही मे अरड़ा लागल आ एहि तरहेँ कैलास मंडल पितृहीन भ' गेल। कैलास मंडलक सम्बन्ध मे ईहो मानबा मे कोनो तारतम्य नहि हेबाक चाही जे ओकरा लोक 'कैला-कैला' कहैत होइ। अपना ओइ ठाम एहन होइ छै प्रायः। तेँ अपनो सभ सुविधाक लेल, ओकर छोटके नाम 'कैला'केँ ल' क' चली, तँ कोनो तेहेन हर्ज तँ नहि। आब एत्तेक राग-भास लगा क' ककरो नाम कियो लिअय—कै ला स मं...ड ल त' सेहो कोनो तेहन व्यावहारिक नहि।

हँ, तँ पहिनहिं कहल, जे कथाक जन्म भेना बेसी-सँ-बेसी यैह दू साल भेल हेतैक।

पितृहीन भेलाक बाद कैला पंजाब भगबाक हूलि-मालि मे मिझरा क' पंजाब चलि गेल रहय। ई बात हवेली आ हवेलीक बहसल उत्तराधिकारी बौआ झाकेँ पारंपरिक रूपेँ अप्रिय लागल रहनि आ ओ काइनि असुलबाक सप्पत, 'डिप्लोमैटक प्वाइन्ट'क संग खेने रहथि। ओ सप्पत हुनका 'चखना' सनक स्वादिष्ट लागल हेतनि, सहजहिं मानल जा सकैत अछि।

मानल ईहो जा सकैछ, जे कैलाक माय हवेलीक मांड़-झोड़ पर गुजर करैत छलि हो। संभव इहो थिक जे कैलाक पंजाब गेलाक बाद कैलाक मायक

प्रति बौआ झाक व्यवहार आर थोड़ेक बेसीये रुक्ख भ' गेल हो। बौआ झा ई बुझैत छल होथि, जे कैलाक माइये कैला केँ पंजाब पठौलक अछि, तोड़ा अनबाक लेल।

मुदा, बात से हेतैक नहि। कैलाक माय तँ मने कयने हेतैक। के माय चाहैए जे ओकर सन्तान ओकर आँखिक सोझाँ मे नहि रहैक?

कैला जिद्द क' क' गेल छल। हवेली मे ओकर मोन नहि लागब आजुक समयक विशेषता भ' सकैत अछि। नव विचारक प्रभाव मे कैलाक आयब, कोनो अजगुत बात नहि। एहन रहरहाँ भ' रहल छैक।

कैला एक सालक बाद पंजाब सँ घूरल दुर्गापूजा मे, तँ मायक इच्छाक अनुरूपहिं, एकटा दू बैन्डक फिलिप्स रेडियो 'सरदार रेडियो हाउस' सँ किनने आयल।

विचार छलैक, एक मास रहि घरक कोरो-पाढ़ि ठीक-ठाक क' क' आ माय केँ किछु अन्न कीनि क' द' देलाक बाद, फेर पंजाब चलि जयबाक।

ई ओकर व्यक्तिगत विचार छलैक, जे पंजाब मे ओ पाइक तबेदारी बजबैत अछि आ गाम मे बौआ झाक। तेँ काज खतम भेलाक बाद ओ पंजाब मे आजाद रहैए। मुदा गाम मे बौआ झाक नाक आजादीवला धारणा पर प्रायः सभ दिन घोंकचि जाइत छनि। तेँ, ओकरा पंजाब मे रहब बेसी पसिन्न छलैक। मुदा साँझक प्राते ओकर बाझि गेलैक बौआ झा सँ। कैला भोरे चाह बनब' कहलकै मायकें। माय, शहरक आदति बूझि चाह बनब' लगलैक। ऐंठ-कूठ करए आ गोबर-करसी उठब' नहि जा सकलैक हवेली। हवेलीक बोलाहटि अयलैक तँ कैला कहि देलकै— आइ नहि जायत। बस, सिरींग चढि गेलनि बौआ झा केँ। दू टा कौड़ी कमा क' आयल, तँ पंजाबक रंग चढ़ि गेलै? गंड़िमोटी ध' लेलकै बुढ़िया केँ? काल्हि धरि माँड़-नून लेल बड़का बट्टा ल' क' बरदक थड़ि मे बैसल रहैत छलि, जे माँड़ बरद केँ नहि दियौ मालिक, हमरे द' दिय' आ आइ बेटा अयलै तँ...

पता चललनि बेटाक जलखै ले' डालडावला परौठा बनबैए, तँ देह मे जेना मरुऐन लागि गेलनि। मुदा मोन पड़लनि, पिछड़ा वर्ग लेल विशेष, न्यायालय आ हरिजन-थाना। मोन पड़लनि, कए दिनक समाचार 'हरिजन' ले' एना! हरिजन ले' ओना। फेर भेलनि, हाथी जकाँ सरकारोक दाँत दू तरहक होइ छै— खेबाक और, देखेबाक और। कनी हँसी लगलनि। कनी आक्रोश भेलनि—

तैओ सरकार हल्लो क' क' एकरा सभ केँ बहसौलकैए जरूर। ताहि मे कोनो सन्देह नहि। नहि तँ एखन कैला परौठा खा रहल अछि, आ हमर रतुका थाड़ी-बासन ओहिना पड़ल अछि।

—सुरीन्दर-गजीन्दर!! कैला केँ ठीक कर। रहलौ आलीशान पार्टी हमरा दिस सँ। छेँ मर्द, तँ देखा मर्दानगी।

सुरीन्दर तैयार! गजीन्दर तैयार! मुदा, अस्त्र कोन गजीन्दर? औजार कोन सुरीन्दर?

—'मुस्की ल' क' जेबै बौआ भाइ। कैलाक अंगना जा क' फिलिप्स रेडियो सुनबै आ छाल्ही लेपटायल भाषण झाड़बै। एक मास मे खखोड़ि लेबै बौआ भाइ! तखन अहाँक मर्यादाक बन्धन ढील क' देब। एखन, मुदा अहाँ...

—'जा गजीन्दर, देखाब' अपन जाहुरी। कैला केँ हर पकड़बा दैह। अखाढ़ माथ पर अछि। सालो भरिक 'स्काई वाटर' गछैत छिय'!'

—'थैंक यू बॉस! स्योर मानू, स्योर!'

—'हमर सपना बूझल छ' सुरीन्दर? काल्हिए देखलहुँ। कान लाब' एम्हर।

सुरीन्दर कान सटा देलक, बौआ भाइक ठोर मे। मुँहेठ चमकि उठलैक सुरीन्दरक— जरूर बौआ भाइ, जरूर!

प्रात भेने कैलाक आंगन ठहाका सँ आसमर्द क' उठल। कैलाक माय उठि बैसल। हीया जुड़ा गेलैक। जे कहियो नै भेलैक, से आइ भेलैक। कैलाक नहि, कैलासक नङोटिया दोस अर्थात् सुरीन्दर आ गजीन्दर।

गूड़बला नहि, चीनीवला चाह बनब' लागलि कैलासक माय।

कैलाकमाय सँ कैलासक माय। भगवान जे ने करथिन। जीबू सुरीन्दर बौआ। जीबू गजीन्दर बौआ। अंगना पवित्र भ' गेल। जुड़ा गेल मोन।

खिस्सा-पिहानी। परोठा-हलुआ। कैलासक मायक हाथक। जाति-पाति आब की? भेल-बीतल बात। नवकी दुनियाँ, नवका लोक। कैलासक माय! अपना हाथें मुरगी बनाउ। कैलास भाइ पोलाव बनाओत। की दोस?

—हँ दोस! पंजाब मे त' हम बेसी काल सरदारजीक होटल मे तन्दूरी-तड़का-मुर्गा...

—वाह! वाह! जीवन अहींक नीक दोस। हम सब तँ गाम मे...

कैलाक माय गद्-गद्। दरभंगा टीशन धरब' आबि गेल छलैक।

हरदम गनगनबैत रहैत छलि रेडियो। लोकगीत। समाचार। गोड़ लगै छी मुखिया जी। मस्त रहो बटुक भाइ! एह! चानो बहिन जे टोन मारै छथिन। बौआ रे कैलास! अहिना सबहक रेडियो मे एक्के रंग कहैत हेतै? एखने कतौ बाजैत हेतै आ एखने अइ ठाम पहुँचि जाइ छै?

—हँ गे माय! तोँ सब की बुझबिही? सब 'सेन्स' के चमत्कार छिऐ। नै यौ गजीन्दर भाइ?

—हँ यौ आब लोक जीयत तँ की-की ने देखत? दोस, एकटा विल्स फिल्टर मँगाउ ने

—हँ दोस, बीड़ी हमरो पसिन्न नै पड़ैए। पंजाब सँ अबैत रही तँ टेन मे झगड़े भ' गेल एक गोटे सँ। से बुझू जे सब मोसाफिर इयार के थौआ-थौआ क' देलक, गंजन क' क'।

—हँ, पनामो नै तेहेन होइ छै। ओना तँ चान्सलर नीक होइ छै। की सुरीन्दर भाइ!

—आह गजीन्दर भाइ! एहू मे देबिन्द्रक दोकान पर चलि क' स्पेशल चाहक संग चुस्कीक संग होइतै, तँ मजा आबि जइतै। की कैलास भाइ? चलू ओम्हरे!

कैलास भाइक जेबीक हैसियते की? हलुकाय लागल जल्दीए।

कैलास भाइ अन्न-पानि नहि कीनि सकलाह। घर सोङरे पर ठाढ़ रहलनि। दस टा बाँसक दाम तीन सय टाका। आब तँ अगिले बेर पंजाब सँ अयला पर संभव!

बौआ झा बीच मे 'कैलास' सँ आ कैलासक माय सँ मीठ भ' क' गप्प करए लागल छलाह। आस्ते-आस्ते मिठास केँ वास्तविकताक चुट्टी चाट' लागल।

कैलास पर गजीन्दर आ सुरीन्दरक पैंच बढ़' लागल। बौआ झाक जेबी सँ गजीन्दर-सुरीन्दरक जेबी— आ गजीन्दर-सुरीन्दरक जेबी सँ कैलास केँ पैंच' धरिक यात्रा करैत दसटकही-बिसटकही दोकान पहुँचि जाय।

अन्ततः जखन बौआ झाक हिसाबेँ कैलास पर पाँच सय पैंच चढ़ि गेल, तँ एक दिन सुरीन्दर फिलिप्स रेडियो उठा क' बौआ झाक दलान पर सून' गेल। कैलास एकरा सामान्य बात मानि निचैन छलाह। एक सप्ताहक उपरान्त 'घर-आंगन' सुनबाक माय जिज्ञासा कयलथिन, तँ गेलाह रेडियो लाब'। सुरीन्दर

कहलकनि— केम्हर दोस?

पंजाब जयबाक लेल एक सय भाड़ा मङलथिन कैलास भाइ। सुरीन्दर हँसि देलकनि— दोस, आब तँ पाँच सय पूरि गेल अहाँ पर। आब पहिने सधबियौ ने! पंजाब गेल लोकक कोन भरोस? कहीं आतंकवादिए गोली मारि देलक, तँ छ' सय टाकाक कोन राइ-दोहाइ?

कैलासक कण्ठ मे बक द' गाड़ाँ लागि गेलनि। चुप्पे रहि गेलाह।

रेडियो उठा क' विदा भेलाह, तँ गजीन्दर हाथ सँ ओरिया क' ल' लेलकनि— कैलास भाइ, पाँच सय टाका बौआ भाइ देने छलाह, हम सभ नहि। तेँ फिलिप्स रेडियो हम सभ अपना ओहि ठाम नहि राखल, बौए भलाइक दलानक शोभा बनाओल। एत्तहि रह' दियौक, पाँच सयक एवज मे। सुनबाक मोन हो, तँ माय सहित चलि आयल करब!'

कैलास किछु बाज' चाहलनि, तँ पाँच-दस सेकण्डक अभ्यन्तरहि ओ 'कैला' भ' गेलाह। कैला केँ बिना रेडियोक भगा देल गेल— भाग बहिं एत' सँ। नहि तँ दू लात देबौ एखनहि— राड़ं घोड़ं एड़ं पवित्रम्...

गरदनिञा देबाक भार गजीन्दरक छलैक। मुदा बौआ झा काँच गोटी नहि खेलायल छलाह। ओ कैलाक गरदनि पर धौल नहि, पालो राख' चाहैत छलाह।

साँझ मे कने टहलि गेलाह बौआ झा— जकरा चुट्टी जकाँ मरबाक पाँखि नहि जनमल होउ, से कैला केँ पंजाब जयबा लेल भाड़ा नहि दिहैक। देलही कियो, तँ बौआ झा महग पड़थुन्ह।

प्रात भेने गजीन्दर-सुरीन्दर पोल्हाब' लागल— कैला आ कैलाक माय केँ।

—'आब जे भेलै से बिसरि जाइत जो। आ, बौआ भाइक हरबाही सकारि लही, तँ माफ क' देथुन। नहि तँ कल्याण नहि छौ कैला। ओम्हर पंजाब भगबेँ आ एम्हर माय साफ। घराड़ी दखल भ' जेतौ। जे ठीक बुझाउ से कर बच्चा! अपन नीक-बेजाय तँ अपनहि बुझबेँ!

माय साफ! घराड़ी दखल!! ओह! ई राक्षस सभ, किच्छु क' सकैत अछि।

—'ठीक छै मालिक! लाउ हरखारा आ पालो!'

आइ च'र मे हर बहि रहल छै। कदबा छै धनरोपनीक। अखाढ़ मासक कदबा।

—'कैला माय! कैला केँ पनपिआइ द' अबही। खेसारीक रोटी। लौंगिया मिरचाइ, नोन! हुँह... पंजाबक तन्दूरी निकलतनि सार केँ।'

—'गजीन्दर! सुरीन्दर! फिलिप्स रेडियो हाथ मे लैह ने भाइ! चल' ने कने च'र मे!'

—'हँ बौआ भाइ, चलू।

— मुस्कियाइत सुरीन्दर बाजल।'

च'र मे कैला 'आओ! आओ रे भैया!! हे हे... चमड़ाखल्ली! केना करै छै'— करैत कदबा क' रहल अछि। हर मे लगैत खढ़ केँ पेना सँ छोड़ा-छोड़ा कदबा करैत जा रहल अछि कैला।

गजीन्दर मुस्तंड अछि। ओकर पोसल देह आगाँ मे ठाढ़ देखि बरद ठाढ़ भ' जाइत अछि। गजीन्दर मुस्कियाइत फिलिप्स रेडियो पालो मे लटका क' सक्कत सँ बान्हि दैत अछि। बौआ झा मुस्कुरा उठैत छथि। हुनकर सपना पूर भ' जाइत छनि।

कैला फिलिप्स रेडियो दिस तकैत अछि। ओकर आँखि सँ अँगोरा बरिस' लगैत छै। गजीन्दर रेडियो खोलि दैत छैक— दरभंगा टीसन सँ राष्ट्रीय गीत, आजादीक गीत देब' लगैत अछि।

कैला केँ माय पनपिआइ ल' क' अबैत देखाइ छै। ओकरा अविचंक ल' लैत छैक। बुढ़िया पहिनहि सँ सोगायल छै—गजीन्दर-सुरीन्दर आ बौआ झाक असलियतक भंडा फुटला सँ। रेडियो एना देखतै, तँ कहीं माय केँ दाँती-चनरा ने लागि जाइ।

कैला दुहत्थी हरबाही पेना, समधानि क' फिलिप्स रेडियो पर मारैत अछि।

•

कथा-संवाद(सगर राति दीप जरय)
दरभंगा 7 जुलाई, 1990 ई. मे पठित।

सेकेन्ड-डिवीजन

पत्नी जिद्द रोपने छलथिन।

विजय सेहो अड़ल छल अपना जिद्द पर।

ओकर पत्नी कहैत छलथिन जे, बच्चाक सेक्स-टेस्ट कराक' देखि ली, जे कोन बच्चा थिक?

विजय एकरा निरर्थक आ अनर्थकारी मानैत छल। कोनो बच्चा अबैत हो, एके रंग, उत्साहपूर्वक स्वागत हेबाक चाही। सेक्स-टेस्ट सँ निराशा सेहो भ' सकैछ आ बच्चाक प्रति अन्याय सेहो। तेँ तकर पक्ष मे विजय नहि छल।

ओकर कनियाँक जिद्दक सेहो कारण छलैक। हुनकर कहब छलनि जे एहि बेर बेटी भेला सँ ओकर सासु, अर्थात् विजयक माय बाजबो-भुकबो बन्न क' देथिन हुनका सँ, कारण, अरुणिमेक जन्म बेर ओ अप्रसन्न भ' गेल रहथिन, जे अगता खेती आ अगता बेटा भागमन्ते के होइ छै। विजय मायक 'अशिक्षा, अज्ञानता' आदि कहि पत्नी केँ चुप क' देने रहय।

तैओ अरुणिमाक बेर मे एतेक बिहाड़ि नहि उठल रहैक। आ अइबेर तँ सभक बेशी इच्छा छलैक जे बेटे होइक विजय केँ।

विजय केँ एहि 'बेटाक इच्छा' पर छगुन्तो लगैत छलैक। ओकरा सन्तान होयब आ तकदीर मे कोनो टा सम्बन्ध नजरि नहि अबैत छलैक। मुदा लोक छलैक जे...

विजय पत्नीक जिद्द पर नहि झूकल आ अन्ततः बच्चाक सेक्स-टेस्ट नहिएँ करौलक। ओकरा ई बड़ा कोनादन बुझयलैक आ ओ टालैत गेल। समय पूर भेलैक आ विजय पत्नी के अस्पताल मे भर्ती करा देलक। स्थिति असामान्य भ' गेलैक कोनो कारणेँ आ विजयक पत्नी केँ ऑपरेशन क' क बेटीक जन्म भेलैक।

ऑपरेशन पैघ छलैक। ईथरक प्रभाव सँ मुक्त भेला पर जखन विजयक कनियाँ होश मे अयलथिन, तँ कान' लगलथिन—आब की हेतै यौ? लोक सब कहतै, फेर बेटीए!

—किछु नहि कहतै लोक। हम सभक मुँह बन्द क' देबैक। अहाँ किए

घबड़ाइत छी? बेटियो सन्ताने होइ छै। हम छी किने? —विजय हुनका चुप कर' लागल। सान्त्वना देब' लागल। ओना सामान्य परिस्थिति रहितैक तँ विजय तमसाइत। ओकरा एहेन कानब आ एहेन सांत्वना देब अनावश्यके बुझाइत दलैक। आ जँ कनबेक हो, तँ पुरुष कानय, स्त्रीक कोन दोष? विज्ञान-सम्मत तथ्य तँ यैह छैक जे, सन्तानक सेक्स निर्धारण मे बापेक बेशी महत्वपूर्ण भूमिका होइत छै।

विजय ग'र क' रहल छल जे ऑपरेशन-थियेटर सँ वार्ड मे स्ट्रैचर पर रोगी केँ आनयवला अस्पतालक चपरासी सभ, बेटा भेल महिलाक आदमी सभ सँ मुँह खोलि, हँसि क' जिद्दम-जिद्दा क' क' 'बक्शीश-इनाम' मंगैत छलैक। मुदा विजयक पत्नी केँ जखन बेड पर अनलकैक, तँ चुपचाप ठाढ़ भ' गेलैक। इनामे लेल ओ सभ ठाढ़ छल, मुदा बेटी भेलाक कारणेँ ओ सभ उदास छल आ हँसिक' मंगबाक साहस ओकरा सभ केँ नहि भ' रहल छलैक।

विजय एकटा बेटा भेल महिलाक पति केँ खुशी सँ पाइ लुटबैत देखने छल। पाइ लूट'वला बच्चा सभक किलकारी ओकर कान फाड़य लगलैक।

विजय अपना बहिन दिस तकलक, जे घुघना लटकौने छलैक— भतीजी भेला पर। ओ अपना बहिन केँ भाउजक हाथ-पयर दाबि क' बैसबाक इशारा करैत उठल आ ठाढ़ भेल स्ट्रेचरवाला चपरासी सभ केँ पुछलक— तोरा सभ केँ की चाहिय'?

—जे देबै से दिऔ ने हजूर। हम सभ की कहू? आइ लड़िका रहितै, तँ दोसरे बात रहितै।

—देख' हमरा लेल लड़िकीयो लड़के छी। कोनो अन्तर नहि। तोरो सब केँ आइ ई सब बात छोड़ि देबाक चाहिय'। दिन-राति यैह काज करैत छ' तैओ...

विजय बाजल आ जानि-बूझिक' बिसटकही निकालि क' देलक ओकरा सभ केँ, कारण, ओकर बगलक बेडवला बेटा भेला पर दसटकही देने छलैक ओकरा सभ केँ।

ओ सभ टक-टक ताक' लागल आ आशीर्वाद देब' लागल जे अगिला बेर बेटे हो, एहेन उदार-हृदयवला हजूर केँ।

आब कपड़ा खीच'वाली आ बच्चा केँ नहाब'वाली दाइ ओकरा आगू आबि क' ठाढ़ भ' गेलैक। विजय ओकरो देलक टाका, तँ ओ बजलै-भगवानो बहुत अन्यायी छथि। एहेन लोक केँ कतौ बेटी-पर-बेटी होइ। आइ मोन खुशी

क' क' जइतहुँ एत' सँ। से...

विजय दाइ केँ कहलकै—अहाँ पूरा मोन खुशी क' क' जाउ। ई सभ बात मूर्ख आ अशिक्षित लोक बजैए। आब ई सभ बात बहुत पुरान भेलैक। दुनियाँ कत' सँ कत' चलि गेल आ अहाँ सभ बेटाक मोह मे ओझरायल छी। बेटाक हाथेँ उकबत्ती लगला सँ जँ स्वर्ग भेटितैक, तँ नरकक जगह कहियो नहि भरितैक आ फेर लोक किए जन्म लितय एत'? हम खुशी सँ पाइ बँटलहुँ अछि। खुशी नहि रहितहुँ तँ इनाम-बक्शीश किए दितहुँ? अहाँ सभ केँ अस्पताल तँ काज करबाक दरमाहा दैते अछि।

विजयक कनियाँ, बेडक अगल-बगलक लोक, ओकर बात सूनि रहल छलैक। मुदा क्यो ओकर तर्कक सम्पुष्टि मे किछु बजलैक नहि।

विजय बहिनिक आँखि सँ नोर खसि रहल छलैक आ ओ बगलवाली रोगी सँ कहैत छलैक— 'हमर भैया बताह भ' गेलथिन-हेँ। तेँ एना करैत छथिन। कतौ बेटियो मे लोक एना पाइ फेकैत-लुटबैत छै?'

विजय जखन कनियाँ केँ बाद मे अस्पताल सँ नाम कटाब' डाक्टरनी लग आयल तँ डाक्टरनी, जे बहुत ग'र सँ सभ किछु देखने रहैक, बाजलि—जहिया हमर जन्म भेल रहय, तँ एहिना भेल रहैक। कारण, हमहूँ अपना मम्मी-पापाक दोसर बेटी रहियनि। आ आइ हमर बड़की बहिनि आइ.ए.एस. अछि आ हम डॉक्टर छी। आर सुनू। हमरा संगहि जाहि लड़काक जन्म भेल रहैक, से हमर अधीन कम्पाउन्डरक काज क' रहल अछि। बच्चा केँ बनयबाक मोल छै, ई देखने बिना, जे बेटा थिक कि बेटी। की अहाँ अइ लोक सब केँ ई बात बुझा सकै छी? बुझा सकी तँ उत्तम।

विजय केँ डॉक्टरनीक बात प्रफुल्लित क' देलकै। ओकरा ओ पहिल एहेन लोक बुझयलैक, जे प्रगतिशील बात कहलकै। विजयक बहिन आ कनियाँ चुपचाप सुनैत छलथिन। अगिला दिन विजय बहिन केँ गाम पहुँचाब' गेल आ कनियाँ के सारक संग नैहर पठा देलकै, कारण, ओकर सार अपना बहिन केँ अस्पताल सँ सोझे अपना गाम ल' जाय हेतु आयल छलथिन।

विजय केँ एहि बातक अन्दाज छलैक जे ओकर नव खबरिक संग गाम पहुँचला पर की सभ हेतैक।

ओ आंगन मे पयर देलक कि टोल उठि क' आंगन आबि गेल आ रंग—बिरंगक टीका-टिप्पणी होअय लागल।

'धौर जो' 'तकदीर' 'कपार' 'भाग' 'कर्म' 'अदृष्ट' 'छौड़ी'? 'छौड़िए?' 'ऑपरेशनो क' क' छौड़िए?'— आ एहने कतओक शब्द आ वाक्यांश विजयक कानक पर्दा फाड़ैत रहलैक आ ओ एक-एक शब्दक विरोध करैत रहल। उदाहरण द' द' क' साबित करैत रहल जे बेटा सँ बेशी सुख लोक केँ बेटी मे छैक। ओ लोफर-लफंगा, बेकार, बुड़िआयल नहि हेतैक। थोड़ेक ध्यान देल जाय, तँ बेटा सँ बहुत आगू जा सकैछ बेटी। सृष्टिचक्रक नियमन हेतु बेटीक महत्व, गार्गी-मैत्रेयीक उदाहरण आ कतेक- की बाजल ओ, तकर ठेकान नहि। मुद अन्ततः एकटा 'मुदा' ओकर पछोर नहि छोड़लकैक।

एकटा भाउज चौल केलखिन— अयँ यौ बौआ, अहा केँ निन्न आबि जाइए की? सुनै छिऐ, सूतल में बेटी आ जागल मे बेटा होइछै। विजय केँ भेलैक, जेना ओकरा देह पर एक टीन मटिया तेल ढारि क' क्यो अचानक आगि लगा देने हो। ओ अपना कोठली जा कपड़ा बदल' लागल आ कोनो जवाब नहि देलकनि हुनका! जंगला द' क' ओकरा माय देखयलैक दलान दिस जाइत। ओ सोचलक, आब माय-बाबूजी केँ कोना-की कहतनि से नहि जानि। पहिने एहना सन स्थिति मे लोक केँ लाज होइत छलैक। आइ विजय केँ बाबूजीक नकारात्मक प्रतिक्रियाक भय आ आशंका भ' रहल छलैक।

विजयक माय कहलथिन किछु बुझबो केलिऐ कि नहि? फेर पोती अयली। लक्ष्मी बनिक'।

विजय अकान' लागल जे बाबूजी की बजैत छथिन? बाबूजी मुदा किछु नहि बजलथिन थोड़ेक काल। थोड़ेक कालक बाद बजलथिन— बच्चा केँ बहुत कष्ट छनि। अपन-अपन भवतब। जन्मे ने हम सब देलियनि, भाग्य आ भोग तँ अपने तकदीरक हेतनि। आइली-बाइली आमदनीवला नौकरियो नहि छनि। परफेसरीक सुक्खा-सुक्खी बान्हल दरमाहा। विचार एहेन जे टीसन नहि करब, गेस-पेपर नहि लीखब। इनभर्सिटी छ' मास पर एक मासक पाइ देतनि, ताहि पर कतेक कूद-फान हैत? तखन त' इच्छा भगवान केँ।

—'कियो की करतै? जतेक धारने हेतै छौंड़ी केँ, से त' आब ल' क' जेबे करतै। कोनो जन्म मे बच्चा ऋण खेने छलै छौंड़ीक, से महाजन भ' क' असूल' आयल छै।

विजय सोचलक - आब माय फेर अनेरे काकी सँ झगड़ा करतैक, कारण, काकीक पुतोहु बदमाशो भ' क' तीन बेर तीन टा बेटे काकीक कोरा में

देलथिन। जखनकि विजयक कनियाँ सज्जनो भ' क' ओकर माय के पोताक मुँह एखन धरि नहि देखा सकलथिन। तेँ परुकाँ सालक झगड़ा मे ओकर काकी बजलो रहथिन— 'लोकक पुतोहु जकाँ सुन्नरि ल' ल' धो-धो चटतै लोक? हमर पुतोहु त' कारिये अछि। मुदा बेटीक ढेर नहि ने लगौलक।' विजयक माय गुम्म भ' गेल रहैक।

काकी अपना पुतोहुक तेसर बेटा भेलाक उपरान्त अपलेसन करा देने रहथिन, जे कहुँ बेटी ने भ' जाइ एकोटा। विजय केँ एकटा देहाती झगड़ा मोन पड़लै, जाहि मे एक सासु, दोसर सासु केँ उलहन देने रहथिन जे हमरा पुतोहुक पेट सँ गुन सँ बेटा झीकि क' तोँ अपना पुतोहुक पेट मे ल' गेलें आ अपना पुतोहुक पेटक बेटी हमरा पुतोहुक पेट मे द' गेलें। डनियाँ गे, तोँ हक्कलि डाइनि छें।

विजय तहिया मायक देह पकड़ि-पकड़ि क' खूब हँसल रहय। माय बाजल रहैक— जा तोँ शहरक लोक सब किछु बुझैत नहि छहक। कहीं हमरो सिर ने बिसा जाय! विजय बहिनि केँ सगर टोल मे रसगुल्ला बाँटि आब' कहलकै, तँ ओ माय दिस ताक' लगलै। विजय बजलै 'माय दिस की तकैत छिही? जो ने!

बहिन रसगुल्ला बाँट' बिदा भेलै।

तेसर-चारिम दिन विजय सोचैत छल जे ओकर सासुर मे एना नहि भेल हेतैक, कारण, ओ सब अपना केँ 'एडभान्स' कहैत छथिन। सिनेमा-टी. भी., हिन्दी बाजब, फैशन करब आदि-आदि ओत' आम बात छैक। ओकरा अरुणिमाक जन्मक छठिहार मोन पड़लैक, भोज-भात मोन पड़लैक, भी.सी.पी. पर भरि राति तीन टा सिनेमा मोन पड़लैक, तँ थोड़ेक आश्वस्त भेल।

विजय आंगुर पर दिन गनि बुझलक जे काल्हि छठिहार छैक छोटकी बेटीक। ओकरा सार बजौने छलैक ओइ दिन। छठिहारक कपड़ा कीनि ओ एक टा नीक सनक नाम टेबलक आ दोसर दिन साँझ मे सासुर पहुँचल, तँ अकबका गेल।

विजय सरहोजि सँ पुछलक—कोनो इन्तजाम-बात नहि देखैत छिऐक?

सरहोजि मुसकिया देलथिन आ बजलथिन—सेकेन्डो-डिवीजन भेला पर भोज-भात होइछै ओझा?

—अहुँ एकटा बेटीक माय छी। जखन अहाँ बेटीक जन्म केँ सेकेन्ड डिवीजन मानैत छी, तखन त'... विजय बाजल— ओकरा अरुणिमाक छठिहार

मोन पड़लैक। लोक केँ बेटावला खुशी त' नहिएँ भेल रहैक ओहू बेर, मुदा तैओ पहिल सन्तान बूझि क' सगर आंगनक भानस भेल छलैक। माँछ आयल छलैक। बेटी आ नातिन दुनू लेल, कपड़ा-लत्ताक इन्तजाम भेल रहैक।

ओ कत' छथिन? —पुछलकै विजय, तँ सरहोजि आंगुर सँ कोठली दिस इशारा क' देलथिन।

विजय आगू बढ़ल, तँ ओकर बड़की बेटी भेटलैक। पहिने ओ दुलार छिड़िअयलैक आ तखन तोतड़ा-तोतड़ा क' बजलैक— 'पापाजी यौ, हमला ने, छे मामी कहै छलथि, जे बौआ किए ने अनलें अछपताल छ'? बुच्ची किए अनलें? पापाजी यौ, अपन बौआ, बौआ नै छिऐ, बुच्ची छिऐ?

विजय केँ भेलैक जे ओ खूब जोर सँ चिचिया उठय— 'बौआ आ बुच्ची दुन्नू जरूरी छै। दुन्नू एक्के रंग होइ छै!' —आ सरहोजि केँ एक थापड़ कसि क' मारय।

फेर ओ सोचलक सरहोजिएटा दोषी नहि। ओकरा अपना-आप केँ, माय-बाबूजी-बहिन, सासु-ससुर, सगर गाम-सगर सासुर, सभ केँ थापड़ मारए पड़तैक। ओहि सभ पुरुखा आ पितर केँ थापड़ मारए पड़तै जकर प्रारंभ कयल छिऐक ई विभेदक परंपरा। ओइ सभ गार्जन केँ थापड़ मारए पड़तैक, जे व्यवस्था गनिक' आ गनाक' बेटीक जन्म केँ दुर्घटना बना देलकै-ए। ओ बड़की बेटी केँ बुझाब' लागल—मामी अहाँ केँ ओहिना हँसी करैत छलथि।

विजय कोठली ढूकल, तँ छोटकी बेटीक मुँह देखि मोन प्रसन्न भ' गेलैक। मुदा कनियाँक उदास मुँह देखि अवसन्न रहि गेल। कनियाँ सँ ओ उदासीक कारण पुछलक, तँ ओ आर कान' लगलथिन। कहलथिन—एत' आयब अइ बेर ठीक नहि भेल। डेरे पर जयबाक चाहैत छल। ने अहींक गाम मे, ने हमरे गाम मे, क्यो कत्तहु ने प्रसन्न भेलैक एकरा जन्म सँ। सभ केँ अस्सी मोन पानि पड़ि गलैक। अरुणिमाक छठिहार मे कतेक की भेल रहैक। आ एकरा बेर मे...।

विजय तुरन्ते कोठली सँ बहार भेल आ बजार चलि देलक। ओकरा माथ मे फेहरिस्त बनि रहल छलैक—माछ, मिठाइ, साड़ी, भिडियो-सिनेमा।

•

कथागोष्ठी (सगर राति दीय जरय)
कटिहार, 27 अप्रैल 1991 ई. केँ पठित

जनउ

समस्त प्रदेश विखाह हवा सँ सविक्ख भेल छल।

लोक त्रस्त आ आतंकित छल, जे कहीं अपने मे ने गृहयुद्ध भ' जाइ। तकर लक्षण स्पष्ट भ' रहल छलैक।

आरक्षण-समर्थित आ आरक्षण-विरोधी आन्दोलन अपन निकृष्टतम घिनाउन रूप मे चलि रहल छल आ जातिवादक नाङट-विभत्स रूप जत्र-कुत्र व्याप्त भ' रहल छल।

एहना स्थिति मे, हमरा जरूरति भेल दरभंगा सँ पटना जयबाक। बात एना भेलैक जे चेतना समितिक विद्यापति-पर्व पटना मे आयोजित छलैक। सोचैत रही जे कएटा आप्त-मित्र सँ भेंटो भ' जायत ओत'। ताहू सँ बेसी जरूरी काज-पोथीक कवर छपायब, सेहो पूर्ण भ' जायत। पर्वक अवसर पर पोथीक लोकार्पणक एकटा विशेष महत्व रहै छै।

तेँ हम औनायल रही पटना जयबाक लेल। कवर छपलाक पश्चात् फेर पोथीक बाइन्डिंग कराब' मे समय लगितैक। कोनो स्थिति मे पर्वक अवसर पर पोथी प्रकाशित करबा लेल हम आर्त्त रही। आ कवर दरभंगा मे छपायब संतोषप्रद नहि होइत। तेँ पटना जयबाक कोनो दोसर विकल्प नहि छल।

हमरा उमा बाबू चेतौलनि—'जिनगी बाँचत तँ बहुत किताब छपायब। हाजीपुर मे बहुत 'डिस्टर्ब' करैत छै। बसक संख्यो बहुत कम भ' गेल छैक। जतहि मौका पबैत छै, बस लूटि लैत छै, आगि लगा दैत छै, शीशा फोड़ि दैत छै। बी.सी.-एफ.सी.बला झंझट चरम-सीमा पर छै। हाजीपुर मे बी.सी. सभ बहुत दिक्कत करै छै।' हम थोड़ेक सहमि गेलहुँ। फेर हमर दुस्साहसी मोन कहलक—नो रिस्क, नो गेन।

एकबार मे पढ़ने रही, जे पटना मे कर्फ्यू लागल छैक। तेँ अत्यन्त विषम-परिस्थिति छैक।

हम विचारमग्न भ' गेल रही आ मोन ततमत करए लागल रहय जे की करी, की नहि?

हम वर्णव्यवस्था आ तकर पृष्ठपोषक सभ केँ गारि पढ़' लागल रही,

मोने-मोन। जातिवादी नेता सभ केँ गारि पढ़' लागल रही, जे देश केँ बेर-बेर शताब्दीक-शताब्दी पाछू ठेलि दैत अछि।

मुदा से समाधान नहि छल।

हम एहि सँ पूर्व, अतीतक बात कहैत छी, कए बेर प्रगतिशील विचारध ाराक प्रभाव मे आबि जनउ तोड़बाक प्रयास कयने रही। मुदा जनउक उपयोगिताक पक्ष मे कएटा तर्क हमरा मानसतल मे उभरि आबय आ हम सोची जे बिना गंभीरतापूर्वक विचारने ई नहि करबाक चाही।

गंभीर विचारक क्रम मे हम पाबी, जे जनउ कोनो दुर्घटनाक दशा मे (जेना साँप कटला पर) कखनो आ कतौ दंशवाला जगह केँ बान्ह' मे बहुत उपयोगी अछि। एहि मे हम अपना लेखनवला कोठलीक तालाक कुञ्जी लटकबैत छी आ काव्यसृजनकालीन क्षणक अनमना मे जनउक कुञ्जी नचाबैत रहैत छी। पुनः गर्मीक दिन मे जनउ सँ पीठ कुड़िअयबाक अपन खास आनन्द छैक। तेँ धार्मिक-सामाजिक महत्वहीनताक बावजूदो, एकर अन्य उपयोगिता केँ नकारल नहि जा सकैछ।

तेँ हम कहियो जनउ तोड़ि क' फेकि नहि सकल रही।

आइ मुदा हमर अवसरवादी मोन एकरा समाधानक रूप मे देखि रहल छल आ 'आत्मरक्षा परोधर्मः' कहि हमरा एहि लेल उकसा रहल छल। हमरा मोन मे जनउ तोड़' सम्बन्धी अन्य बात सब आब' लागल, तँ आदरणीय स्व. किरणजी मोन पड़लाह। आब प्रसंगवश सेहो सुनाइये दैत छी।

एक बेर हम सभ किरणजी सँ भेंट कर' गेल रही। ओत' हुनक उप-समाहर्त्ता पुत्र श्री केसरीनाथ झा सेहो रहथि ओहि दिन। गप्पक क्रम मे हम किरणजी सँ जनउ पर किछु गप्प कर' लागल रही, तँ श्री केसरीनाथ झा कहलनि जे ओ जनउ तोड़ने छथि आ आब नहि पहिरैत छथि। ताहि लेल हुनका कोनो पश्चात्तापो नहि छनि। किरणजी एकर समर्थन कयलनि आ जनउ केँ समाजिक सामंजस्य स्थापित करबा मे एकटा बाधक तत्व मानलनि।

हमर दिमाग मे जनउ तोड़बाक पक्ष मे किरणजीक तर्क आ श्री केसरीनाथ झाक उदाहरण नाचि गेल।

हमर हाथ जनउ दिस बढ़ि गेल। मुदा कुञ्जी जनउ मे बान्हल देखि, जनउ नहि तोड़बाक पक्षवला एकर उपयोगिता सभ हमर हाथ केँ रोकि देलक।

हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ जकाँ खौंझा गेलहुँ। देस केँ जातिवादक गर्त्त मे झोंकनिहार नेतृत्व-वर्ग केँ पुनः-पुनः खूब धिरकारलहुँ मोने-मोन आ निर्णय कयलहुँ, जे प्रायः सभ आदमी कोनो-ने-कोनो स्तर पर समझौतावादी होइतहिं अछि।

तेँ एतेक समझौता कयल जा सकैछ, जे जनउ केँ जनउक रूप मे नहि पहिरि एकरा डोराडरिक रूप मे संग मे राखल जाय। से कयला सँ तात्कालिक संकट सँ प्रायः मुक्त भ' जायब। बेर पड़ला पर हम जनउहीनता अथवा जनउयुक्त प्रदर्शित क' सकै छी आ जनउक कएटा उपयोगिताक लाभ सेहो उठा सकैत छी। ई हमरा देशक दुर्भाग्य आ हमर सभ्यताक पतनक लक्षण थिक, जे ककरो जनउ देखि बैकवार्ड-फॉरवार्ड बूझल जाइ छै आ तदनुकूलहि प्रतिष्ठा, घृणा आ इनाम, दण्ड देल जाइत छै।

हमर मोन ई सोचि अवसाद सँ भरि गेल।

उमा बाबू कहने छलाह जे हाजीपुर मे जनउ देखि क' बस सँ उतारि लैत छै आ दुर्व्यवहार करैत छै। हमरा अविचंक ल' लेने रहय।

तेँ हम जनउक मादे एतबा सोचने रही आ अवश्यंभावी संकट सँ त्राण पयबा लेल कोनो रास्ता ताक' लागल रही।

तत्काल हम डोराडरिक रूप मे जनउ केँ डाँड़ मे लेपटा लेलहुँ आ अत्यन्त भयग्रस्त मानसिकता मे पटना विदा भ' गेलहुँ।

से मुदा भइये गेलहुँ। किताब छपयबाक निशाँ कोनो नव लेखक लेल साधारण निशाँ नहि ने होइ छै।

संग मे दू हजार टाका ल' लेने रही, जे ल' लेब आवश्यक छल। आ बस-स्टैण्ड चलि देने रही टेम्पू पकड़ि क'।

बस मे बैसि हम संभावित परिस्थितिक कल्पना कर' लागल रही।

हमरा टैगोरक एकटा पाँती मोन पड़ि गेल रहय—हे प्रभो, हमरा अहाँ पाशविक बल आ मानवी बुद्धि दुनू दीय', जाहि सँ हम आततायीक सामना सक्षमतापूर्वक क' सकी।

आजुक परिवेश मे कोनो नीक लोक केँ, नीक लोक बनल रहबा ले', ई दुनू चीज परमावश्यक छैक। हमरा दुःख अछि, जे पाशविक बल हमरा नहि अछि। हमरा एहेन लोक केँ कत्तहु अपमानित हेबाक, इज्जति अथवा जान चलि जयबाक हरदम खतरा बनल रहैत छै!

बस अपना गतिएँ बढ़ल जा रहल छल।

लोक चुप छल आ एक-दोसर केँ सन्देहक दृष्टि सँ देखैत छल।

कियो कोनो चर्चा उठाब' सँ पूर्व आइ-काल्हि सोचैत अछि जे बगलवला कोन जातिक हैत, कोन जातिक ने! बैकवार्ड हैत, कि फॉरवार्ड? हिन्दू हैत कि मुसलमान? कतौ चर्च शुरू करब, बेउरेब ने भ' जाय?

लोक केँ अनेक आधार पर एतेक ने बाँटि देल गेलैक अछि, जे लोक लोकत्वहीन भ' गेल-ए। एहना स्थिति मे निष्पक्ष विचार निर्भीकतापूर्वक व्यक्त करब, खतरा सँ खाली नहि अछि।

बस मुजफ्फरपुर सँ आगाँ बढ़ि चुकल छल। सड़क सुनसान छल। साढ़े सात बाजि चुकल छल। हम सोचलहुँ, ठीक-ठाक आ समय सँ पहुँचि गेलहुँ तँ सोझे प्रेसे जायब पहिने। काज प्रारंभ करौलाक बाद भेंट-घाट होइत रहतैक।

ठाँईं! —एकटा रोड़ा आबि खिड़की मे लगलैक आ शीशा चूड़-चूड़ भ' गेलैक। खिड़की लग बैसल एकटा महिलाक गाल मे शीशाक चुन्नी उड़ि क' लहूलुहान क' देलकै।

फेर 'ठाँईं-ठाँईं' तीन-चारि टा रोड़ा बसक पाछू मे लगलैक। मुदा बस आगू बढ़ि गेलैक।

लोक, जे आँखि-ताँखि मूनि सहसा आबि गेल विपत्ति केँ अवधारि लेने छल, विपत्ति सँ तात्कालिक त्राण भेटवाक निसास छोड़लक। कन्डक्टर 'फस्ट एड'बला बक्सामे सँ तूर आ डिटौल निकालि ओहि महिला केँ देलक।

बस फेर भाग' लागल।

कन्डक्टर सभ केँ साकांक्ष रहबाक चेतौनी देलक आ खिड़की सभ केँ बन्द करबा देलक।

फेर ड्राइभर सँ विचार-विमर्श कर' लागल, जे केना सुरक्षित पटना पहुँचल जाय? रस्ता बदलवाक कोनो टा उपाय नहि छलैक।

हम सूटकेस सँ तौलिया निकाललहुँ आ रोड़ा-शीशा सँ सुरक्षाक लेल माथ झाँपि लेलहुँ।

सभ सकदम छल, कारण, बस हाजीपुर पहुँच'-पहुँच' पर छल। हम सोचैत रही जे कोन स्थिति मे कोना-की करब? एना हैत त' एना करब आ ओना हैत त' ओना करब? आ जँ एना-ओना सँ इतर कोनो तेसर तरहक परिस्थिति आयल, तँ की करब?

जेना मड़आ-रोटी बक् द' गाड़ा लागि गेल हो आ लग मे पानि नहि हो।

हमर हाथ कंठ ससारवाक अभिनय कर' लागल रहय।

मुदा बकू द' ठीके गाड़ा लागि गेल रहय आ लोक बसक आगू मे बीच रोड पर बाँस लागल देखि अकबका गेल रहय, जे ई की भ' गेल?

बस रोक' पड़लै।

रुकिते देरी फटाफटि आठ-दस टा सड़क छाप गुण्डा सभ बसक गेट खोलि अन्दर ढुकल आ बाजल—

—'के सब बैकवार्ड है? हाथ उठाइये!'

एकोटा हाथ नहि उठल। सभ खाली बलिदानी छागर जकाँ टुकुर-टुकुर तकैत रहल।

—'अरे देख रे! के-के तागधारी हउ! देख रे पपुआ!'

हमरा भेल जेना दसो टा लफुआ 'पपुआ' हमरे दिस अबैत हो आ पूरा बस अन्तरिक्ष मे टप्पा खाइत, नियंत्रणहीन कोनो यान जकाँ, उलटैत-पलटैत हो।

हम गम' लगलहुँ, जे ई छौंड़ा सभ बी.सी. अछि कि एफ.सी? बैकवार्ड केँ मारतै, कि फॉरवार्ड केँ?

मुदा आश्चर्य!

छौंड़ा सभ ककरो किछु नहि कहलकै आ जनउ देखबाक बहाने लोहाक छड़ हिलबैत, पेस्तौल नचबैत आ छूरा चमकबैत, सबहक लग मे जाइ आ घड़ी-औंठी खोलबा-खोलबा रखने जाइ। फेर सबहक अगिला-पछिला जेबी ताकि क' सभ रुपैया ल' लैक।

ने बैकवार्ड—ने फॉरवार्ड।

जे लुटा गेल से बैकवार्ड, जे लुटलक से फॉरवार्ड!

तहिना महिला सीट पर बैसल यात्री सभक अंग-अंग सँ गहना सभ उतरबा लेलकै। जे कनियोँ आनाकानी केलकै, तकरा देह मे हाथ लगाब' मे ओकरा सभ केँ कोनो दिक्कत नहि भेलैक। एकटा महिला अपन औंठी ब्लाउज मे नुका लेने छलि, से कोना-ने-कोना एकटा लोफरबा देखि लेलकै।

ओ तुरंत ब्लाउज मे हाथ घोंसिया क' औंठी निकालि लेलकै। महिलाक चेहरा विवर्ण भ' गेलैक आ आँखि मे नोर डबडबा गेलैक।

ओकर पति उठल, तँ एकटा अन्य गुण्डा हाथ पकड़ि क' बैसा देलकै आ छूरा देखा देलकै।

क्यो किछु नहि बाजल।

अन्त मे बेरा-बेरी सभ हथियार देखबैत, बस सँ उतर' लागल आ नारा लगब' लागल—

—वी.पी.सिंह जिन्दाबाद!

—लालू यादव जिन्दाबाद!

—अटल बिहारी जिन्दाबाद!

—राजीव गाँधी जिन्दाबाद!

हम दंग रहि गेलहुँ। सभ दंग रहि गेल। ओ सब बसक गेट बन्द क' देलकै आ पाछू सँ ठोकि क' बजलै—जाओ बढ़ाके।

ड्राइवर तुरंत बढ़ौलक बस।

यात्री सभ दाँते अंगुरी काट' लागल, जे आखिर ई सभ छल के? बैकवार्ड/फॉरवार्ड/कोन पार्टीक समर्थक?

हमर हाथ अपन डाँड़ टटोल' लागल।

जनउ ओहिना डोराडरि जकाँ लेपटायल छल।

मुदा दू हजार रुपैया नहि छल।

•

परिशिष्ट

समानान्तर

समर्पण

ई
सृष्टि
जीवकान्त
आ
मोहन भारद्वाज
हेतु

—रमेश

समानान्तर : रमेश
(कथा-संग्रह)

स्वत्वाधिकार : श्रीमती माला झा
आवरण : शहंशाह आलम
प्रथम संस्करण : 1997 ई.
लोकार्पण : मैथिली युवा लेखनक रजत जयंति समारोह, पटना (16-17 अगस्त 1997 ई.)क अवसर पर श्री प्रभास कुमार चौधरी द्वारा
प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक, सुपौल (केदार कानन)

समाङ

समर्पण

ई कृति

—श्रीमती तारा चौधरी/सासु
—श्रीमती माला झा/पत्नी
—सुश्री दिव्या निशा आ प्राची ऋचा/सुपुत्री
कें
जीवन-संघर्ष मे सहभागिता हेतु
समर्पित

—रमेश

कथापूर्व (समाङ)

'सङोर' (काव्य-संग्रह) आ 'नागफेनी' (गजल-कृति) क उपरान्त एहि कथा-संग्रहक प्रकाशनसँ हमर साहित्यिक-यात्राक पहिल चरण पूर्ण भ' जाइत अछि। तेँ स्वाभाविक प्रसन्नता।

बेसी कथा प्रकाशित आ कथा-गोष्ठी सभमे पठित अछि। किछु कथा तैओ निरैंठ अछि, जकर स्वाद प्रथमहि अपने केँ भेटत।

किछु कथाक किछु अंशमे परिवर्त्तन कयल गेल अछि, जे हमरा आवश्यक बुझायल। किछु कथाक नाम सेहो बदलल गेल अछि, जे कयल गेल समालोचनाक देन थिक।

प्रूफगत अशुद्धि, हैब तँ जेना 'आवश्यक दोष' थिक। ओना धन्यवादक पात्र थिकाह कथाकार उमाकान्त भाइ, जे अपन अशेष समय प्रदान कयलनि।

पोथीक नामकरण आ' आमुख लिखबाक हेतु आदरणीय भाइ मोहन भारद्वाज आ हमर कथाकारक परिचय लिखवाक लेल भाइ जीवकान्तजीक प्रति आभार प्रकट करब हिनकालोकनि द्वारा प्रदत्त स्नेहक अपमान करब होयत।

भाइ अमिय कुमार केँ एहि प्रकाशन लेल की धन्यवाद दियनि? से करब तुच्छता हैत।

आश्चर्य लगैए जे एखनहुँ हमर समाज कतेक पछड़ल अछि, जे साहित्यक मर्म आ उद्देश्य बुझबाक प्रयास करबाक बदला कोनो पात्र वा घटना ककरहुँसँ मिलि गेला पर बवंडर ठाढ़ क' दैत अछि, जे हमरा पर लिखि देलनि। कोनो नाम वा घटना ककरहु थाती नहि होइ छै, बल्कि समस्त समाजमे सोहरल रहै छै। दुःखक गप्प जे किछु साहित्यकारो एहिमे रस ल' ल' कोनो व्यक्तिगत-ईर्ष्याक बदला लैत छथि। निकट अतीतमे एहन किछु शिवशंकर श्रीनिवास ('अदहन' कथा-संग्रह पर) क संग आ हमरा संग (कए टा कथा आ कविता पर) भेल-ए। संभव थिक, ईहो कथा-संग्रह कए टा दुष्टक नजरि पर चढ़ि जानि। दुष्टगणकेँ सदबुद्धि आबनि, सैह कामना!

बस्स! शेष सभ किछु कथे कहत। कृपया कथापाठक निःशुल्को आमंत्रण स्वीकार कयल जाय। शुल्क द' क' पढ़ब तँ संस्कारे नहि अछि।

—रमेश

22 जुलाई 1991 ई.

प्रकाशक दिससँ (समाङ)

मैथिली साहित्यक नवम दशकक प्रतिभाशाली रचनाकार रमेशक नाम आब कोनो परिचयक अपेक्षा नहि रखैत अछि। कविता रहय अथवा गजल किंवा कथा, रमेश अपन फराक स्वर ओ प्रगतिशील चेतनासँ युक्त रचना लेल क्रमशः पाठक ओ श्रोतामध्य जानल ओ मानल जाय लगलाह अछि। निश्चित रूपसँ मैथिली साहित्यमे रमेश एक उल्लेखनीय नामक रूपमे निकट भविष्यमे स्थापित भ' जयताह।

एहि उल्लेखनीय रचनाकारक नव कथा-संग्रह 'समाङ' केँ प्रकाशित करैत 'भाखा-प्रकाशन' प्रसन्नताक अनुभव क' रहल-ए। एहिसँ पूर्व भाखा-प्रकाशन अनेक कथाकारक संग्रह प्रकाशित क' चुकल अछि, जाहिमे काञ्चीनाथ झा 'किरण', गोविन्द झा, विभूति आनन्द, अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवासक व्यक्तिगत संग्रहक अतिरिक्त, महिला कथाकारक संग्रह 'अड़हुल' आ आठम-नवम दशकक कथाकार लोकनिक कथा-संग्रह 'तर्जनी' सेहो अछि। आशा अछि, भाखा प्रकाशनक अन्य पोथीक संगहि मैथिलीक पाठक एहू जागरूक कथाकारक कथा-संग्रहकेँ स्नेहक संग अपनाओत आ लेखकक संग प्रकाशकोक उत्साहवर्द्धन करत।

पुनः अग्रिम प्रकाशनक संग उपस्थित होयबाक लेल—

—अमिय कुमार झा

(‘समाङ’क भूमिका)

सामाजिक चेतनाक समानान्तर

रमेश नव्यतम पीढ़ीक कथाकार छथि। नवम दशकक कथाकार। ओना, आठम दशकक अन्त होइत-होइत ई कथा-लेखन शुरू क’ देने रहथि, मुदा हिनक कथाकारक छवि नवम दशकमे देखार भेल अछि।

मैथिली कथाक विकास कथाकारक सामाजिक चेतनाक विकास थिक। प्रो. हरिमोहन झा अपन कथा द्वारा जे सामाजिक सफाइ केलनि, ताहिसँ हम सभ पूर्ण परिचित छी। मुदा, हुनक समाजे छोट छलनि। काञ्चीनाथ झा ‘किरण’ समाजक आङनकेँ पैघ करबाक प्रयासमे जातीय आ वर्गीय सीमाकेँ तोड़ि अवरजात शुरू क’ देलनि, किन्तु बहुत सफल नहि भेलाह। एहि दिशामे तइयो उल्लेख्य सफलता भेटलनि, ललित आ हुनक समानधर्मा कथाकारकेँ। छठम दशकक कथाकार समाजक निम्न मध्यवर्ग आ निम्नवर्गक दीन-हीन दुनियामे प्रवेश करबाक आवश्यकताक अनुभव केलनि आ ओहू ठामसँ कथा-पात्र तथा कथा विषयक चयन कर’ लगलाह। समय आगाँ बढ़ल। सातम दशकक अन्त धरि कथाकारक सामाजिक चेतना आओर स्फीत भेल। आब कथा अभिजात्ये वर्ग तक सीमित नहि रहल। आब क्षेत्रीय स्थिति आ समस्याकेँ राष्ट्रव्यापी परिवेशमे देखल जाय लागल। राष्ट्रव्यापी स्थिति आ समस्याकेँ क्षेत्रीय अभिव्यक्ति भेट’ लागल। कहबाक तात्पर्य ई जे जीवकान्त आ सुभाषचन्द्र यादवक समाज प्रो. हरिमोहन झाक समाजसँ कत गुन व्यापक भ’ गेल। मुदा, समयक एहिठाम धरि अबैत-अबैत समाजक परिधिए नहि बढ़ल, लोकक स्थिति आ समस्याकेँ व्यापक सामाजिक सन्दर्भमे देखबाक आँखि सेहो भेटल। दुःख-दैन्य दैवी देन नहि थिक, से त’ कहियाने बुझबामे आबि गेल छल। ओ व्यक्तिगतो वस्तु नहि छी, से आब स्पष्ट भ’ गेल। व्यक्तिगत जीवन राजनीतिक व्यवस्थासँ आ राजनीतिक-व्यवस्था समाजक वस्तुगत यथार्थसँ नियंत्रित-निर्देशित होइत अछि, सेहो बुझबामे भाङठ नहि रहल। मुदा, एहि युगबोधक अछैतो सातम दशकक कथाकार सामाजिक स्थितिकेँ सुधारबाक क्रममे व्यक्तिगते प्रयासक आवश्यकता पर जोर दैत रहलाह आ ‘इन्किलाब’

सन कथा लिखाइत रहल। एहिठाम हम 'गोबरछत्ता कथाकारक' प्रसंग बिचार करब उचित नहि बुझैत छी, जे कथाकेँ मनोरंजनक वस्तु बुझैत छलाह। वास्तविकता ई अछि जे सातम दशकक अन्त धरि व्यापक सामाजिक चेतनासँ प्रबुद्ध कथाकारक कथा अपन महत्व रेखांकित करब शुरू क' देने छल आ कथामे सामाजिक परिवर्त्तन हेतु संघर्ष पर जोर देल जा रहल छल।

सातम दशकमे संघर्षकेँ अनिवार्य बुझल गेल त' आठम आ नवम दशकमे ओकर दिशा निर्धारित भेल। ध्यान रखबाक थिक जे आठम-नवम दशकमे स्थापित भेनिहार कथाकार आ हुनकासँ पूर्ववर्ती कथाकारक समाजिक चेतनामे देखार भिन्नता अछि। परिवर्तित, आर्थिक आ राजनीतिक स्थितिक प्रभावक व्याख्या एत' सम्भव नहि अछि, मुदा एतेक धरि अवश्य कहब जे ई सभ कथाकार स्वतंत्र भारतमे जनमल छथि। पूर्वज लोकनिसँ हिनका सभक स्थितियो भिन्न छनि। मुदा ताहिसँ बेसी अन्तर अछि स्थितिक समाधानक प्रयासमे। बहिनक बिआह लेल टाका नहि अछि, त' बलजोरी एकटा युवककेँ ओकर हाथ पकड़बा लेल बाध्य क' देबैक। जीवन-यापन लेल टाका नहि भेटत, त' टाका-वलाकेँ चैनसँ रह' नहि देबैक। स्वतंत्र भारतक युवककेँ समान अधिकार आ समान अवसर भने नहि भेटल होइक, ई सभ भेटबाक चाही आ से देलासँ नहि लेलासँ भेटत— ई बात त' अवश्ये बुझा गेलैक। हित-अहितक ज्ञान भेला पर सहयोगी आ विरोधीक परिचय भेलैक। तात्पर्य ई जे समाजक वर्गीय स्थितिक ज्ञान जतबे फरिछाइत गेलैक, वर्गीय स्तर पर संघर्षक आवश्यकता ततबे रेखांकित होइत गेल। बिनोद बिहारी लाल, राज, शैलेन्द्र आनन्द, अशोक, धीरेन्द्र कुमार, विभारानी, प्रदीप बिहारी, शिवशंकर श्रीनिवास आदिक कथामे संघर्षक व्यक्तिगत नहि, वर्गीय ऊहापोह भेटैत अछि, त' से स्वाभाविक थिक।

एहिठाम एकटा आओर तथ्य दिस ध्यान देब जरूरी अछि। दीन-दुखियाकेँ देखि क' मानवीय करुणाक भावसँ ओत-प्रोत भ' जायव स्वाभाविक थिक, मुदा, दीन-दुखियाक स्थितिक घटक-कारणकेँ बुझब आ तकरा देखार-करबो ओतबे स्वाभाविक थिक। एहि लेल समाजक वर्गीय चरित्रकेँ तँ बूझब जरूरी अछिए, वर्ग-संघर्ष आ ओकर रूप-रेखाक परिचितिओ आवश्यक अछि। संघर्षक पथ पर 'एकला' नहि चलल जा सकैत अछि। संघर्ष भावावेशमे नहि भ' सकैत अछि। समाधानक डेगकेँ सुविचारित होयब जरूरी अछि। संघर्ष लेल वर्गीय संघटन तेँ अनिवार्य अछि, आ से हुले-ले-लेसँ नहि भ' सकैत अछि। लग्गीसँ

घास खुएबाक चेष्टा सार्थक नहि होयत। एहि लेल सम-धर्मा आ समचेता लोककेँ एकजुट होमय पड़तैक। एहि एकजुटता लेल परस्पर विश्वास आ आत्मीयता चाही। अब्याज आपकता चाही। एहि ठाम फेर हमरा काञ्चीनाथ झा 'किरण' आ हुनक कथा 'मधुरमनि' मोन पड़ैत अछि। मधुरमनिक दाम्पत्य जीवनक रागात्मक उष्माक एतेक सहज अभिव्यक्ति ताधरि सम्भव नहि अछि, जाधरि सम्वेदनाक स्तर समानान्तर नहि हो।

ई कहबा मे संकोच नहि होयबाक चाही जे 'मधुरमनि' सन कथा फेर नहि लिखायल। मुदा, नवम दशकक कथाकार एहि तथ्य केँ आत्मसात अवश्य कयलनि अछि जे 'साहित्यकार दलित-वर्गक हँसेरी नहि थिक'। ओ थिक ओकर 'समाङ'। सुख-दुःखक संगी। सहभोक्ता आ सहयात्री। ई बोध वर्ग-संघर्षक आक्रामक तेवर केँ कम केलक अछि। सोडावाटरक उफान जकाँ उठल जोश थमि गेल अछि। आजुक कथाकार एक-दिस अर्थतंत्रक दमन-चक्र केँ देखार क' रहल छथि, त' दोसर दिस ओहि सँ लड़बाक लेल वर्गीय स्तर पर समाधानक डेग उसाहबो जरूरी बुझैत छथि।

कथाक सामाजिक चेतनाक एही विकास-स्थल सँ रमेश अपन कथायात्रा शुरू करैत छथि। विचारबाक ई थिक जे रमेशक कथा ओहि सामाजिक चेतनाक संग पुरैत अछि वा नहि। कहबाक प्रयोजन नहि, जे रमेश पायाक एहि पारक रचनाकार छथि आ लेखन केँ सामाजिक दायित्वक प्रतिफल मानैत छथि। मुदा तइयो ई बात विचारणीय रहि जाइत अछि, जे हिनक रचना एहि धारणाक गवाही दैत अछि अथवा नहि।

एहि कथा संग्रह सँ पूर्व रमेशक एकटा गजल-संग्रह आ एकटा कविता-संग्रह प्रकाशित भ' चुकल अछि। कविता संग्रहक नाम अछि 'सङोर'। एहि कथा-संग्रहक नाम राखल गेल अछि 'समाङ'। स्पष्ट अछि जे रमेश सङोर करबाक आवश्यकता त' बुझिते छथि, 'समाङक सङोर' हिनक अभीष्ट छनि। एतावता वैचारिक स्तर पर रमेश एकदम स्पष्ट छथि।

एहि संग्रहक कथा रमेशक विचारधाराक अनुरुपे अछि। एहि संग्रह मे कथाक संयोजन कालक्रमानुसार कयल गेल अछि। एहि सँ हिनक कथाक विकास-यात्राक पता चलैत अछि। एहि मे सन्देह नहि जे हिनक कथा-यात्रा असहायता एवं विवशता मे सकपंज लोकक प्रति उपजल सहज मानवीय करुणा सँ शुरू होइत अछि, मुदा ओ क्रमशः विकसित होइत भूकम्प सन, प्राकृतिक

विपत्तिक व्यापारीकरण केँ देखार करबा धरि पहुँचि जाइत अछि। स्थिति आ समस्याक वैयक्तिक्तता क्रमशः व्यापक सामाजिक सन्दर्भ सँ सम्पृक्त भेल जाइत अछि। लगैत अछि, एहि संग्रहक कथा रमेशक सोच आ मानसिकता मे होइत परिवर्तनक संग विकासक क्रम मे आगाँ बढ़ल अछि। एहि बात केँ एहु रूप मे कहि सकैत छी, जे एहि संग्रहक कथा पढ़ि क' रमेशक विचारधारा मे होइत विकासशील परिवर्तन केँ बूझल जा सकैत अछि। रमेशक कविता-संग्रह पढ़ैत काल सेहो किछु एहने सन स्थिति देखबा मे अबैत अछि। मुदा अन्त मे ओ जाहि मनःस्थिति पर पहुँचैत छथि, से संग्रहक अन्तिम दुनू कविताक शीर्षक कहि दैत अछि। 'एकटा दोसर दिशा मे बढ़बाक थिक' आ 'यथास्थितिक बादक लेल'। कथा-संग्रहक कोनो कथा एहि प्रकारक कोनो प्रस्थान-बिन्दुक घोषणा नहि करैत अछि। माने ई, जे रमेशक कथा मे विचारधाराक रूपान्तरण बेसी सहज आ स्वाभाविक स्तर पर भेल अछि। इएह कारण थिक, जे हिनक कथा मे नाराबाजी अथबा हल्ला-गुल्ला नहि भेटैत अछि। बालबोधक भावावेश क्रमशः समाप्त होइत गेल अछि।

मुदा, एहि सभ बातक अछैतो रमेशक कथा निर्दुष्ट अछि, से बात नहि। कथाक कएटा कमजोरी गनल जा सकैछ। कथा-संवेदनाक कलात्मक उत्कर्ष एखन बाटे मे अछि। किन्तु, रमेशक कथा पर विचार करैत, हमरा लेल ओकर सीमा ओतेक महत्त्वपूर्ण नहि अछि, जतेक ई आश्वस्ति जे रमेश सही दिशा मे, संयत रूप सँ, बढ़ि रहलाह अछि। हुनका पर भरोस अछि।

—मोहन भारद्वाज
पटना
15-07-1991 ई.

मंतव्य/शुभाशंसा (समाङ)

रमेश मैथिलीक प्रखर युवा हस्ताक्षर छथि। अपन कथाक संग प्रवेश कयनिहार ई व्यक्तित्व आधुनिक युगक सम्पूर्ण सत्यक उद्घाटन करैत किछु-ने-किछु करबाक संदेश पाठक केँ दैत छथि। विकल मानवक कथा कहैत दुःखकेँ सहैत रहबाक प्रबल विरोधी रमेश, वस्तुतः संघर्षशील चेतनाक रचनाकार छथि। हिनक 'खण्डित आदर्शक कथा' मे अपना कथ्य केँ स्पष्टताक संग कहबाक लूरिये, वस्तुतः कथाक नवीनता थिकनि।

मैथिली अकादमी पत्रिका
जनवरी-मार्च 1999 ई.

श्री रमेश मैथिलीक नव हस्ताक्षर सभ मे बहुत आश्वस्त करैत छथि। समाजमे भेद-भाव, शोषण आ अन्याय केँ चिन्हबाक, ओकर जड़ि तकबाक आ ओहि समस्त बातकेँ अपन कथामे कहबाक सामर्थ्य ओ विकसित कयलनि अछि। ओ एक संभावनापूर्ण हस्ताक्षर छथि जाहिसँ साहित्यकेँ पैघ आशा अछि।

जीवकान्त
'सङोर'

रमेशक कथा टुटैत संयुक्त परिवारक टुटैत सम्बन्ध आ एहि दशकक मानवीय संघर्षक सत्यकथा थिक। रमेश द्रष्टाक रूपमे अपन कथामे अलक्षित भावे रहैत सभकेँ स्थिति देखबैत आगाँ बढ़ैत छथि। वैयक्तिक जीवनक खास क' निम्न मध्यमवर्गीय परिवारक संघर्ष हिनक कथामे नीक जकाँ देखल जा सकैत अछि।

उपेन्द्र दोषी
समकालीन मैथिली कथा
मूल्यांकन विशेषांक
वैदेही-1989 ई.

रमेशक कथाधार अपन अलगसँ विशिष्ट पहचान बना रहल अछि। आजुक परिस्थितिमे ऊघि क' आनल सांस्कृतिक आचार कोना जनजीवन पर हावी भ' रहल अछि, ओकरा हटा अपन भूमिक संस्कृतिक उज्ज्वल स्वरूप उपस्थित करबामे हिनक कथा महत्वपूर्ण काज क' रहल अछि। जीवनक आर्थिक विसंगति पर हिनक कथादृष्टि बड़े सटीक भूमिका क' रहल अछि। एहिमे 'मोजरा कल्चर' लुट्टीस केस' आदि विशेष उल्लेखनीय अछि।

शिवशंकर श्रीनिवास
समकालीन मैथिली कथा
मूल्यांकन विशेषांक
वैदेही-1989 ई.

अहाँक 'खण्डित आदर्शक कथा' हमरा बड़ नीक लागल। मै. अ. पत्रिका मे प्रकाशित भेलाक बाद दोबारा पढ़ल। अकादमीक उपनिदेशक रवीन्द्र नाथ ठाकुर सेहो एकर प्रशंसा करैत छलाह। कथामे प्रवाह छैक। लगैत छैक जेना कथाकारसँ आगू-आगू कथा भगैत छैक। एकर कथा स्वयं बजैत छैक, भूत, भविष्य, वर्त्तमान झलकि उठल अछि कथामे। सम्पूर्ण कथा पढ़ैत-पढ़ैत एकटा जबर्दस्त क्षोभ दैत छैक, मोनकेँ झंकृत क' क' राखि दैत छैक आ पाठक उठिक' ठाढ़ होयबाक मुद्रामे आबि जाइत अछि। कोनो कथाक एहिसँ अधिक सफलता की भ' सकैछ? हमरा जनैत अहाँक सम्पूर्ण कथा-लेखनक ई उपलब्धि ा थिक।

विभूति आनन्द
15 मई 1990 ई.

रमेशक कथामे आयातित संस्कृतिक खतरा बहुत तेजीसँ उभरलनि अछि। ओ बेरोजगारी पर सेहो लिखलनि अछि आ अनैतिक विलासवादी पर सेहो। पूँजीवादी शोषणक नव-नव तरीकाक अन्वेषण ओ अपन कथा-रचनामे प्रस्तुत कयलनि अछि। नारी-शोषण पर लिखल रमेशक कथा सभ बेशीए चर्चित भेलनि अछि। हिनक किछु प्रमुख कथा सभ अछि— 'मोजरा-कल्चर', 'गराड़' 'चित्रहार' 'कैलास' मंडलक फिलिप्स रेडियो' 'खण्डित आदर्शक कथा' आदि।

तारानन्द वियोगी
'कोसी के आर-पार-1991 ई. जमालपुर

रमेशक कथा (समाङ)

रमेशक कथा हमरा संतुष्ट करैत अछि। मिथिलाक जन-जीवन आ प्रकारान्तर सँ भारतक ग्रामीण जनताक ई कथाकार छथि। कथा कहबाक कौशल ई विकसित क' लेने छथि। परिवेश केँ चित्रित क' जीवन्त बना देबाक क्षमता हिनका मे छनि। पाठक केँ हिनक कथा आरंभे मे आकर्षित करैत अछि आ ई आकर्षण अन्त धरि बनल रहैत अछि। हमरा बुझने कोनो कथाकार मे ई आवश्यक गुण होयबाक चाही, आ से गुण कथाकार रमेशक कथा सभ मे छनि।

मिथिला मे संस्कृति बदलि रहल अछि। लोक खेती छोड़ि नोकरी ध' लेलक अछि। गाम छोड़ि शहर मे बसि रहल अछि। स्त्रिगण केँ पढ़ाओल जा रहल अछि। हुनकालोकनि सँ नोकरी कराओल जा रहल अछि। गामक बोनिहार पंजाब भगैत अछि। गामक आर्थिक चक्र खंडित आ संज्ञाहीन अछि। सांस्कृतिक आघात (शॉक) सँ व्यक्ति-व्यक्ति प्रभावित अछि। वर्ग-संघर्षक चेतना जगैत अछि। वर्ग-संघर्ष लेल वातावरण गभिनायल अछि। ओहि मे जय-पराजयक क्षण अबैत छैक। श्री रमेश मिथिलाक एहि संक्रान्ति-कालीन उथल-पाथल केँ बहुत सूक्ष्म रीतियेँ अपन कथा सभ मे अंकित कयलनि अछि। एहि तरहेँ अपन कथा सभ मे ओ मिथिलाक बहुरंगी चित्रण करबा मे सफल भेल छथि।

आजुक किछु आलोचक वर्ग-संघर्षे टा केँ कथाक एकमात्र कथ्य मानैत छथि आ जे साहित्य आ राजनीतिक अन्तर केँ मेटा देब' चाहैत छथि। हम साहित्य आ राजनीति मे विभाजक रेखा रह' देब आवश्यक बुझैत छी। श्री रमेश सामाजिक सरोकार केँ सजगता पूर्वक बुझैत छथि आ साहित्य केँ साहित्यक रूप मे सृजित करैत छथि, तेँ ओ बेसी सफल होयताह।

—जीवकान्त
(ड्योढ़)
7-मई-1991 ई.

समाङ

भाखा प्रकाशनक एगारहम पोथी
समाङ (मैथिली कथा-संग्रह)
कथाकार : रमेश
लोकार्पण : नवानी कथागोष्ठी (सगर राति दीप जरय)
22 जुलाई 1991 ई.
स्वामित्व : श्रीमती माला झा
प्रथम संस्करण : 1991 ई. (आवरण : श्री कुणाल)